हंसते जख्म

कहानी संग्रह

नन्दलाल भारती

प्रकाशक
मनोरमा साहित्य सेवा
सर्वाधिकार–लेखकाधीन
इण्टरनेट प्रकाशन वर्ष –2009

तकनीकी सहयोग
आजाद कुमार भारती

चित्रकार
शशि भारती

प्रकाशक

मनोरमा साहित्य सेवा
आजाद दीप,15-एम-वीणा नगर
इंदौर ।म.प्र.।452010
दूरभाष-0731-4057553 चलितवार्ता-9753081066

1-अतिथि

बड़ी जल्दी आ गये । इतनी तेज धूप में आने की क्या जरूरत थी । लू लग गयी तो । जिससे मिलने गये थे उनके घर में ताला लगा था क्या ? वे कैसे लोग है जो आग बरसती दोपहर में तनिक छांव में ठहरने को नही कहा । क्या वे अतिथि देवो भवः के महामन्त्र को भूल गये है ?
दीपेशबाबू - भागवान दो मिनट चैन से सांस तो ले लेने देती । स्कूटर खड़ा नही कर पाया तुम हो कि सवाल पर सवाल दागे जा रही हो ।
प्रिया- गलती हो गयी । स्कूटर खड़ा करने में मदद करूं क्या ?
दीपेश-नही । कृपा करके एक गिलास ठण्डे पानी और आधी कप चाय का इंतजाम कर गरीब पर मेहरबानी करो । ।
प्रिया-आप बैठो मैं पांच मिनट में चाय और ठण्डा पानी लेकर आती हूं तब तक हाथ मुंह धो लो ।
दीपेश-जैसे गृह प्रबन्धक महोदया का आदेश ।

प्रिया–बस अभी कुछ नही चाय पीते –पीते बात करोगे तो और अच्छे लगोगे । मैं आती हूं ।

दीपेश हाथ मुंह धोकर बैठा भी नही की । प्रिया पानी औा चाय लेकर हाजिर हो गयी ।दीपेश बाथरूम के बाहर निकलते ही प्रिया बोली लीजिये जनाब चाय पानी हाजिर है ।

दीपेश– रख दो सेन्टर टेबल पर ।

प्रिया–बैठो तो सही ।

दीपेश– बैठूंगा नही तो इस दोपहरी में जाऊंगा कहां ।

प्रिया– हां एक जगह आने –जाने में सींक जो गये ।

दीपेश–जले पर नमक ना डालो । कहते हुए पानी पीकर चाय पीने लगा ।

प्रिया–इतनी खामोशी क्यों ?

दीपेश– अनसुना कर दिया ।

प्रिया–प्राणनाथ कौन सी ऐसी खता हो गयी कि आपने मौनव्रत धारण कर लिया।

दीपेश– मुझसे खता हो गयी ।

प्रिया–नाराज क्यो होते हो जी ।

दीपेश–क्या करूं नाचूं गाऊं जश्न मनाऊं ।

प्रिया–वही अच्छा रहेगा ।

दीपेश–क्या मैं टच्छा बुरा भी नही समझता क्या ?

प्रिया–क्या खफा हो ।

दीपेश–खफा होकर भी क्या कर सकता हूं । लोगों को बदल तो नही सकता । जहां पर अतिथि देवा भवः या सुस्वागत लिख होना चाहिये वहां पर अब शुभ लाभ लिखा जाने लगा है । आने वाला चाहे प्यास से मर क्यो नही रहा हो । लोग पानी तक के लिये नही पूछते क्या लोग हो गये हैं । बिना व्यक्तिगत लाभ के तो आज लोग पानी पीलाने को जहमत नहीं उठा रहे हैं ।
प्रिया– मुझसे ऐसी गुस्ताखी हो गयी क्या ?
दीपेश–नहीं पर तुम्हारे सवालों का जबाब तो है ।
प्रिया–मेरे सवाल का जबाब भला ये कैसे हो सकता है ?
दीपेश–भागवान यही सही है । अब तो घण्टा भर का अतिथि भी बोझ लगने लगा है । दाना–पानी तो दूर कुछ लोग दौलत और रूतबे के अभिमान में पानी तो दूर ठभ्क से बात करने में तौहीनी समझने लगे है ।
प्रिया–क्या हम जैसे परिवार में ऐसा....
दीपेश–देवी मीडिल क्लास के लोगो के बीच अभी भी अतिथि देवों भवः का भाव है पर...
प्रिया– पर का क्या मतलब । बताओं ना कहां मर गया है अतिथि देवो भवः का भाव ।
दीपेश–दौलत और रूतबे के घमण्ड में चूर लोगों के दिलों में और उनकी चौखटो पर भी ।
प्रिया–अच्छा समझ गयी ।

दीपेश–कुछ कहा नही लेकिन तुम सब समझ गयी ।
प्रिया–नही समझी । आप बता दो ।
दीपेश– क्यो बुझनी बुझा रही हो ।
प्रिया–देखो जी जो कहना है । कह दो घर का सब काम पड़ा है । बच्चो अभी नाश्ता मांगेगे । आपके लाडले मैगी लाये है । उठते ही उन्हे चाहिये । कोई अतिथि आ गया तो उसकी आवभगत भी तो करनी होगी । देख रहे हो घर में कितनी धूल भर गयी है । दिन रात सड़क पर गाड़िया दौड़ती रहती है । धूल अपने घरो में भरती है । कालोनाइजर पैसा लेकर सड़क भी नही बनाया । पैसा वो डकार गया हम धूल फांक रहे है ।
दीपेश– यही तो है आज के युग में कर रहा है आदमी । अपना फायदा जिसमें हो वही कर रहा है चाहे इसके लिये लाश पर से क्यो ना जाना पड़े ।
प्रिया–अतिथि देवो भवः का क्या हुआ ।
दीपेश– प्रिया का हाथ पकड़कर चिरौरी करते हुए बोला मुझे एक वचन दो ।
प्रिया– कितनी बार वचन लोगे ?
दीपेश– मैं मजाक नही कर रहा हूं । मुझे वचन दो कि इस चौखट से कोई आदमी प्यासा नही जायेगा ।
प्रिया– आज तक तो कोई गया नही । मेरे जीते जी तो ऐसा अधर्म हो नही सकेगा । घर आया हुआ मेहमान तो

भगवान होता है । भला भगवान का अनादर क्यों । अपने बच्चे भी जानने समझने लायक हो गये है । उनमें भी अच्छे इंसान के संस्कार है । वे अतिथि और बड़े बूढो का सत्कार करना जानते है । आप तो असली बात बताओ । अतिथि भाव घायल कहां ाँ गया ?
दीपश-जिस आनन्दानन्द के घर उनके बुलावे पर गया था । वे दौलत और रूतबे में बहुत बड़े आदमी है करोड़पति है पर उनकी चौखट से अतिथि देवो भवः का भाव उठ गया है । अरे इसी भाव की वजह से तो दुनिया में भारतीय परिवार ,परम्परा और संस्कार की जयजयकार है पर लोग मटियामेट कर रहे है।
प्रिया-ऐसा क्यो कह रहे हो ।
दीपेश-ठीक कह रहा हूं और तुमसे विनती भी कर रहा हूं ।
प्रिया-विनती और मुझसे .....
दीपेश-हां तुमसे । देखना घर आये किसी व्यक्ति का जाने-अनजाने अनादर न होने पाये और ना ही किसी बड़े बूढे का।
प्रिया-क्यो इतने दुखी हो । आप तो ये बताओ आनन्दानन्द साहब के चौखट पर आपको कैसे अतिथि भाव के खून होने का एहसास हुआ ।
दीपेश-वही बता रहा हूं ।
प्रिया- बताओ ना ।

दीपेश–आनन्दानन्द साहब के चौखट पर अनादर गहरा घाव कर गया है आज ।
प्रिया–आप तो आनन्दानन्द साहब की बड़ी तारीफ करते हो । उनके घर गिलास भर पानी नही मिला । इसी जानलेवा गर्मी में । मेरे मना करने पर भी नही माने । ठण्डा होने पर चले गये होते तो यह पीड़ा तो नही झेलनी पड़ी होती ।
दीपेश–हां आनन्दानन्द है तारीफ के लायक पर उनकी बहु आधुनिक जो है । पत्थरों के वातानुकूलित शो–रूम में भी तो बैठती है ।
प्रिया–क्या आधुनिक लोग पानी नही पीते ? खाना नही खाते ? दरवाजे आये हुए व्यक्ति को पानी के पूछना में आधुनिकता नंगी कैसे हो जाती है । गये भी तो थे बूढे आनन्दानन्द साहब के बुलावे पर ही । करोड़पति आदमी है ,बेटे की फैक्टरी है । बहू भी पत्थर व्यवसाय की मालकिन है । नौकर–चाकर होने के बाद भी दरवाजे पर आये आदमी को पानी तक को नही पूछा जा रहा है ।
दीपेश–ठीक कह रही हो । सर्वसम्पन्न तो है पर संस्कार चौखट से दूर होता जा रहा है । आनन्दानन्द साहब के दिये गये वक्त पर पहुंच गया था । नौकरों ने कहा बड़े साहब उपर है । इसी बीच पत्थर के शो–रूम के मेन–गेट से बोली बड़े साहब नही है । घण्टे भर बाद मिलेगे । काफी देर तक खड़ा रहा पर बहू ने बैठने तक को नही कही । थक कर मैं

शो रूम के सामने पडी कुर्सी पर बैठ गया इन्तजार की गरज से ।
प्रिया–आप नीचे और वे उपर इन्तजार कर रहे थे ।
दीपेश–हां । इसी बीच कुछ ग्राहक आये । पत्थर शो–रूम की मालकिन बहू ने नौकरो से ठण्डा पानी मंगवाया खुद अपने हाथ से पानी दी । मैं सूखे कण्ठ बैठा रहा मेरी तरफ एक बार भी नही देखी ।
प्रिया–बूढे ससुर से मिलने में जो अड़चने पैदा कर रही हो । वह भला पानी को कैसे पूछ सकती है । मुझे तो लगता है बड़े साहब उपेक्षित होगे अपने ही किले में ।
दीपेश–सच आज बूढे सास–ससुर ,मां–बाप के सामने यह समस्या तो है ।
प्रिया– बेटे–बहुओं से उपेक्षित होकर तो बूढें अनाथ आश्रम में आश्रय ढूढ रहे है दीपेश–हां मैने दौलत के ताड़ की छांव में संस्कार मरते हुए देखा है । ऐसे लोग अतिथि देवो भवः का भाव क्या समझेगे ?
प्रिया–दौलत का पहाड़ खड़ा करने वाले और दूसरों को दोयम दर्जे का समझने वाले हमेशा दौलत को ही ललचाया आंखों से देखते है ।आदमी की तरफ नही देखते । देखते भी है तो बस मतलब भर जेब कतरे की तरह ।
दीपेश–सच आज आधुनिकता की लिबास में लोग नंगे होते और सामाजिक दायित्वों से दूर होते जा रहे है । उन्हे लगता

है सामाजिक औपचारिकताये रसहीन है । दावे के साथ कह सकता हूं आनन्दानन्दसाहब भी ऐसी आहो–हवा में घूट रहे होगे ।
प्रिया–ठीक कह रहे हो इसीलिये उनका फोन भी आया था ना । बैठे–बैठे उब गया तब चला आया ।
दीपेश–मैं कुछ कागज छोड़कर आया था । कागज मिलने पर फोन किये थे । कह रहे थे दीपेश बेटा नीचे से क्यो चलेगे । मै तो उपर इंन्तजार कर रहा था । लम्बे इन्तजार के बाद नीचे गया तो पता चला कि तुम बिना मुझसे मिले कागज छोड़कर चले गये हो ।
प्रिया–कागज किसे सौंप कर आये थे ।
दीपेश–उनकी बहूरानी के सामने कागज देने की बात कहा था तो उन्होने कहा था कि भोला को दे दो । बड़े साहब जब आयेगे तब दे देगा ।
प्रिया–भोला कौन है ।
दीपेश–फिल्मों में भोला कौन होता है ।
प्रिया–नौकर ।
दीपेश–वही नौकर था भोला।
प्रिया–इतनी धूप में बहू ने रूकने को नही बोली ।
दीपेश–जो बहू पानी के लिये नही पूछ रही है । ए.सी.शोरूम में बैठने को कहेगी क्या ? वह भी फटे–हाल मीडिल क्लास के आदमी को । पानी को पूछी ही नहीं बैठने को बोल

सकती थी क्या ? दो ग्राहको के लिये दो गिलास पानी का आर्डर नौकर को दी । मैं इतनी भयंकर गर्मी में सूखे गले आनन्दानन्द की बांट जोहता रहा पर मुझे पानी तक को नही पूछां । जब प्यास बर्दाश्त नही हुई तो एक प्याऊ पर जाकर पानी पीया ।
प्रिया-आपको तो पूरा शहर जानता है । आनन्दानन्द साहब से कितनी बार तो मिल चुके है । उनके घर भी जा चुके हो इसके बाद भी पानी को नही पूछी ।
दीपेश-भागवान तनिक पहचानती थी इसीलिये तो कुछ देर तक बिन बुलाये मेहमान का तरह आनन्दान्द साहब का इन्तजार करने दिया वरना भगा ने देती । रही बात जानने कि तो बुध्दजीवी और मानवतावादी लोग जानते पहचानते है स्वार्थी और धंधेबाजे के बीच अपनी पहचान नही ? ऐसी जगह पहचान बनाना भी उसूल के खिलाफ है । विष बोने वाले,पद और दौलतपसन्द के बीच तो अजनवी हूं । मलाल तो इस बात का है कि आनन्दानन्द साहब जैसे करोड़ो के मालिक अपने ही लोगों के बीच उपेक्षित है । उनसे मिलने वाले भी उपेक्षा की दृष्टि से देखे जा रहे है ।
प्रिया-मां-बाप तो धरती के भगवान है । दरवाजे पर आया अतिथि देवता समान चाहे अमीर हो या गरीब ।

दीपेश–आधुनिकता और दिखावे का भ्रम आज के आदमी को रिश्ते–नाते से दूर ले चा रहा है।आनन्दानन्द साहब भी घूंट रहे होगे ।
प्रिया–हां शायद । फोन पर बात तो हो गयी ना आपकी ?
दीपेश–हां हो तो गयी ।
प्रिया–क्या कहें ?
दीपेश–क्या कहेगें । हारे हुए जुआरी की तरह खुद को कोसेगे । कह रहे थे नीचे गया तो दीपेश बेटा आपका छोड़ हुआ कागज सरवेण्ट दिया तब पता चला कि घण्टा भर इन्तजार कर चले गये । सांरी कहने के अलावा और कर भी क्या सकते हैं ? मैने कह दिया साहब सांरी कहकर शर्मिन्दा न करें । आप तो मेरे पितातुल्य है ।
प्रिया–कागज आप किसको सुपुर्द करके आये थे ।
दीपेश–बहू ने एक नौकर की तरफ इशारा कर दिया था उसी लड़के को सौंप कर चला आया था । खैर इस सब का अन्दाजा आनन्दानन्द साहब को तो लग ही गया होगा । कहते है आनन्दानन्द साहब की जब चलती थी तो उनकी चौखट पर आये हुए व्यक्ति को समय के अनुसार चाय नाश्ता और भोजन तक करवाया जाता था । आज बेटे बहुओं के राज में अतिथ्सि को एक गिलास पानी तक मय्यसर नही हो रहा है उसी चौखट पर ।

प्रिया–बाप रे ऐसा वैभव किस काम का ? जिस चौखट पर आगन्तुक को पानी तक को नही पूछा जा रहा है । भला उस घर में बड़े बुजुर्गो का क्या बुरा हाल होता होगा ? तभी तो हाई–फाई परिवार के लोग वृध्दाश्रमों की ओर रूख कर रहे है । करें भी क्यो ना इससे तो उनके हाई–फाई स्वार्थी बेटे –बहुओं की प्राइवेसी में खलल जो पडती होगी ?
दीपेश–ठीक कह रही हो । आनन्दानन्द साहब से मैंने कहा साहब आधे घण्टे से अधिक देर तक इंतजार करके में चला आया । शो–रूम में बैठी बडी बहू मैडम जी को तो मालूम था । उन्होने ही तो कहा था बड़े साहब घर में नही है । तब वे बोले मैंने तो नीचे सरवेण्ट से बोल रखा था कि आप आने वाले है । आते ही मेरे पास भेज देना बहू को भी यह बात मालूम थी पर बतायी क्यों नही ? इसके बाद उनकी आवाज टंग गयी उनके मुंह से सांरी शब्द निकला और फोन का दम निकल गया ।
प्रिया–सच आधुनिकता का मुखौटा लगाये घरों में बस दिखावा है । वहां न बड़े –बुजुर्गो का मन–सम्मान है ना अतिथि का ही । वहां तो सभी मतलब के तराजू पर तौले जाते है ।
दीपेश–तुम्हारी बात में सच्चाई है । भगवान जिसको तरक्की दे उसके अन्दर अभिमान न भरे ।
प्रिया–आदमी के पास ज्यो –ज्यों दौलत बढती है उसी अनुपात में अभिमान भी बढता है । हां कुछ लोग अपवाद

हो सकते है पर अधिकतर लोग तो ऐसे ही होते है । आनन्दानन्द साहब को देखो आप तो उनका गुणगान करते नही थकते ।उनके घर में देखो अतिथि का कैसा अनादार हो रहा है । बड़े बुजुर्गो को कौन सा मान–सम्मान मिल रहा है ।

दीपेश–बड़ा आदमी तो सही मायने में वही है जो आदमी की कद्र करना जानता हो जिसके हृदय में आदमियत,ममता,समाता और सद्भावना विराजति हो । आदमी धन–दौलत अथवा बड़े पद से बड़ा नही होता । आदमी का कद बड़ा होना चाहिये । कद धन दौलत अथवा पद के अभिमान में डूबकर नहीं बड़ा होता । कद तो सदाचार बढाता है ,परमार्थ का भाव बढाता है ,दबे कुचले को उबारने की ललक आदमी को महान बनाती है । जो व्यक्ति द्वार आये व्यक्ति को बोझ समझता है । खुद को पद और दौलत की तुला पर तौल कर बड़ा साबित करता है । सचमुव वह बहुत नीच होता है ।

प्रिया–आधुनिक और पाश्चात्य संस्कृति के अनुयायियों के लिये बूढे मां–बाप भी बोझ हो गये होगे । आनन्दानन्द साहब को हंसते जख्म का एहसास हुआ होगा । ।

दीपेश–स्कूली स्तर पर नैतिक शिक्षा का पाठ शुरू होना चाहिये । जिससे बच्चों में बूढों के प्रति मान–सम्मान उपजे और अतिथि देवों भवः के भाव को उर्वरा मिले ।

प्रिया–ठीक कह रहे हो । आधुनिकता और पाश्चात्य रंग में रचे बसे मां–बाप अपने बच्चों को नैतिकता का पाठ पढाने से रहे । इससे बच्चों का देश की सभ्यता और संस्कृति से जुड़ाव होगा और बड़े बुजुर्गो के प्रति आदर का भाव भी विकसित होगा । तभी अतिथि देवों भवः के भाव में अभिवृध्दि सम्भव है ।

दीपेश–ठीक कह रही हो यदि सामाजिक और नैतिक मूल्यों को पतन हो गया तो न तो रिश्ते बचेगे न आदमियत का सोंधापन और न मांता–पिता के प्रति लगाव ।

प्रिया–बड़े–बूढों के प्रति आदर भाव,मानवीय रिश्तों में समरसता,सद्भावना,परमार्थ के भाव के साथ अतिथि देवों भवः का बीजारोपण आज की पीढी में करने की जिम्मेदारी स्कूल,कालेज और परिवार जैसी संस्थाओं से सामन्जस्य स्थापित कर उठानी होगी। तभी बर्डे–बुजुर्गो को मान–सम्मान मिल पायेगा और अतिथि देवो भवः का भाव देश की मांटी से सदा प्रवाहित होता रहेगा । दुनिया के लिये हमारा परिवार प्रेरणास्रोत बना रहेगा । इसकी रक्षा की कसम युवा–शक्ति को खानी पड़ेगी ।

2–बिखरे मोती

पड़ोस में रहने वाली पार्वती को आंचल में कटोरी छिपाते हुए देखकर मधु बोली –दादी सास क्या छिपा रही हो ।

पार्वती–बेटी कब आयी ?
मधु– पार्वती का पावं छूते हुए बोली कल शाम को आयी दादी । पता चला कि आपकी तबियत ठीक नही है तो चली आयी आपसे मिलने पर आप तो मुझसे कुछ छिपा रही हो ।
पार्वती–खाने की कटोरी को पुनःआंचल से ढकते हुए बोली क्या छिपाऊंगी बहूं मै भला तुमसे ।
मधु–दादी सास कुछ तो जरूर छिपा रही हो । लगता है आज बहुओ ने मिलकर कुछ खास व्यंजन बनायी है । यही ना दादी....
पार्वती–नही रे क्या छिपाऊंगी । बहुये क्या खास व्यंजन बनायेगी । आज कोई पंचईया तो है नही । सवाल करने को रहने दे आ पास में तो बैठ कुछ देर । बहुये बाजार हाट गयी है। तुम्हारे मायके की क्या खबर है। मां –बाप भी नही रहे तुम्हारे। शहर भी जाना होगा जल्दी ।
मधु– हां दादी मां बाप जब तक है मायका तब तक आबाद है । अब तो मायका दूर हो गया । मां–बाप के आंख मुनते ही सब पराये हो जाते है । भाई लोग अपनी गृहस्ती में मस्त है । मैं परदेसी हो गयी । उनकी छुट्‌टी भी खत्म होने को आ गयी । बच्चे भी यहां की गरमी बर्दाशत नही कर पा रहे है । सब बीमार पड़ गये हैं । बड़े बेटे को तो बोतल चढवानी पड़ी है । दादी शहर तो जाना ही होगा ना ।

गांव में दादा–परदादा की कहां जमींदारी है कि रोजी–रोटी चलेगी । बच्चे पढेगे–लिखेगे ।
पार्वती–कराहते हुए बोली हां मधु बीटिया ठीक कह रही हो ।
मधु–दादी आप खाना खा रही थी । खा लीजिये मैं पिण्टू के घर से होकर आती हूं । बेचारी पिण्टु की आजी जब तक जिन्दी थी हम लोगों के आने की खबर सुनते ही दौड़ी चली आती थी । अब तो कोई पूछने वाला ही नही बचा । आप भी बीमार रहने लगी बाकी कोई पुराने में से बचा ही नही । पहले जैसी बात भी नही रही । अपने अलावा कोई अब तो दूसरे को समझता ही नही । अब तो गांव में भी शहर जैसा हो गया है कोई पहचानता ही नही । हम लोग है कि सब के घर–घर जाकर सलाम व्यवहार करते है । इसके बाद भी लोग मुंह फेर लेते है ।
पार्वती –हां बहू सब स्वार्थी हो गये है । काम पडने पर पहचानते है । बिना मतलब के तो अब तन से पैदा हुए भी नही पहचानते । गैरों की क्या बात करें । थोड़ी देर मेरे पास बै तो जा । मैं तो बैठे –बैठे खाती रहती हूं । खाने के अलावा बुढौती में और काम भी क्या है ? एक जगह बैठे –बैठे बेटा –बहू की कमाई रोटी तोड़ो । बैठ बहू । मेरा क्या भरोसा इसके बाद तूझे मिल पाऊंगी भी की नही । आंख–ठेहुना भी धीरे –धीरे काम करना बन्द कर रहे है । अभी ना जाने कब तक फोक्ट की रोटी तोड़नी किस्मत में

लिखी है भगवान उठा लेता तो मेरी भी बन जाती । बुढउ तो अपनी बना लिये मुझे नरक में छोड़ गये । सब बहूं सुहाग उजड़ने के बाद जीवन नरक हो गया है ।
मधु–दादा जीवन मरन तो भगवान के हाथ में है । दुख –तकलीफ भी उसी भगवान की देन है । दादी आंसू ना बहाओं खाना खा लो ।
पार्वती– तू कह रही थी ना कि मैं छिपा रही हूं कुछ देख ले बेटी मेरा छप्पन भोग ।
मधु–दादी यह क्या ?
पार्वती–मेरा खाना और क्या ? कुत्ते बिल्ली इससे अच्छा खाना खा लेते हैं ।
मधु–हे भगवान ये खाना.........?
पार्वती–बंटवारे के बाद मेरा यह हाल हो गया है ।
मधु–बंटवारा ..?
पार्वती– दोनो बेटों के बीच 15–15 दिन बंटवारा हो गया है । 15 दिन बड़ा तो 15 दिन छोटा बेटा कुत्ते जैसे रोटी दे रहा है । बुढउ के मरते ही मेरे उपर मुसीबत का पहाड़ गिर पड़ा है । अब तो पेट भर रोटी भी नसीब नही होती ।हंसते जख्म संग जीना पड़ रहा है खानदान की मर्यादा के लिये ।
मधु–सूखी रोटी ना दाल ना तरकारी ऐ कौन सा छप्पन भग आपकी बहुओं परोस रही है ।

पार्वती–यही छपपन भेग है मेरे लिये । बहुयें कहती है काम की ना काज की निकाम घोड़ी घास की । बुढिया को बैठे बैठे तीनो टाइम बलीबरोबर ठुसने को चाहिये ।
मधु–दादी कैसो खाओगी ।
पार्वती–बेटी मुसीबत माथे पड़ी है तो मुकाबला तो हमें ही करना होगा ना । रोटी को कुछ देर के लिये पानी में भींगो रखूगी गल जाने पर खा लूंगी ।
मधु–जिन बेटों की तकदीर बनाने के लिये आप और बाबा ने क्या–क्या नही किया । पढाया लिखाया । पैरो पर खड़ा किया वही बेटे दो रोटी नही दे रहे है इस सूखी रोटी को खाना आपके लिये तो लोहे चना चबाने जैसा होगा । मुंह में दात भी तो नही बचे है ।
पार्वती–सूखी रोटी पानी और नमक में भींगो कर पेट में उतार लेना यही मेरी किस्मत हो गयी है । मेरी किस्मत में भगवान ने यही लिख दिया तो क्या करूं । अच्छी भली खेती है । दोनो बेटे नौकरी कर रहे है । इसके बाद मेरी हाल ऐसी है । अगर बुढउ कुछ छोडकर नही गये होते तो भीख मांगनी पड़ती मुझे । वैसे भीखारी से मेरी दशा खराब है । बस कहने को बेटे बहू ,पोते–पोती और भरा–पूरा परिवार है । कभी कभी तो बहुये इस बूढी काया पर हाथ साफ कर लेती है । दादी के आखों में बाढं के पानी सरीखे आसूं बह रहे थे ।

पार्वती के आसूं देखकर मधु के ी आंसू बह निकले । वह पार्वती दादी के आंसू आंचल में पोछते हुए बोली दादी अब ना रोओ सिर दुखने लगेगा । भगवान भी कितना निर्दयी है बुढौती में इतना दुख दे दिया । अपना खून पीकर पले बढे दुश्मन हो गये ।दादी सन्तोष करो जो विधाता ने लिख दिया है उसे टाला भी तो नही जा सकता ।
पार्वती– हां बहू अब तो आंसू बहाना ही तकदीर हो गयी है । आंसूओ को बह जाने दो मन का भार तनिक कम हो जायेगा । इस बूढी बेबस के पास बचा भी क्या है आंसू के सिवाय । भगवान ने बेटी भी नही दिया है कि उसके पास भी दो चार दिन के लिये जााकर जी आन–मान कर आती । बुढउ के मरते ही मेरे जबान पर भी बेटे बहुओ ने पहरा लगा दिया है । दोनो बहुये हाट गयी है और बच्चे स्कूल । अब तक एक भी होती तो छाती पर चढ गयी होती । तुमसे बात भी नही कर पाती । बेटे –बहु सब एक जैसे हो गये है । उनको लगता है कि मेरे पास मोहरो से भरा सोने का घड़ा है । जिसे में उनसे छिपाकर रखी हूं । जबकि मेरे पास चवनी–अठनी तक नही है । ना जाने कौन सी रकम लेने के लिये मुझे प्रताड़ित कर रहे है । सब कुछ तो बांट लिये मेरे पास कुछ बचा भी तो नही है । दोनो बेट मिलकर मेरी हालत कुत्ते लिल्ली जैसी कर दिये है । रोटी के लिये

ललचायी आखों से राह ताकना पड़ रहा है । जबान खुली तो लात खाओ ।
मधु–दादी मैंने भी देखा है । बाबा जब थे तो यह दरवाजा सूना नही लगता था। दो चार लोग बैठे रहते थे । जिन्दगी भर बाबा शहर परदेस किये । आप दोनों बेटों को लेकर गांव की जमींदारी सम्भाली । बाबा जब रिटायर होकर आये तब आपके बेटा लोग परदेस की ओर रूख किये । बाबा की मेहनत से सफल भी रहे अच्छा कमा खा रहे है । आपको पेट में भूख लेकर जीना पड़ रहा है । यह किसी विपत्ति से कम तो नही है । बाबा के मरते ही बेटे –बहू कितने बदल गये । धन लेने की सुध तो है मां के पेट में रोटी गयी कि नही इसकी किसी को सुध नही । जब तक बेटों के हाथ दौलत नही लगी थी जमींदारी पर कब्जा नही हुआ था तब तक आरती उतारत` थे । अब तो उन्ही बेटे बहुओं के लिये बोझ हो गयी हो ।
पार्वती–हां मधु ठीक कह रही हो जब तक बुढउं कमाये तब तक और जब तक जीवित रहे तब तक इन नालायकों के लिये जोड़ते रहे । इन्ही नालायकों की चिन्ता में डूबे रहते थे । मेरे पास भी जो कुछ था बुढउ की चोरी इन्ही नालायकों को दे दिया करती थी ।वही वजह है कि आज कंगाल बैठी हूं रोटी तक के लिये तरस रही हूं । मेरी आंखों के आसूं बेटे बहुओं को दिखायी पड़ गया तो बोली बोलने से नही

चूकते कहते है –पापिन दरवाजे पर बैठी कूढ़ती रहती है ना मरी न मरे के संग गयी । अब ये हाल हो गया है बीटिया । मै पापिन हो गयी हूं । मेरी कोख से जन्मे ये मेरे नालायक बेटे पूण्यात्मा हो गये है । मैं भूखे मर रही हूं । ये जश्न मना रहे है । महीनों से बुखार में तप रही हूं । मेरी दवाई के लिये दोनों में से किसी के पास फूटी कौड़ी नही हैं । ससुराल वाले आते है तो मुर्गा के साथ दारू परोसी जाती है । बीटिया तुम्ही बताओं कोई मां बाप अपने बेटे–बहुओं को श्राप देगे क्या ? मैं कितनी अभागिन हो गयी हूं बुढउ के मरते ही कि हमारे ही बेटे बहूं पापिन कहने लगे हैं । मन तो करता हैं इस पोखरी में डूबकर जान दे दूं पर जग हंसाई से डरती हूं । यही बेटे–बहु कहेगे पापिन जीते भी डंसती रही मरने के बाद भी कलंक छोड़ गयी ।
मधु–दादी आत्महत्या की कभी ना सोचना । जब तक सांस चल रही है । भगवान में भरोसा रखो वही मुक्ति देगा । डूब कर जान देने से अगला जन्म खराब क्यो करना । दादी आप तो बहुत नेक आत्मा हो । भगवान सच्चे आदमी की परीक्षा लेता है । दुष्टों को खुला छोड़ता है ताकि वे पाप करते करते एक दिन असहाय होकर जमीन पर आ गिरे और लोग थूके । एक दिन आपके बेटे–बहुओं पर दुनिया वाले जरूर थूकेगे । देवी समान मां को भूखों मार रहे है । मां बाप की दौलत को तो बांट लिये पर मां को ना पेट भर

रोटी दे रहे है और ना ही वस्त्र । दादी पोते पोती तो देख रहे है ना जो उनके मां बाप आपकी दुर्दशा कर रहे है । आप तो नही रहोगी पर दुनिया वाले देखेगे । जैसा आपके बेटा बहु कर रहे है उससे बुरा सलूक उनके बेट-बहू करेगे ।
पार्वती-मधु बीटिया मेरे बेटे-बहू चाहे जितनी मेरी दुर्दशा कर ले पर मैं इनका बुरा कभी नही चाहूंगी मां हू ना । लेकिन जो ये मेरे साथ कर रहे है । मैं कभी सोच भी नही सकती थी कि मेरे बेटे ऐसी दुर्दशा करेंगे । जिनके लिये सुख-सुविधा,पढाई-लिखाई के लिये परिवार से विद्रोह कर बैठी । कभी बासी रोटी इन बच्चों को नही दी । देशी घी की कभी कमी नही पड़ने दी । आज देखो मैं वही हूं मेरे बेटे बदल गये । मैं सूखी रोटी से जूझ रही हूं पापी पेट भरने के लिये । वह भी मर्जी हुई तो दे दिये कुत्ते जैसे कवरा । नही मर्जी हुई तो नही दिये । पानी पी -पीकर भूख मिटाती रहने को मजबूर हो जाती हूं ।
मधु-दादी बहुये तो दूसरे घर से आयी है । बेटे तो सगे है । आपके तन से पैदा हुए है ।वे भी जल्लाद हो गये । बूढी मां के लिये उनके पास पेट भर रोटी नही दे पा रहे है । आपके दोनों बेटे पढे-लिखे है । इनको तो कुत्ते-बिल्ले जैसे व्यवहार अपनी मां के साथ तो नही करना चाहिये था । ये तो जोरू के गुलाम लगते है ।

पार्वती–बहुये जैसा कहती है उससे लीक भर भी नही हट सकते दो के दोनों । ऐसा लगता नही है कि यह घर मेरा है । ये परिवार मेरा है । किसी को तनिक भी मेरी चिन्ता नही है । देखो दो साल हुए बुढउ के मरे उनके हाथ की साड़ी है तन पर । वह भी जगह जगह से गलने लगी है । बहुये दो साड़ी मेरे पास छोडी बाकी सब आपस में बांट ली । दो साल से दो साड़िया मेरे तन पर गल रही है । देखो किस तरह से मैं अपना तन ढंकी हूं । न बहुओं को शरम है न बेटों को । बेटों और बहुओ को लगता है कि मोटी रकम उनसे छिपा कर रखी हूं । उनको दे नही रही हूं । बताओ मेरे पास कुछ होता तो अपना तन नही ढंकती ।सब कुछ तो छिन लिया इन लोगों ने षणयन्त्र रचकर । पेट की भूख नही मिट रही है इन दो–दो बेटे के होते हुए ।

मधु–ये तो बहुत बुरा हो रहा है दादी आपके साथ ।

पार्वती–कुछ लोग पुत्र के न होने पर दुखी है और मैं दो–दो सांड जैसे पुत्रो के होने के बाद भी बेसहारा अनाथ जैसी जिन्दगी जी रही हूं । इन कपूतों के लिये धन–धरती सब कुछ बना दिये पर उसी धन और धरती की रोटी सकून की नही मिल रही है । ये नालायक अपनी कमाई का तो नही देते कम से कम हमारी हाड़ं–फोड़ कमाई की रोटी तो देते । सच मधु बहु इतना दुख नही होता जितना हो रहा है । हारे हुए जुआरी की तरह अब हाथ मलते रहना है और बेटे

बहुओं के दिये तकलीफ के जहर को पीकर जीवन बिताना यही अब तकदीर हो गयी है ।
मधु–मत रोओं दादी भगवान सब देख रहा है ।
पार्वती–काश मुझे इस नरक से जल्दी उठा लेता ।
मधु–दादी जितने दिन की उम्र होगी उतना दिन तो धरती पर रहना ही होगा चाहे रो कर जीओ या हंस कर । यय बेटे बहुओं की प्रताड़ना सहकर जीना तो पड़ेगा । आके साथ बहुत बुरा सलूक हो रहा है ।यह अच्छा नही है । बताओं धरती के भगवान का ऐसा अनादर ऐसे बेटे–बहुओं के लिये नरक का राह नही सुगम कर रहा है क्या ? दादी जो आदमी दूसरों के साथ बुरा बर्ताव करता है उसे भी मिलता है इसी धरती पर । अरे इनकी औलादें भी ऐसा करने लगी तो खपरैल से आंसूं पोछेगे । जब इनकी औलादे ऐसे ही घाव करेगी तो समझ में आयेगा कि उनके हाथ अन्याय हुआ ।
पार्वती–मधु बीटिया मैं तो भगवान से प्रार्थना करती हूं कि इन नालायको को सद्बुध्दि दे । मां हाकर कैसे बद्दुआ दे सकती हूं । मेरे साथ जो कुछ हो रहा है बस्ती वाले भले ही नही देख पा रहे है पर भगवान तो देख ही रहा है । मैं अपनी जबान गन्दी नही करूंगी चाहे ये भूखे मार डाले, गाली दे या लात मारे मै बुढ्‌उ की आन पर मर जाऊंगी इस चौखट को न तो छोड़ूंगी और नही बद्दुआ दूंगी ।

मधु–दादी भले ही मत बद्दुआ दो पर आपके पोते तो आने मां बाप की करतूते देख रहे है । वे भी एक दिन ऐसा जरूर करेगे । दादी मत खाओं ये सूखी रोटी दो मैं भैंस को डल देती हू । आपका खाना अपने घर से लाती हूं ।

पार्वती–ना मधु ना ऐसा ना कर ।

मधु–दादी कम से कम आज तो भर पेट खा लो ।

पार्वती–बेटी तू सदा सुखी रह पर मैं अपने हिस्से की यही सूखी रोटी खाऊंगी ।

मधु–क्यो दादी ?

पार्वती–मर्यादा खातिर । बहु–बेटों को पता लग जायेगा तो घर से बाहर कर देगे। कहेगे जो भीख मांग कर खा । उनकी इज्जत पर कीचड़ जो उछल जायेगा । रोटीमें और पानी डाल देती हूं जल्दी गल जायेगी । फिर खा लूंगी । बेटी तू चिन्ता ना कर मेरा तो रोज का यही हाल है । आज तक इस बस्ती का किसी आदमी को भनक तक नही लग पायी है मेरी दुर्दशा की । बेटी किसी से न कहना मुझसे वादा करो ।

मधु–दादी ऐसा वादा क्यों मांग रही है ।

पार्वती–बेटी अपनी छाती पर खड़े इस घर की दहलीज से मेरी अर्थी जो उठनी है । यदि मेरी दुर्दश की खबर बस्ती वालों के कानो तक पहुंच गयी तो मेरी लाश भी कफन को तरस जायेगी ।

मधु–दादी इतनी बड़ी बस्ती तो है । बस्ती वाले मनिकनिका पहुंचा देगे चनदा–बेहरी करके । जीते जी रोटी की चिन्ता नही है मरने के बाद की चिन्ता में सुलग रही हो ।
पार्वती–बेटी जिसके कंधे पर चढकर स्वर्ग जाना था वह तो पहले ही कूच कर गये । बेटों के हाथ से मुट्‌ठी भर माटी मिल जायेगी तो जन्म तो नही बिगडेगा ना ।
मधु–दादी अगले जन्म की चिन्ता है । जीवन नरक हो रहा है । इस नरक को सहने के लिये तैयार है ।
पार्वती–मधु बेटी बेटों से बंश सुरक्षित रहता है ना ।बंश सुख के लिये हर दुख सहने की सामर्थ्य रखती हूं ।
मधु–दादी जमाना बदल गया है । बेटे–बेटी दोनों एक समान है । बेटों का दिया दुखभोगने के बाद भी आंख नही खुल रही है ।
पार्वती–सब समझती हूं पर जीवन के आखिर मोड़ पर भटकना नही चाहती हूं ।
मधु–मतलब .....
पार्वती–अब यही मेरी तकदीर है । जहां से बुढउ की अर्थी उठी वही से मेरी भी उठे । अब तो जीवन के मोती बिखर ही चुके है । लावारिस नही मरना चाहती मधु । गांव वालों सामने अपना दुखड़ा भी नही रोना चाहती जिनकी मदद करती थी उनके सामने आंसू जीते जी मर जाऊंगी । मेरा वादा याद रखना मधु। अब तुम जाओ मेरी बहुये हाट से

आने वाली है । तुमको मेरे साथ देख ली तो पीठ में सटा पेट आतों को चबा तो लेगा पर बूढी हड्डियां कराह उठेगी ।

मधु–दादी मांफ करना । ये कुछ पैसे है । रख लो काम आयेगा ।

पार्वती–सदा सुहागिन और सुखी रहो । तुम्हारा परिवार दिन दुनी–रात चौगुनी तरक्की करें । अब जा मधु । मुझे भयावह सफर पर अकेला चला है । बहुये आ गयी और तुमको मेरे साथ देख ली तो मुझे तो जो कहेगी मैं सह लूंगी पर निरापद तुमको बुरा–भला कह दी तो मुझे बर्दाश्त नही होगा । वैसे तो रोज मर रही हूं पर आज और मर जाऊंगी शरम के समन्दर में डूबकर ।

मधु–दादी रोओ मत । रोटी गल गयी है । खाकर पानी पी लो । अब तो जीवन भर रोना है । ऐसे बेटे बहुओं के साम्राज्य में ।

पार्वती–हां मधु सपनों के मोती तो बिखर गये । विषधरों के बीच जीने की विवशता है ।

मधु–दादी अब तो खा लो । मैं जा रही हूं ।

पार्वती–मधु खाना तो पडेगा ही पापी पेट की आग बुझाने के लिये । आशा निराशा में बदल गयी है । बुढ्उ के मरते ही मेरी दुनिया भयवाह हो गयी । रात के अंधेरे में ही नही दिन के उजाले में भी डर लगता है । देखो इस बूढी काया

को कब तक बेटे बहुओं के उत्पीड़न का जहर पीना लिखा है ।भगवान अब अपनों का दिया हुआ घाव बर्दाश्त नही होता कहते हुए नमक पानी में गीली रोटी का निवाला पार्वती दादी पेट में उतारने लगी । मधु आखों में आंसू लिये डरी–सहमी अपने घर की ओर दौड़ पड़ी ।

3–चुल्लू भर पानी

क्यों जी बिन मौसम की बरसात क्यो...... । अभी तो सूरज आग उगल रहा है। मौसम विज्ञानी बता रहे है कि मानसून जून के आखिरी सप्ताह में आ सकता हैं। ये अवारा बादल कहां से टूट पडे विशाल की मां ।

गीता– क्या कह रहे हो विशाल के पापा मेरी तो समझ में ही नही कुछ आ रहा हैं ।

अशोक–बहाना नही ।

गीता–कैसा बहाना जी ?

अशोक–तुम्हारी आंखों में आंसू क्यों ?

गीता–अच्छा ये आसूं। ये तो चुल्लू भर पानी में डूब मरने की बात है ।

अशोक–ये कैसी चक्रवाती बरसात है जो बिना किसी बरसात और बिना बाढ के डूब मरने के लिये फुफकार रही है ।

गीता–थोडी देर पहले आ गयी थी चक्रवाती बरसात एक निराश्रित बूढी मां के साथ ।

अशोक–बूढी मां ।
गीता–हां बूढी मां के ही साथ आयी थी चक्रवाती बरसात जो लोभी औलादो की मंशा को तार तार करने के लिये काफी थी ।
अशोक–कौन सी बूढी मां की बात कर रही हो । कोई गम्भीर मामला हैं क्या ।
गीता– हां । आने वाला समय बूढे मां बाप के लिये तबाही लेकर आना वाला है ।
अशोक–क्या कह रही हो विशाल की मां ।
गीता–ठीक कह रही हूं ।एक अंधी बूढी लाचार मां शहर के चकाचौध भरे उजाले में पता ढूढ रही थी अपनी बेटी का । बेचारी बूढी मां निष्कासित थी ।
अशोक–निष्कासित ।
गीता–हां निष्कासित । एक नालायक बेटा अपनी अंधी मां को घर से निकाल दिया था । वह बूढी मां अपनी डयोढी पर आ गिरी थी । उनकी दास्तान सुनकर ये बिन मौसम हंसते जख्म की बरसात ।
अशोक–गुस्ताखी के लिये क्षमा करना देवी जी पर अब वो मां कहा है ?
गीता–बूढी मां को उसकी बेटी के घर छोड आयी ।
अशोक–बेटी के घर ।

गीता –हां बेटी के घर । बेटा घर से निकाल दिया हैं तो वह बूढी मां बेचारी जाती तो जाती कहां ।ना थाह ना पता । बस इतना कालोनी का नाम मालूम और ये भी कि तिकोने बगीचे के सामने घर हैं । इसी आधार पर बूढी मां की बेटी के घर की तलाश करनी पडी हैं । काफी मश्कत के बाद घर मिल गया ।
अशोक–आज औलाद इतनी स्वार्थी हो गयी है कि अंधी मां को रहने के लिये जगह नही है उसके ही बनाये आशियाने में ।बेटा मां को घर से बेदखल करने पर उतर आया है ।
गीता–हां बेचारी बूढी मां दर दर भटक रही थी ना जाने कब से ।आज बेटी के घर पहुंच पायी हैं । यदि उस बूढी मां की मदद ना करते तो भटकती रहती ना जाने कहा कहां । थक हार कर किसी गाडी के नीचे आ जाती । मरने के बाद लावारिस हो जाती । बेटा को कफन पर भी खर्च ना करना पडता । मां को घर से बेदखल कर खुद मालिक बन बैठा हैं नालायक बेटा ।मां भूखी प्यासी धक्के खाने को मजबूर हो गयी हैं । बेटी ना होता तो वह बूंढी अंधी लाचार मां कहा जाती । बूढी मां की दशा देखकर मन रो उठा विशाल के पापा । भगवान ऐसी सजा किसी मां बाप को ना दें ।
अशोक–बूढी मां के साथ दादा ना थे क्या ।
गीता–नही । वे बेचारे मर गये हैं ।उनके मरते ही बेचारी पर मुसीबत का पहाड गिर पडा है ।

अशोक–दौलत के लिये मां पर बेटा जुल्म कर रहा है ।वाह रे बेटा । मां के आसूं का सुख भोग रहा है ।
गीता–हां जब तक पूरी दौलत पर कब्जा नही हुआ । बूढी मां को कुत्ते बिल्ली की भांति रूखी सूखी रोटी मिल जाती थी । चल अचल सम्पति पर पूरी तरह कब्जा होते ही बेटा बहू ने एकदम से दरवाजे बन्द कर लिये बेचारी लाचार मां सडक पर आ गयी ।
अशोक–बाप रे जिस घर को बनाने मेंऔर औलाद को पालने में जीवन के सारे सुखो की आहुति दे दी उसी घर से बेदखल कर दी गयी वह भी खुद के बेटे के हाथो ।
गीता–हां ऐसा ही हुआ हैं उस बूढी मां के साथ ।
अशोक–वाह रे ममता के दुश्मन ।आज मां बाप पुत्र मोह में पागल हो रहे हैं। बीटिया को जन्म से पहले मार दे रहे हैं । वही बेटे बूढे मां बाप को सडक पर ला फेक रहे हैं ।
गीता–हां ऐसा ही हुआ हैं उस बूढी मां के साथ । उसके पति सरकार नौकरी में थे गाडी बंगला सब कुछ था । अच्छी कमाई थी । बेचारे की अचानक मौत हो गयी । पति की मौत के बाद लोभी बेटा सब कुछ अपने नाम करवा का बूढी मां को सडक पर पटक दिया भीख मांगने को ।
अशोक– बाप रे अब बूढे मां बापो को अनाथ आश्रमों में आश्रय लेना पडेगा ।
गीता–क्यों ।

अशोक–कहां जायेगे ।

गीता–बेटिया है ना ।

अशोक–बेटियां ।

गीता–हां बेटिया बेटो से किसी मायने में कम नही है । बूढी मां की बेटी मां को देखकर बिलख बिलख कर रोने लगी थी जैसे भरत राम रोये थे कभी ।इसी धरती पर कभी श्रवण थे जो अपने बूढे मां को बहंगी में बिठाकर सारे तीर्थव्रत करवाये ।आज देखो बेटे रोटी देने को तैयार नही है । मां बाप को बोझ समझ रहे हैं जबकि सब कुछ मां बापों का ही बनाया हुआ है ।

अशोक–जितनी तरक्की हो रही हैं उतनी ही तेजी से स्वार्थपरता के भाव में बृध्दि हो रही है। अंधगति से आदमी का मानसिक पतन भी हो रही है ।

गीता–सच बहुत बुरा समय आ गया हैं । बूढी मां की दशा देखकर पत्थर भी पिघल जाये पर वो नालायक बेटा नही पिघला । मां को घर से बेदखल ही कर दिया ।कहते हुए गीता सिसकने लगी

अशोक–आसूं पोछों । डर लगने लगा है । कब्र में पैर लटकाये बूढे मां बाप वृध्दाश्रमों का पता पूछने लगे है। विशाल की मां ये समाज के लिये शुभ संकेत कतई नही है ।

गीता–आज की औलादो को कैसा संक्रमण लग गया है कि मां बाप बोझ लगने लगे है ।वृध्दाश्रमो की शरण मे जा रहे हैं औलादो के होते हुए भी । वाह रे स्वार्थी औलादें । भूल रहे हैं मां बाप के त्याग को ।

अशोक–मां बापों को भी अपने में बदलाव करना पडेगा और पुत्र मोह से उबरकर बेटी बेटा को बराबर का हक देना होगा ।पुत्र मोह के अंधविश्वास को तोडना होगा ।

गीता–बंश का क्या होगा ।

अशोक–बेटिया बेटो से कम नही हैं ।दोनो को बराबर का हक होना चाहिये । बेटी बेटा दोनो को मां बाप की परवरिश के लिये तैयार रहना होगा ।

गीता–बूढे मां बाप बेटी के घर जाकर रहेगे । इज्जत का क्या होगा ।

अशोक–बेटी के साथ रहने में इज्जत घटेगी नही बढेगी। बेटिया भी तो उसी मां बाप की सन्तान हैं ।पुत्र बंश चलाा हैं गुजरे जमाने की बात हो गयी । यही अंधविश्वास तो बूढे मां बाप की दुर्दशा का कारण है । जीवन की संझा में सुख की जगह मुट्ठी भर भर कर आग दुख परोस रहा है ।

गीता–आने वाला समय भयावह न हो । इससे पहले मां बापो को भी सतर्क हो जाना चाहिये खासकर युवा दम्पतियों को ।बच्चों को नैतिकता का बोध करायें । लोभी प्रवृति विरासत में ना दे । मां बापों के कृतित्व का प्रभाव बच्चों पर

अवश्य ही पडता हैं । युवा दम्पति अपने मां बाप के साथ जो बर्ताव करते हैं। यकीनन उसका असर नन्हे बच्चो पर भी पडता हैं । आगे चलकर यही नन्हे बच्चे बडे होते हैं । अपने मां बाप द्वारा खुद के दादा दादी के साथ किये गये बर्ताव एवं बदसलूकियों को दोहराते हैं । युवा दम्पतियों को बचपन से ही बच्चों को अच्छी परवरिश के साथ अच्दे संस्कार भी देने होगे जिससे आने वाले समय में उनके साथ कुछ बुरा ना हो सके । मां बाप धन दौलत के पीछे भाग रहे हैं बच्चे झूलाघरो में पल रहे हैं अथवा नौकरों के हाथों । वे मां की ममता और बाप के प्यार से बंचित हो जाते हैं।ऐसे बच्चे मां बाप को क्या समझेगे ।मां बाप की धन के पीछे न भागकर बच्चो की अच्छी परवरिश पर ध्यान देना चाहिये । आगे चलकर ये बच्चे उग्र रूप धारण कर लेते हैं ।नतीजन मां बाप को दुर्दशा झेलना पडता हैं जिससे उनका सांध्यकाल दुखदायी हो जाता है ।रोटी के लिये तरसना पड जाता है ।

अशोक–ठीक कह रही हो । बूढे मां बाप घर से बेघर ना हो । नवदम्पतियों को गहराई से विचार करना होगा । धन की अंधी दौड से बचना होगा ।मां को अपने और बाप को अपने दायित्व पर न्याय करना होगा । तभी बूढे मां को घर से बेघर होने से बचाया जा सकेगा ।

गीता–वृध्दाश्रम की संख्या में बढती बृध्दि और बूढे मां बाप का सडक पर आना औलादों को चुल्लू भर पानी में डूब मरने वाली बात होगी । मां बाप तो धरती के भगवान हैं । मां बाप की सेवा से बडी कोई भी दौलत सुख नही दे सकती ।

4–फर्ज

जोर जोर से गेट पीटने की आवाज सुनकर मिसेज आरती बाहर आयी । गेट पीटने वाली से बोली भइया गेट तोड रहे हो या बुला रहे हो । आग बरसती गर्मी में क्या काम पड गया । कहां जाना हैं तुमको । क्यो इतना पी लेते हो । घर में बीबी बच्चों का फांके का ख्याल आता है । बाल बच्चे घर परिवार सब भूल गये दारू की मौज में । इतना भी पता नही है कि कहां जाना है । अरे नही पचती तो क्यों पी लेते हो। क्यों गेट पीट रहे हो आगे बढो । अपने घर में भी चैन से नही रह सकते ।कैसे कैसे लोग है जमाने में अपनी अय्याशी के लिये खुद के घरपरिवार को तबाही में तो झोंकते ही हैं दूसरों का चैन भी छिनते है ।जाओ भइया अपने घर जाओ । मुझे तुम्हारी कुछ नही सुननी है ।
तुम्हारे पडोस वाले सुनील फण्डुनीसा का बिजली का कनेक्शन करने आया हूं । मेरी बात तुमको सुनना पडेगा । मैं सक्सेना हूं नशे में धुत आदमी बोला ।

मिसेज आरती–सुनील का पांच साल पुराना मकान है ।बिजली का कनेक्शन उनके यहां हैं तो नया कनेक्शन क्यों करवायेगे ।

सक्सेना लडखडाती हुई जबान में बोला –करना है तो करना है बस ।

मिसेज आरती– सुनील फण्डुनीसा के घर जाओ ।

सक्सेना लडखडाती आवाज में बोला तुम्हारी छत पर जाना है ।

मिसेज आरती–हमारी छत पर क्यों ।

सक्सेना–बहुत सवाल करती हो । अरे कनेक्शन तुम्हारी छत पर जाकर ही तो करूंगा ।

मिसेज आरती–मेरी छत पर नही जाना है कहकर ज्योहिं घर में आई फिर सक्सेना गेट पीटने लगा है ।

मिसेज आरती बेटे रंजन से बोली बेटा देख अब कौन आया । तेरे पापा सो रहे है । टैंकर की इन्तजार में रात भर जागते रहे।रात को दो बजे तो टेंकर का पानी आया था । पैसा भी दिन रात टकटकी लगाये रहो ये टेंकर वाले भी पैसा लेने के बाद रूला देते है ।पानी की समस्या ने चैन छिन लिया है दूसरे ना जाने कहां कहां से बिन बुलाये आ जाते है । लोग ना जाने क्यो तनिक आराम करने लेटे तभी आ धमकते है । जा बेटा रंजन देख ले ना ।

रंजन–देखता हूं मम्मी कहकर बाहर गया । गेट पर बेसुध खडे आदमी से पूछा कौन हो अंकल पानी पीना है क्या । नहीं मुझे तुम्हारी छत पर जाना है । फण्डुनीसा का कनेक्शन करना हैं । फण्डुनीसा ने भेजा है ।

रंजन–अंकल फण्डुनीसा के घर के सामने ही तो बिजली का खम्भा है वहां से क्यो नही कर देते कनेक्शन । हम तो आपको पहचानते भी नही । कैसे आपको अपनी छत पर जाने दूं । फण्डुनीसा अंकल को आपके साथ आना था ।

सक्सेना– मैं चोर नही बिजली विभाग से आया हूं ।

रंजन– बिजली विभाग से आये हो तो अंकल के घर के सामने वाले पोल से कनेक्सन क्यों नही कर देते । हम लोगो को आग बरसती दोपहरी में क्यों परेशान कर रहे हो ।

सक्सेना– तुम्हारी पडोसी फण्डुनीसा कहता है । मेरे घर के सामने वाले पोल में बिजली कम आती है और यहां ज्यादा रहती है । इसीलिये फिर से कनेक्सन करवा रहा है । मुझे क्या करना हैं मुझे तो बस पैसा चाहिये चाहे जहां से करवाये ।

रंजन–ठीक है जाओ पर ज्यादा टाइम नही लगाना ।

सक्सेना– टेम तो लगेगा कहते हुए छत पर गया केबल छज्जे में अटकाया । छत से नीचे उतरा और खम्भे पर चढकर केबल खींचने लगा । केबल खीचने की वजह से पौधे

की छोटी छोटी डाले और पत्तियां टूटने लगी । कुछ ही सेकेण्ड में बादाम की मोटी डाल टूटकर धडाम से गिरी । पौधों का नुकशान मिसेज आरती से बर्दाश्त नही हुआ । वे बोली क्यो भाई आप कनेक्शन कर रहे हैं या मेरे पौधे तोड रहे है । पीने को पानी नही मिल रहा है ऐसे हालात में भी मैं पौधों को सींच रही हूं । मेरे आंगन की हरियाली आप क्यो उजाड रहे हो भइया ।

सक्सेना–देख बकबक ना कर जरूरत पडी तो ये पेड पौधे कट भी जायेगे ।

मिसेज–आरती क्या कहा तुमने तेज आवाज में बोली।

सक्सेना– हां ठीक सुनी हो । ये पेड पौधे काटे भी जा सकते है ।

मिसेज आरती– वो भाई याद रख जो पौधे तोड रहे हो वे पौधे खैरात की जमीन में नही हमारी अपनी जमीन में लगे है।ये जमीन पसीने की कमाई से खरीदी गया है । ।इन पौधे का ख्याल मैं अपने परिवार सरीखे रखती हूं । तुम काटने की बात कर रहे रहे हो ।देखती हूं कैसे काटते हो ।

इतना सुनते ही सक्सेना तमतमाते हुए नीचे उतरा । अपशब्द बकते हुए चिल्ला चोट करने लगा । शोरगुल सुनकर मिस्टर लाल की नींद खुल गयी वे भी बाहर आ गये । उनको देखकर मिसेज आरती बोली देखो जी ये आदमी पौधे तोड

रहा है,काटने की बात कर रहा है उपर से चिल्लाचोट भी कर रहा है ।
मिस्टर लाल क्यो जनाब क्यों आतंक मचा रहे है । कौन है आप। क्यों तुम्हारी नजर मेरे पौधे की हरियाली पर लग रही है । हमारा नुकशान कर रहे हो । भरी दोपहरी में चिल्लाचोट कर रहे हो कैसे आदमी हो ।इंसान होकर इंसानियत का धर्म भूल रहे हैं । अपने फर्ज का कत्ल कर रहे है । हमारे बगीचे को जानवर की तरह चर रहे हो कैसे आदमी हो भाई ।
सक्सेना– तुम्हारे पडोसी फण्डुनीसा का कनेक्सन कर रहा हूं तुम्हारा नुकशान नही कर रहा हूं ।
मिस्टर लाल– ये पौधे कैसे टूटे है । क्या यह नुकशान नही है ।
सक्सेना–तुमको आब्जेकसन है ।
मिस्टर लाल– तुम कनेक्शन करने के बहाने मेरा बगीचा उजाड रहे हो और उपर से पूछ रहे हो आब्जेक्शन है ।
सक्सेना–आब्जेक्सन है येलो किससे बात करनी है कर लो मोबाइल दिखाते हुए बोला ।
मिस्टरलाल– होश में आओ । बताओ किसकी परमिशन से खम्भे पर चढे हो । तुम्हारे पास कोई कागज है तो दिखाओ ।

सक्सेना– तुम कौन होते हो पूछने वाले। वह फिर मोर्बाइल दिखाते हुए फिर बोला ये लो कर लो न बात । देखता हूं किससे बात करते हो । देखता हूं मुझे कौन रोकता है मुझे कनेक्शन करने से। मैं एक फोन करूंगा तो सीधे अन्दर जाओगे ।
मिस्टरलाल–नशे में हाथी भी चींटी दिखायी पडती है ।फण्डुनीसा का कनेक्सन कर रहा है अनएथोराइज ढंग से और मुझे धमका रहा है । इतनी बडी दादागीरी । चोर कोतवाल को डांटे वाली कहावत तुम चरितार्थ कर रहे हो सक्सेना ।
सक्सेना–तुम फण्डुनीसा को नही जानते क्या ।
मिस्टरलाल– अरे भाई ऐसे मुर्दा सरीखे लोगों को जानने से बेहतर ना ही जानो । ये मतलबी लोग है जब जरूरत पडती हैं तब पहचानते है । बिना जरूरत के तो मातम वाले घर की तरफ नही देखते । अब तुम अपनी बकबक बन्द करो । याद रखो मेरे पौधों को नुकशान नही पहुंचाना ।
सक्सेना लालपीला हो रहा था मिस्टरलाल उसे समझााने का प्रयत्न कर रहे थे इसी बीच सुनील फण्डुनीसा आ गया ।वह सक्सेना को एक तरफ करते हुए बोला तू अपना काम कर देखता हूं कैसे रोकता है ।
मिस्टरलाल– भई फण्डुनीसा शराफत भी कोई चीज होती है ।एक पडोसी का दूसरे के प्रति कुछ दायित्व होता है ।

पडोसी होने के आदमी का फर्ज और अधिक बढ जाता है । आप इतने बडे आदमी है कि एक दरोडियों को भरी दोपहरी में मेरे घर भेज दिये । क्या यही अच्छे पडोसी का फर्ज बनता है ।
फण्डुनीसा –अच्छा तो तू मुझे शराफत सीखायेगा। फर्ज पर चलना सीखायेगा । मुक्का तानते हुए बोला चल हट नही तो अभी दो दूंगा तो सारी अकड निकल जायेगी ।चला है एथोराइज अनएथोराइज की बात करने ।
मिस्टरलाल–अरे अपनी औकात में रह फण्डुनीसा । अपने बालबच्चो को पाल ,पढा लिखा गुण्डई शराफत का गहना नही है । बीयर बार में गिलास धोकर तो परिवार चला रहा है । मालूम है जब शरीफ आदमी बदमाशी पर आता है तो तुम्हारे जैसे गुण्डे नेस्तानाबूत हो जाते है ।
फण्डुनीसा –हां मैं तो गुण्डा हूं नेस्तानाबूत करके देख लेना।
मिसेज आरती– पडोसी भगवान की तरह होते हैं । यहां तो पडोस में शैतान बसते है । एक तरफ व्यभिचारी तो दूसरी तरफ गुण्डा कैसे शरीफ लोग रह पायेगे ।गुण्डे किस्म के लोग अभी तक तो झुग्गी झोपडी का सहारा लेते थे । अब शरीफों की बस्ती में घुसपैठ करने लगे है ।
फण्डुनीसा –तुम लोग कितना भी चिल्लाचोट कर लोग मेरा कनेक्शन तो तुम्हारे घर के सामने के पोल से ही होगा ।

मिस्टर लाल– फण्डुनीसा गुण्डाजी अवैध कनेक्शन करवाओगे । मेरे पेड पौधों को काटोगे या मेरा कनेक्शन काटोगे । मेरे दरवाजे पर मुझे मारने आ रहे हो । नतीजा मालूम है क्या होगा। इतना बडा गुण्डा पडोस में बसता है थोडी खबर तो थी पर आज पूरी जानकारी भी मिल गयी ।
फण्डुनीसा –अब तो पता चल गया । मेरे रास्ते में जो आयेगा सबको देख लूंगा । इतनी में फण्डुनीसा की घरवाली हाथ में सरिया लेकर गाली देते हुए मिस्टर लाल के दरवाजे तक चढ आयी ।
फण्डुनीसा और उसकी घरवाली की करतूते देखकर सामने वाले लाला के परिवार के लोग ताली बजाबजाकर खुश हो रहे थे। यह उसी लालाजी का परिवार था जिनकी मौत से लेकर दूसरे क्रियाकर्मो तक फडनीस कभी नही दिखा था और ना ही आसपास के और लोग । मिस्टर लाल ना रात देखे ना दिन सब कामों में खडे रहे और उनकी धर्मपत्नी तो उनसे आगे थी चाय नाश्ता खाना पानी तक का इन्तजाम की थी । आज वही लाला का परिवार मिस्टर लाल के साथ पडोस वाले गुण्डे फण्डुनीसा की करतूत पर खुश हो रहा था । उसकी ताकत बन रहा था ।
मिस्टर लाल फण्डुनीसा के दुर्व्यहार से दुखी तो थे ही लाला के परिवार के आग में घी डालने की करतूत से खिन्न भी । फण्डुनीसा और उसकी घरवाली अनाप शनाप बके जा रहे थे

। मिस्टर लाल के बच्चे उन्हे घर में ले गये । काफी देर तक गुण्डे की ललकार हवा में गूंजती रही । शोरगुल सुनकर पीछे वाली गली से मिसेज मनवती और कई सभ्य लोग मिस्टर लाल के घर आ गये ।

मिसेज मनवती – मिसेज आरती से बोली क्या भाभी आप लोग पागल कुतो को पुचकारते हो । हर आदमी के दुख सुख में कूद पडते हो ।देखो आजकल के लोग नेकी के बदले क्या देते हैं । फण्डुनीसा के भी तो आप लोग बहुत काम आये हो । जब इसका बन रहा था तब भी मदद करते थे । उसके गृहप्रवेश के दिन तो रात भर पानी भरवाते रहे अपनी बोरिंग चला कर । इस दगाबाज दोगले फण्डुनीसा के घर में जब चोरी हुई थी तो कोई आगे पीछे नही था आपके घर को छोडकर । ये लाला का परिवार तो दरवाजा ही नही खोला था । पडोस वाला व्यभिचारी जो आज कूदकूद कर कनेक्शन करवाया हैं । यह भी तो नही दिखा था । जिनके संग दाल बांटी की पार्टी जमाता था वे लोग तो इस अमानुष के मुंह पर मुसीबत में भी मूतने नही आये । थाने से लेकर घर तक का काम आप लोगो ने ही देखा था । इसके बाद भी फण्डुनीसा की घरवाली ने पडोसियों पर ही इल्जाम लगाया थी । भला हो पुलिस वालों का उसके मुंह पर थूक दिये यह कह कर कि अब तुमको कैसे पडोसी चाहिये । पडोसी में नही तुममें दोष है । शरीफ सरीखे

पडोसियों पर इल्जाम लगा रहे हो । तब फण्डुनीसा और उसकी घरवाली का मुंह देखने लायक हो गया था ।
मिसेज आरती–भाभीजी इंसान के काम तो इंसान ही आत हैं ना । हम लोगो से किसी का दुख दर्द बर्दाश्त नही होता । कहते है ना दर्द का रिशता सभी रिशतें से बडझ होाता है । जहां तक सम्भव होता हैं हम किसी की मदद करने से नही चूकते ।आदमी हमारी नेकी को भले भूला दे पर भगवान तो नही भूलायेगा ।
मिसेज मनवती– भाभी ऐसी भी नेकी किस काम की । जिसके साथ नेकी करो वह खून का प्यासा बन जाये । ऐसे लोग तडपते रहे तो भी ऐसी हालत में उनके मुंह पर पेशाब नही करना चाहिये । बेशरमों में जरा भी मर्यादा शेष नही बची है । अगर ऐसे ही होता रहा तो कोई किसी के दुख सुख में काम कैसे आयेगा ।ऐसे ही पडोसियों की वजह से शहर बदनाम हो रहा है ।पडोस में कोई मर जाता है पडोस को खबर न लगने का कारण ऐसे पडोसी है । फण्डुनीसा जैसे मतलबी पडोसी, पडोसी के फर्ज पर कहां खरे उतर सकते है ।
मिस्टर लाल–भाभीजी हम लोागो से किसी का बुरा नही देखा जाता । कैसे मुंह मोड ले अपने फर्ज से ।
मिसेज मनवती –आपकी की गई भलाई का क्या सिला दिया फण्डुनीसा और ये लाला का परिवार । उस पडोसी विमल

भण्डार वाले को देखो कितना बढिया आपकी ओर से सम्बन्ध था पर सडी सी ब्रेड को लेकर उसने पडोसी के पाक रिश्ते को नापाक कर दिया । ब्रेड तो रख ही लिया पैसा भी नही दिया । बुरा भला कहा उपर से और भी ऐसे बहुत लोग है। नालायक गुण्डे खुद को खुदा समझने लगे है । ठीक हम लोगो लोगो के पास दो नम्बर की कमाई नही है तो क्या पास मार्यादा तो है ।मान सम्मान हैं शरीफ लोगो के बीच बैठक है । भाई साहब ऐसे लोगो के लिये खडा होने से बेहतर तो ये है कि अपने कानो में रूई डाल लो । मरने दो सालों को । जब तक ये लोग हवा से जमीन पर नही गिरेगे तब तक ऐसे ही शरीफों की शराफत का मजाक उडाते रहेगे । आप तो अपने परिवार के साथ छुट्‌टी मना रहे थे रंग में भंग डाल दिया फण्डुनीसा गुण्डे ने । अमानुष मारने की धौंस दे गया ।

मिसेज आरती–भाभीजी फण्डुनीसा ने अपनी जबान खराब की है ।शरीफ लोग शराफत छोड देगे तो दुनिया का क्या होगा । आदमी से आदमी का नही भगवान से विश्वास उठने लगेगा । जैसी करनी वैसी भरनी । आज तो हम चुप रह गये कल कोई बडा वाला मिल जायेगा । हड्‌डिया चटका देगा । भगवान के उपर छोड दो ।बुरे काम का नतीजा कहां अच्छा आता है भाभीजी लीजिये पानी पीजिये ।

सभी आगन्तुक अपनी अपनी तरह से समझा रहे थे । ढाढस दे रहे थे । उधर फण्डुनीसा छाती फुलाकर अवैध तरीके से कनेक्शन करवा रहा था । फण्डुनीसा की घरवाली और लाला के घर की औरते मिस्टर लाल के घर की तरफ ताक ताककर ठुसुर भुसुर कर रही थी । कुछ देर में मिस्टर लाल के घर आये कालोनी के पीछे वाली गली के लोग अपने अपने घर चले गये । अवैध तरीके से कनेक्शन हो गया । दोपहर ढल चुकी थी । नवतपा का आठवा दिन था आग बरसा रहा था । इसी बीच आकाश में अंवारा बादल उमडने लगे थे । देखते देखते ही आंधी ने जोर पकड लिया ।आंधी के जोर ने सक्सेना के नशे को कम कर दिया । उसके मन मे विराजित इंसानियत जाग उठी । वह एक बार फिर मिस्टर लाल के मेनगेट पर दस्तक दिया । उसे देखकर मिस्टर लाल बोले अब क्या लेने आये हो भाई ।

सक्सेना–साहब माफी मांगने आया हूं ।

मिस्टरलाल– मैं कौन होता हूं माफी देने वाला ।जाओ भगवान से माफी मांगो । सच्चे और शरीफ इंसान को दुख देकर कोई भी सुखी नही रह सकता चाहे तुम रहो या तुम्हारा फण्डुनीसा ।

मिसेज आरती– भइया सक्सेना आप तो कनेक्शन करने आये थे परन्तु आपने हमारी ही नही अपनी भी मर्यादा का खून किया है । आदमियत का खून किया है । अपने फर्ज

को रौंदा है ।आप कनेक्शन करने नही फण्डुनीसा की तरफ से मारपीट करने आये थे ।
सक्सेना–मैडमजी शर्मिन्दा हूं नशे में था ।जानता हूं पडोसी सगे से भी बडा होता है परन्तु फण्डुनीसा तो पडोस में रहने फण्डुनीसा शराफत का चोला ओढे बदमाश है । मेरा नशा अब उतर गया है । फण्डुनीसा ने दारू पिलाया था । मुझे बडी गलती हो गयी अनजाने में क्षमा करना । भगवान फण्डुनीसा की तरह के पडोसी मेरे दुश्मन को भी न दे ।
मिस्टर लाल–सक्सेना कोई निभाये चाहे न निभाये मैं तो अपना फर्ज निभाऊंगा ।
मिसेज आरती– हां सक्सेना भइया ये ठीक कह रहे है ।शरीफ इंसान शराफत को कैसे छोड देगा
सक्सेना–मैडमजी आप जैसे पडोसी तो किसी देवता से कम नही पर ये गुण्डे व्यभिचारी क्या जाने पडोसी के धर्म को ये तो चील गिध्द कौवों की तरह अपना मतलब साधकर बस हंसते जख्म देना जानते है ।
मिस्टरलाल–सक्सेना तुम जाओ । मुझे अपना फर्ज याद रहेगा ।
सक्सेना–भाई साहब पडोस वाले फण्डुनीसा और ऐसे लोगो से सावधान रहना. ऐसे लोग पडोस में रहकर पडोसी के जीवन में मुट्ठी भर भर आग बोते है..... मैं नहीं भूलूंगा अच्छे पड़ोसी का फर्ज कसम से.........

5–दहेज की आग

औरत जात को ले डूबेगी ये दहेज की आग । कब बुझेगी ये दहेज की आग । खुदा खैर रखे अब ना जले और कोई लडकी दहेज की आग.......... मिसेज शोभा बडबडाते हुए बरामदे में धडाम से गिर पडी । मां को गिरता हुआ देखकर अवध दौडकर उठाकर बैठाया फिर एक गिलास पानी लाया । मां को पिलाते हुए बोला क्या हुआ मां तबियत तो ठीक है ।

मिसेज शोभा –हां बेटा मेरी तबियत तो ठीक है पर एक लडकी और जला दी गयी दहेज की आग में । कब तक ऐसे ही लडकिया जलाती जाती रहेगी । कब तक मां बाप दहेज दानवों की मांग अपना घर द्वार बेंचकर पूरी करते रहेगें ।

अवध मां का सिर सहलाते हुए बोला–दहेज लोभियों का नाश होगा एक दिन । पापी काल कोठरी में तडप तडप मौत की भीख मांगेगे ।बहू को दहेज के लिये जला देते है । पराई बेटियों को अपनी बेटी क्यो ं नही सोचते । दहेज की आग बुझे बिना औरत जात सुरक्षित नही रह पायेगी । दहेज लेना और देना दोनो अपराध है । यह जानते हुए भी लोभियों के हौशले पस्त नही हो रहे है ।

मिसेज शोभा– दहेज की आग सुनीता को ले डूबी । बेचारी की दर्दनाक मौत की खबर सुनकर चक्कर आ गया । कितनी धूमधाम से बीटिया का ब्याह किया था सतीश बाबू ने । कोई कोर कसर नही छोडे थे।गृहस्ती की एक एक चीज दिये थे । मां बाप की एक ही बेटी थी वह भी जलाकर मार दी गयी ।बेचारे राजू की कलाई पर अब तो राखी भी नही बंध पायेगी । जीवन भर की कमाई बीटिया के ब्याह पर खर्च कर दिये । इसके बाद भी लोभियो ने उच्च शिक्षित सर्वगुण सम्पन्न सुनीता को आग में झोंक दिया । बेचारी को जिन्दा जलते हुए कितना रोयी चिल्लायी होगी ।सोचकर मन रो उठता है पर उन अमानुषों को तनिक भी रहम नही आयी। पेट्रोल छिडकर जला डाला । ना जाने कब तक लडकियों को जलाती रहेगी ये दहेज की आग ।
अवध– सतीश काका ने सचमुच सुनीता का ब्याह बहुत धूमधम से किया था ।खूब दान दहेज भी दिये थे । भारी भरकम दहेज की राशि और सामान लेने के बाद भी सुनीता के ससुराले वाले अमानुषों की चाहत पूरी नही हुई । बेचारी को देहज की आग में जला दिया ।
मिसेज शोभा –औरत जात पर तो अन्याय बढता ही जा रहा है ।सगे सम्बन्धी जुल्म ढाह रहे है । बेचारा बाप अपनी इज्जत देता है।धन दौलत देता है । इसके बाद भी बेटी का जीवन लील रहे हैं दहेज के प्यासे अमानुष ।

अवध–मां दहेज दानव सभ्य समाज के माथे का कलंक है । इसके बाद भी खूब फलफूल रहा है ।कुछ लोग तो अधिक दहेज देकर गर्व महसूस करते है । यही गर्व उनकी बेटियों को डंस जाता है ।बेटी जीवन भर दहेज की आग में सिसक सिसक कर बसर करती है या सुनीता की तरह कमरे में बन्द कर घासलेट या पेट्रोल डालकर जला दी जाती हैं । लापरवाही का इल्जाम भी अबला मृतका के उपर ही मढ दिया जाता है ।

मिसेज शोभा गश खाकर गिर पडी यह खबर पडोस में रहने वाली मैडम के कानों को खुचलायी । वे दौडकर आई और पसीने से तरबत्तर मिसेज शोभा से पूछने लगी क्या हो गया दीदी कैसे गिर पडी ।

मिसेज शोभा– सुनीता को उसके सुसराल वालों ने जलाकर मार डाला । यह खबर बेचैन कर दी। बडी मुश्किल से तो घर तक पहुंची , बरामदें में गश खाकर गिर पडी ।

किरन मैडम– बाप रे एक और लडकी दहेज की बलि चढ गयी ।

मिसेज शोभा–हां किरन ।पहली बार सुनीता अपनी ससुराल से आयी थी तो बहुत खुश थी । पति के तारीफों का पुल बांध बांध कर नही थक रही थी ।हां ससुर सास के नाम पर मौन हो जाती थी । बेचारी सुनीता की दादी बयान कर कर रो रही । मुझे भी रोना आ गया था ।बेचारी को दूसरी

बार गये सप्ताह भी नही हुआ कि जलकर मरने की खबर उडते उडते आ गयी ।
किरन मैडम– घर से लेकर संसद तक नारी सशक्तीकरण की चर्चा आजकल जोरो पर है । पंचायती चुनावों में महिलाअें के लिये स्थान आरक्षित है । विधान सभा और लोकसभा में महिलाओं के लिये स्थान आरक्षण की बात चल रही है । सम्भवतः यह लागू भी हो जाये । अच्छी बात हैं नारी को उचित सम्मान मिलना भी चाहिये । नारी का सशक्तीकरण भी हुआ है । नारी संरक्षण हेतु महिला आयेग काम कर रहा है । बडे बडे पदो पर महिलाये विराजमान है । संविधान भी महिलाओं को समानता का अधिकार देता है ।इतना सब कानून कायदा होने के बाद भी भ्रूण हत्या और दहेज दानव के शिकंजे के आगे सभी बौने नजर आ रहे है। सुनीता की मौत तो इस बात की ज्वलन्त गवाह है । खुद जलकर मर गयी ऐसा सुनीता के ससुराल वालों का कहना है पर इसमें जरा भी सच्चई नही हैं अपराध छिपाने का प्रयास है । कानून से बचने का ढोंग है। ऐसा तो हो ही नही सकता ।यह तो फासी के फंदे से बचने का झूठा प्रलाप है ।
मिसेज शोभा–हां किरन इल्जाम तो ऐसा ही लग रहा है पर वह जला कर मारी गयी है ।
किरनमैडम–कोई नवविवाहिता क्यों जलकर मरेगी ।अच्छे घर और अच्छे पति के लिये लडकियां व्रत करती है । बेचारी

क्यों आग में कूद कर मरेगी । लडकियां जलती नही दहेज की आग में जलायी जाती है । ना जाने कब बुझेगी ये दहेज की आग ।

मिसेज शोभा–सुनने में आ रहा है कि सुनीता की सास कह रही थी कि स्टोव भभकने से आग लगी । सुनीता किसी को कुछ बतायी नही कमरे में जाकर खुद बुझाने लगी थी ।आग बुझने की बजाय प्रचण्ड रूप धर ली । उसके साथ कमरे का सामान भी स्वाहा हो गया ।

किरन मैडम– इतनी नासमझ तो नही होगी । अच्छी पढी लिखी और समझदार लडकी थी ।

मिसेजशोभा–अरे कमरे में बन्द कर जला दिया गया है । वह क्यों आग में जलकर मरेगी । मरना ही था तो ससुराल जाकर क्यों मरती । मायके में मरने के लिये जगह कम थी । बाप का लाखों खर्च करवाकर मरने की कसम तो नही खायी थी ।बाप से उसकी दुश्मनी तो थी नही । मां बाप को भाई को जान से ज्यादा चाहती थी वैसे ही ये लोग भी चाहते थे ।लडकियों की असमय मौत अशुभ संकेत है किरन ।ऐसा ही रहा तो दहेज लोभी अपने बेटो का ब्याह कैसे करेगे ।

किरनमैडम–दीदी गैस रहने के बाद भी स्टोव पर खाना क्यों बना रही थी सोचने वाली बात है ।

मिसेजशोभा– हां किरन सच कह रही हो । जलने की खबर भी तो नही दी हैवानों ने ।उडते उडते सुनीता के मरने की खबर सतीशबाबू के कानों तक पहुंची थी । वहां पहुंचे तो सही खबर निकली । भला हो अनजान पडोसी का जिसने पुलिस को खबर कर दी थी ।दाह संस्कार होने से कुछ मिनट पहले सतीशबाबू पहुंचे उनके पीछे पुलिस भी पहुंच गयी ।लाश को पुलिस ने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिये भेज दिया था। बेचारे सतीशबाबू पागलों की तरह घूमते रहे अकेले । बेचारे कहीं से फोन किये तब जाकर पता चला उनके घर । इसके के बाद कालोनी के कुछ लोग गये तब जाकर बेचारे सतीश बाबू की जान में जान आयी।

किरन मैडम– लडकियों के साथ तो बहुत बुरा हो रहा है । अपने इंदौर में पिछले साल बेचारी भूमिका को उसकी सास ने टुकडे टुकडे करके कूडेदान में डाल दिया था ।आज का आदमी कितना हिंसक हो गया है ।दहेज के लिये लडकियों को सब्जी भांजी की तरह काटी जा रही है ।सूखी बेकार घासफूस की तरह जलायी जा रही है। कब तक लडकियां को आग के हवाले दहेज लोभी करते रहेगे ।

अवध–राक्षस कैसे जला देते है । अपने बेटे बेटियो को जलाकर क्यो नही देखते ।

सानू–किसको कौन जला दिया ।

मिसेजशोभा–बेटी तू जा कुछ खा पी ले । थकी मांदी होगी । कालेज से आ रही है ना ।
सानू– मां तुम सुनीता की मौत की खबर मुझसे छिपा रही हो न । ठीक है मैं नही पूछती हूं पर मुझे पता चल गया है अखबार से सब कुछ । खैर मां मैं आ तो कालेज से ही रहूं पर अब जा रही हूं सहेली के बर्थडे में। कुछ ही दिनों में उसका भी ब्याह होने वाला है । उसके साथ भी ऐसा हो गया तो ।
किरन मैडम–बेटी ऐसा हादशा दुश्मन की बेटी के साथ न हो । सभी लडकियां दहेज की आग से दूर रहे ।
सानू– आण्टी ब्याह के बाद तो लडकी एकदम से परायी हो जाती है ना ।बेबस हो जाती है सास ससुर ननद और पति के कुटुम्ब का अत्याचार सहने को । यही तो सुनीता के साथ भी हुआ और ना जाने किस किस के साथ होगा । किसी भी लडकी के साथ हो सकता है मेरे साथ भी.............
मिसेजशोभा का कलेजा मुंह को आ गया । वे तडप उठी । उनके मुंह से निकल पडा भगवान रक्षा करना मेरी बीटिया का। वह बोली किरन अब तो मेरा डर बढता जा रहा है बीटिया सयानी हो गयी है । दहेज दानव का घिनौना रूप दिन पर दिन डरावना होता जा रहा है। बेटिया की असमय मौत का कारण दहेज ही बन रहा है ।

किरनमैडम–हां दीदी रोज रोज जो कुछ हो रहा है उससे डर तो बढ ही रहा है ।बेटियों के भ्रूण की हत्या हो रही है । कुछ बच भी जाती है तो ससुराल में जला दी जा रही है । कुछ ही सौभाग्यशाली है जो निश्चिन्त जीवन बसर कर पा रही है । अगर ऐसा ही लडकियों के साथ अत्याचार होता रहा तो औरत जात बचेगी नही ।
मिसेजशोभा–देखो औरत जात ही औरत की दुश्मन बन गयी है । सुनीता का पति तो सरकारी दौर पर था ।वह तो सुनीता को बहुत चाहता था । घर में सास ननद और ससुर थे । ससुर भी मारना नही चाह रहा था पर घरवाली के दबाव में वह भी आ गया । वह तो सुनीता को सोने का अण्डा देने वाली मुर्गी समझ रहा था । उसकी सास तो एक दिन में ही सारे सोना निकलवा लेना चाह रही थी । सुनीता जब पहली बार ससुराल से मायके को रवाना हुई थी तब बारी बारी से उसकी सास और ननद ने उसके कान में कहा था कि पांच तोला सोना और कार खरीदने के लिये रूपया लेकर आना वरना ....
किरनमैडम–वरना का मतलब तो सुनीता की मौत से ही था । बेचारी बेकसूर दहेज ही आग में जला दी गयी।
मिसेजशोभा– सुनीता की मौत ने तो खून के आंसू दे ही दिया सानू की बाते आत्मा को झकझोर दिया ।

किरन मैडम–हां दीदी हर बेटी का मां बाप खौफनाक स्थिति से गुजर रहा है । बीटिया को अच्छा घर वर मिल जाये तो समझो गंगा नहा लिये ।
मिसेज शोभा – नववधुओं के रोज रोज की जलाने की खबर ने तो लडकियों को अन्दर से तोड दिया है । सुना नही सानू क्या कह कर गयी है । मुझे तो बहुत डर लग रहा है बीटिया के ब्याह को लेकर ।
किरन मैडम–सानू के ब्याह में तो वक्त है मेरी रानू तो ब्याह करने लायक हो गयी है । लडके वाले तो ऐसे दाम लगा रहे है जैसे बकर कसाई । दूल्हे की बाजार तो बहुत गरम हो गयी है । बेटी के लिये घरद्वार बेंचकर दूल्हा खरीद भी ले ,इसके बाद भी तो बीटिया के सलामती की कोई गारण्टी नही है । बेटी के मां बाप है तो दूल्हा तो ढूढना ही पडेगा पर दीदी दहेज मांगने वाले के घर अपनी बेटी नही दूंगी भले ही दूसरी जाति के गरीब लडके का रानू का हाथ दे दूंगी पर अपनी जाति के दहेज लोभी के घर ब्याह न करने की कसम खाती हूं । दीदी अब जा रही हूं रानू कालेज से आ गयी होगी कहकर किरन मैडम घर चली गयी ।
मिसेज शोभा बैठे बैठे सानू बीटिया के ब्याह और ब्याह के बाद की चिन्ता में इतनी दुखी हो गयी कि उनकी आंखे सावन भादो हो गयी । अंधेरा पसरते पसरते सानू भी आ

गयी । मां को ऐसी हालत में देखकर वह परेशान हो गया । गाडी खडी की और भागकर मां के पास गयी । सानू मां के आंसू पोछते हुए बोली मां क्या हो गया क्यों ऐसी हालत में बैठी हो ।

मिसेज शोभा–बेटी मुझे क्या होगा । मैं ठीक तो हूं ।

सानू– मां आंखों से बहता तर तर आसूं झूठा तो नही हो सकता ।

मिसेजशोभा– नही बेटी मैं रो नही नही रही आंख में कुछ चला गया है मिर्च जैसा ।यही बैठे बैठे तुम्हारी और अवध बेटवा की राह देख रही थी ।वह भी अभी तक टयूशन से नही आया ।

सानू– अवध भी आजायेगा । आंसू झूठ बोलकर क्यो छिपा रही हो मां । आसूं छुपाने से नही छुपते । मेरे ब्याह और ब्याह के बाद की फिक्र हो रही है ।

मिसेज शोभा– बेटी सब छोड । ये तो बता इतनी देर कैसे हो गयी ।

सानू– सतीश अंकल के घर जमा भीड को देखकर मै भी चली गयी ।अंकल आण्टी को तो होश ही नही है । राजू का भी रो रोकर बुरा हाल हो गया है । अंकल के घर में मौजूद सभी लोगो के आंखो से आंसू बह रहा था ।मां एक बात अच्छी हुई है।

मिसेजशोभा – वह क्या बेटी ?

सानू–पापियों को सजा मिल गयी ।
मिसेजशोभा–इतना जल्दी । अभी तो सप्ताह भर भी नही हुए । केस का फैसला तो कई सालो में होते है ।
सानू–हां मां यही तो सकून देने वाली बात है । पुलिस और न्यायालय ने ऐतिहासिक काम किया है । इससे लोगो में पुलिस और न्यायालय के प्रति भरोसा और बढेगा ।
मिसेज शोभा– पापियों को फांसी तो हुई नही होगी ।
सानू– मां हुई है ना सुनीता की सास को।
मिसेजशोभा– सुनीता का पति तो बेचारा निर्दोष था गृहस्ती बसने से पहले ही उसके मां बाप और बहन ने तोड दिया वह तो किसी सजा का हकदार नही था पर उसकी ननद और ससुर का क्या हुआ ।
सानू–आजन्म कारावास ।
मिसेज–फैसला तो अच्छा हुआ काश इस फैसले से दहेज लोभी सबक पाते । बहू पर अत्याचार करने से पहले हजार बार सोचते ।
सानू– जरूर सोचेगे ।सबसे पहले तो नारी को आग में झोकने वाली नारी को सोचना होगा । नारी ही नारी की दुश्मन साबित हो रही है । तभी नारी संरक्षण के सारे कानून कायदे ताख पर रखे रह जाते है ।
मिसेजशोभा–आजकल की शिक्षित लडकियों को आगे आना होगा । दहेज दानव के बढते खूनी पंजे को रोकने के लिये

और लडकियों की दिन प्रतिदिन घटती जनसंख्या के प्रति औरतो को जागरूक करना होगा । समाज और शासन के सहयोग के साथ दहेज लोभियों को कठघरे में लाने का जिम्मा भी उठाना होगा । लडकियों को संगठन बनाकर दहेज के खिलाफ लडना होगा । संगठन से हर अविवाहित और विवाहित लडकी को जुडना होगा तभी औरत जात सुरक्षित रह पायेगी ।

सानू- हां मां अब देर नही ऐसे भी संगठन बनेगे और दहेज लोभियों की नाक में नकेल कसेगे । काश मैं देश की प्रधानमन्त्री या राष्ट्रपति होती तो दहेज दानव का रास्ता हमेशा के लिये बन्द कर देती ।

मिसेजशोभा–अच्छा बता क्या करती ।

सानू–मैं विवाह विभाग बनाती और सभी लडके लडकियों का रजिस्ट्रेशन करवाती । ब्याह की उम्र और पांव पर खडा होने पर जातिवाद के मन–भेद से उपर उठकर सहधर्मी और योग्य लडके लडकियों का ब्याह करवाती । बेटे बेटियों के पढाई लिखाई से लेकर ब्याह तक पूरी जिम्मेदारी सरकार के उपर डाल देती । सहधर्मी विवाह को कानूनी मान्यता प्रदान करवाती । सामाजिक और धार्मिक मान्यता दिलाने हेतु धार्मिक गुरूओं को भी राजी कर लेती ताकि हर बटी का जीवन सुरक्षित रहे और मां–बाप को हंसते जख्म से बचे रहे ।

मिसेजशोभा–काश ऐसा हो जाता, तब ना कोई दहेज मांगता और ना कोई लडकी दहेज की आग में जलती , और ना ही कोई मां बाप रोते हुए कहता कि–कब बुझेगी ये दहेज की आग ।

6–सौदा

बंशीधर की तेरहवीं तक उनके वारिस सब्र रखे रहे परन्तु तेरहवी बितते ही सब्र का बांध टूट गया । बंशीधर की दूसरी विधवा पत्नी मंथरादेवी धन सम्पति समेटने में जल्दी थी । कास्तकारी,बैंकबैलेंस से लेकर भैंस,घास–भूसा,गोबर कण्डा तक को अपने कब्जे में करने को उतावली थी । पति के मरने का कोई गम न था । गम था तो ये कि कही कोई सामान सौतेले बेटा बहू न रख ले। सौतेली मां के एकाधिकार को देखकर बंशीधर के तीनों लडके दिलेश्वर,मनेश्वर और रतेश्वर ने पंचायत बुलाना उचित समझाा । चौदहवें दिन पंचायत बुला ली गयी ।

पंचों के सामने मंथरादेवी ने अपने नाम के बैंक बैलेस और जमीन को छोडकर बाकी चल अचल सम्पति पर आधे की हिस्सेदारी पेश कर दी । मंथरादेवी की इस दावेदारी को देखकर दिलेश्वर ने आपत्ति ली ।

मंथरादेवी पंचों से मुखातिब होते हुए बोली पंचों अभी तो कास्तकारी घरद्वार और मेरे स्वर्गीय पति के नाम जमा रकम

में आधा हिस्सा चाहिये । मेरे नाम जो रकम जमीन है वह तो मेरी ही रहेगी । हां मेरे मरने के बाद ये तीनों लडके आपस में बांट सकते है। मेरे जीने का भी तो कुछ सहारा होना चाहिये ।
मंथरादेवी के एकतरफा हिस्सेदारी की बात सुनकर कानाफुंसी शुरू हो गयी । इतने में दिलेश्वर हाथ जोड कर खडा हुआ और बोला पंचों नई मां आधे की हिस्सेदारी पुख्ता कर रही है । मरने के बाद हम तीनों भाइयों में बराबर बांटने की बात कह रही है।यदि नई मां ने मेरे बाप दादा की चल अचल सम्पति अपने भाई भतीजों के नाम कर दी तो । नई मां का तो कोई भरोसा नही है पंचो।
मनेश्वर- पंचों भइया ठीक कह रहे हो ,नई मां हैण्डपाइप से पीने का पानी नही लेने देती । क्या वह हमारे लिये दौलत छोडेगी ?
रतेश्वर-हां पंचों नई मां से उम्मीद कोई उम्मीद करना खुद को धोखा देना है । बांप के मरने के पहले ही बहुत सारी धन दौलत , खेत अपने नाम लिखा ली । नई मां ही बाप की मौत की जिम्मेदार है ।
मंथरादेवी-रतेश्वर, मैं नही तुम लोग कातिल हो । इतना मोह था तो तेरे बापमुझे क्यों लाये । बाप साठ साल की उम्र में ब्याह की क्यो सूझी। मुझे लाये है तो उनकी सम्पति

पर मेरा हिस्सा तो होगा । कानून मुझे अधिकार देता है । मैं अपने अधिकार से कोई सौदा नही करूंगी ।
मनेश्वर–तुम हमारी मां बनने नही आयी हो । दौलत पर कब्जा करने आयी हो । बाप को हम लोगो से छिन ली । धीरे धीरे जमीन,नगदी और जेवर पर कब्जा कर ली । हम तीनों भाईयों के लिये कुछ तो छोडो मां । क्यो सौतेलेपन का जहर दे रही हो । अब तो बाप भी नही रहे । नई मां तुम्हारे पति से पहले वे हमारे बाप थे। तुमको आये अभी दो साल भी नही हुए सारी दौलत पर कब्जा कर ली । बाप को तुमने मार डाला भूखे दारू पिला पिलाकर। मां तुम अपने मकसद में कामयाब हो गयी । अफसर बाप तुम्हारी काले जादू को नही समझ पाये । जिन्दगी नौकरी में दूसरों का केस हल करते रहे । अपने ही केस में तुमसे हार गये नई मां ।
मंथरादेवी–मैं तो अपना धन धर्म सब कुछ छोडकर आयी थी यह सोचकर की तेरे बाप के साथ मेरे जीवन की सांझ चैन से बित जायेगी । वे तो मुझे अधजल में छोड मरे । तुम लोग उनकी मौत का ठिकरा मेरे सिर फोड रहे हो । मुझे ठगिन कह रहे हो ।
दिलेश्वर–मैं तुम्हारे पास था क्या ? न खाने का ठिकाना न पहनने का । एक झोपडी ही तो थी । यहां आते ही तिजोरी की ताली लटकाने लगी । बैंक की पासबुके छिपाने लगी ।

बाप की कमाई का हिसाब किताब रखने लगी । दो साल मे तुमने सब कुछ पर कब्जा जमा लिया । जिस दौलत को मेरी सगी मां ने नजर भर कभी नही देखा । वही मां जिसने बाप को कामयाब बनाने के लिये मेहनत मजदूरी करती थी पिताजी पढने जाते थे । मेरी मां की कमाई पर तुम नाग की तरह फन फैलाकर बैठ गयी हो । हम तीनों भाई ललचाई आंखों से देख रहे हैं । अपना हक नही पा रहे है । नोना–नटो की तरह झोपडी में रह रहे है इतनी बडी कोठी रहते हुए। यही हैं मां तेरी ममता ।
मंथरादेवी–ये कोठी किसकी है ।तुम लोग लोगो को दिखाने के लिये झोपडी में रह रहे हो ।
रतेश्वर– नई मां तुमने हमें बेघर कर दिया है । सब कुछ तो तुम्हारा होकर रह गया है । हमें तो चैन से रहने भी नही देती हो । चल अचल सभी सम्पति पर तुम्हारा ही तो कब्जा है । हम तीनों भाई तो अपने हक से बेदखल हैं ।
मनेश्वर– नई मां बाप के जीते जी लाखों की रकम अपने नाम करवा ली । सोने के आभूषण बनवा लिये । ढेर सारी रकम मायके पहुंचा दी । बाकी पर आधा हिस्सा मांग रही हो ।हम भाई लोग अपने बाप की नाजायज औलाद तो नही ? बाप की सम्पति पर हमारा भी हक बनता है की नही ?
मंथरादेवी–तुम लोग अपने बाप की नाजायज औलाद नही हो तो मैं भी कोई रखैल नही हूं । कानूनी ब्याह की हूं दिल्ली

की कचहरी में जाकर तुम्हारे बाप से । आधे के हिस्से का हक है मेरा भी।
दिलेश्वर–नई मां तुम इस परिवार में एक हिस्सेदार की हैसियत से आयी हो हम भाईयों के अरमानां का कत्ल कर हंसते जख्म देने आयी हो क्या ?
मंथरादेवी–हां ठीक समझे......
सेठू प्रधान–मंथरा भौजाई बंशीधर भइया ने तुम्हारी मांग में सिन्धुर डालकर उपकार किया है । तुम उनके बच्चों को अपना बच्चा नही मान रही हो । तुम इन लडको की मां हो । मां का फर्ज निभाना चाहिये था । तुमने ऐसा नही कर सौतेली मां के चरित्र को और भयावह बना दिया है । ये लडके तुमको मर्णिकर्णिक ले जायेगे तुम्हारी मृत देह। तुम्हारी अर्थी बंशीधर भइया के दरवाजे से उठेगी तभी स्वर्ग में जगह मिलेगी । मायके से डोली उठना अच्छा होता है अर्थी नही । तुम तो पढी लिखी हो । इसलिये तुम्हारा फर्ज और बढ जाता है पर तुमको दौलत से मोह से है । बंशीधर भइया की औलादों से नही ।
मंथरादेवी–प्रधान भइया तुम भी इन लडको का पक्ष ले रहे हो । मैं बूढी औरत कहां जाऊंगी । अरे मेरी बाकी जिन्दगी का सहारा तो दौलत ही है ना । ये लडको तो पहुंचा दिये मणिकर्णिका । ये लडके मेरा सहारा नही बन सकते है तो मेरी सौत की औलाद.........

सेठूप्रधान– तुम परिवार की भूखी नही हो क्योंकि इन लडको को तुमने पैदा नही किया है ना । बंशीधर भइया के परिवार का दुख सुख तुम्हारा दुख सुख नही है । तुमको बस बंशीधर भइया की दौलत से मोह है । भइया ने तो उपकार किया था तुम पर । वही उपकार अपराध बन रहा है । अरे गांवपुर के सभी जानते है तुम कैसे दुर्दिन काट रही थी । इस घर में आते ही महरानी बन गयी । पेट भर रोटी के लिये नस्तवान थी । वो दिन भूल गयी । अरे बंशीधर भइया के जीते जी तो बहुत जुल्म की इन लडको पर अब तो रहम खाती । उनका हिस्सा उनको दे देती । तुम्हारे पास तो तीन बेटे है किसी के साथ रहकर जीवन के बाकी दिन चैन से बिता सकती हो ।तुम दौलत के ढेर पर बैठी हो और तुम्हारी सौत तुम्हारे मृतक पति बंशीधर भइया के बेटे छोटी मोटी चीजों के लिये तरस रहे है । भइया रिटायर होकर आये थे तो पन्द्रह लाख रूपया मिला था पूरा गांव जानता है। हर महीने सात हजार पेंशन मिल रही थी । सुना है कि भइया के खाते में बस तीन लाख रूपया है। धीरे धीरे सब रूपया झंस ली । तीन लाख में से आधा और जमीन जायदाद में आधा मांग रही हो । ये कहां का न्याय है। ये तीन लडके और उनका परिवार कैसे जीवन बसर करेगा । ज्यादा होशियारी अच्छी बात नही है । अरे पिछले कर्म का फल भोग रही हो दो दो पति खा गयी । कोई बाल बच्चा

भी नही हैं तुम्हारे । इन्ही तीनो लडको को अपना लेती तो जीवन स्वर्ग बन जाता ।
रामश्रृंगार–हां प्रधान भइया बात तो लाख टके की कह रहे हो । भौजाई के पास बहुत अच्छा मौका था अगला जन्म सुधारने का पर भौजाई ने बंशीधर भइया के साथ ब्याह नही सौदा मान रही है । अरे दिलेश्वर मनेश्वर और रतेश्वर छोटे बच्चे होते तो जहर पिलाकर सारी चल अचल सम्पति पर कब्जा कर लेती । अरे भौजाई बंशीधर भइया के तीन लडके और एक लडकी भी तो है । उसका भी हिस्सा बनता है ।
मंथरादेवी–कोई लडकी नही है । दिलेश्वर से पूछो शपथ पत्र पर सभी के दस्तक है ।
रामश्रृंगार–अच्छा तो एक कांटा निकाल चुकी हो ।
रामश्रृंगार की बात सुनकर मंथरादेवी के पिताजी झुनझुनबाबा क्रोधित होकर बोले यहां तो पूरी पंचायत अफीम के नशे में मदहोश है । मंथरा बीटिया तुमको यहां न्याय नही मिलेगा ।
मंथरादेवी–पिताजी मन छोटा ना करो मैंने भी कच्ची गोलियां नही खेली है । ब्याह नही एक सौदा था जिसका गवाह दिलेश्वर भी तो है । फैसला तो मेरी मर्जी के माफिक होगा ।नही तो कोर्ट कचहरी तो है । मैं दिलेश्वर के मृतक बाप की दूसरी पत्नी हूं रखैल नही । मेरा आधे का हिस्सा है । मैं लेकर रहूंगी । जमीन जायदाद और बै।क के सभी कागजात मेरे पास है ।वह भी इन तीनों के बाप दिया है ।

सेठूप्रधान–मंथरा भौजाई बंशीधर भइया कोई वसीयत लिखकर मरे हैं क्या ?

मंथरादेवी–यही तो गलती हो गयी । वसीयत नही लिखवायी गयी । वसीयत लिखकर मरे होते तो आज ये कौअे नही मडराते मेरी मांस को नोंचने । सब कुछ मेरा होता । पंचायत की जरूरत नही पडती ।

रामश्रृंगार– सुन लिये झुनझुनबाबा । भौजाई की जिरह । बाबा ये आपकी साजिश तो नही थी , भइया को साठ साल की उम्र में ब्याह के बंधन में बंधक बनाकर जमीन जायदाद हडपने की । भईया के बार बार मना करने पर बाबा अपने अपनी पगडी भईया के पांव पर रख दिये थे । भईया ने आपकी लाज रखी और आपने धोखा दिया । भइया की और उनके पुरखों की जायदाद को हडपने का सौदा समझ लिया । मंथरा भौजाई एक मां का प्यार इन लडको को देती तो ये लडके इतने नासमझ नही है । ये लडके तो श्रवण की तरह है । तुम हो इन लडको को जहर परोसने में जरा भी कोर कसर नही छोड रही हो । झुनझुनबाबा तुम भी वादे से मुकर गये। बंशीधर भइया की दौलत के लालच में ।

झुनझुनबाबा–इन लडको ने कौन सा फर्ज निभाया ?

सेठूप्रधान–बाबा ये तीनो लडके क्या करते । अपने बाप दादा की दौलत चांदी की थाली में रखकर तुमको पेश कर देते । बाबा तुमने और तुम्हारी बेटी ने बंशीधर भइया के साथ छल

किया है । रिटायर होकर आने के बाद कभी चेन की रोटी आपकी बेटी ने नही दी बंशीधर भइया पूरा गांव जानता है।बंशीधर भइया जिन्दगी भर तो शहर में रहे रिटायर होने के बाद उनको खेती करने का चस्का लग गया था । बंजर जमीन से भी भरपूर अनाज पैदा कर रहे थे । पूरी कोठी में जो अनाज भरा है उनकी मेहनत का फल है । ये मंथरा भौजाई रोटी बिना मार डाली । दुनिया की सारी सुख सुविधा बंशीधर मंथरा भौजाई तुमको दिये पर तुमने दो जुन की भर पेट रोटी नही दी । बेचारे मर गये भूखे । हां दस रूपये की देशी दारू मंगा कर जरूर दे देती थी ताकि मर जाये जल्दी। तुम बंधन से मुक्त हो जाओ । धन दौलत लेकर दूसरा रास्ता नाप लो । बंशीधर भइया के खून पसीना से सींचा परिवार सडक पर आ जाये । मंथरा भौजाई तुम्हारे जैसा ही गोरो ने किया था । पहले तो वे एक साधारण व्यापारी बनकर आये थे फिर धीरे धीरे देश पर कब्जा कर लिये । वही तुमने किया । बंशीधर भइया से ब्याह के बहाने उनकी दौलत पर कब्जा किया है । बहुत घिनौना सौंदा किया है तुमने ।

रामश्रृगार-बंशीधर भइया लगभग दो साल भर पहले रिटायर हुए थे तब उन्हे पन्द्रह लाख रूपये मिले थे बाकी और भी पैसे मिलने वाले थे । हर महीने पेंशन मिलती थी । बैंक में मात्र तीन लाख है । बाकी रूपये कहां गये । हिसाब तो

तुमको ही देना होगा । लडको को तो तुमने पास तक फटकने नही दिया । तीन लाख मकान और खेती की जमीन में आधे की दावेदारी पेश कर रही हो ।
मंथरादेवी–आधे से कम पर तो सौदा नही होगा । चाहे बैंकबैलेश हो या जमीन जायदाद सब में आधा चाहिये ।
झुनझुनबाबा–मेरी बेटी की अभी उम्र ही क्या है चालीस साल की है । पूरी पहाड सी जिन्दगी बीटिया के सामने है गुजर बसर कैसे होगा । झुनझुनबाबा की बात काटते हुए रमरजिया मंथरादेवी की मां बोली पंचो मेरी बेटी का हिस्सा मत छीनो । विधवा की बद्दुआ खाली नही जाती ।
रतजियादेवी–क्या कह रही हो बहन बंशीधर बेटवा के मरे आज चौदह दिन हुए इस बीच तिजोरी का मुंह तुम्हारे घर की तरफ मुड गया । अनाज की गोदाम का मुंह तुम्हारे घर में अब खुलता है। बीस हजार की भैंस तुम्हारे दरवाजे पर बंध गयी । बीटिया का ब्याह की थी कि कोई सौदा । बंशीधर के मरते ही सब कुछ लूट लो । ऐसा तो न देखी थी न सुनी थी अपनी अस्सी साल की उम्र में ।
रघुनन्दन–सासुजी दमाद की दौलत से करोडपति बन रही हो ? अरे नातियों का हक क्यो छीनने पर तूली हो ?
रमरजिया–कौन नाती । दमाद के जीते जी सब नाता था उनके मरते ही सारे नाते टूट गये ।

रामश्रृंगार– जमीन जायदाद और रूपये से नही टूटा है सासुजी...............
रमरजिया–बाबू ये तो मेरी बेटी का अधिकार है ।मेरी बेटी जिसे चाहे दे । मंथरा मेरी बीटिया बंशीधर बाबू के सम्पति की असली हकदार है।
सेठूप्रधान–देखो वक्त मत गवाओं मुझे दूसरी पंचायत में जाना है । मुद्दे की बात करो ।
झुनझुनबाबा–प्रधान जी यदि फैसला आपके बस की बात न हो तो ये लोग कचहरी चले जाये । वहां दूध का दूध पानी का पानी हो जायेगा ।
मंथरादेवी–मुझे तो आधा हिस्सा चाहिये ।
सेठूप्रधान–आधा तो नही मिल सकता ।
मंथरादेवी–क्यो ?
सेठूप्रधान–मृतक बंशीधर के तीन लडके एक लडकी और पांचवी तुम वारिस हो । तुमको आधा हिसा कैसे मिल सकता है ।
मंथरादेवी –पांच नही चार है । बेटी कानूनन मर चुकी है । इस बात की पहले ही जिक्र हो चुकी है । बेटी की कानूनन मौत के गवाह दिलेश्वर भी तो हैं। एक बात का मट्ठा बनाने से कोई मतलब नही ।
सेठूप्रधान– बेटी मरी तो नही है । तीन बच्चों की मां हैं भरा पूरा परिवार है । अपने पति के साथ खुश हैं । शहर में

रहती है। आती जाती रहती है । भले ही वह हिस्सा न मांगे पर है तो हिस्सेदार ।
दिलेश्वर–ठीक है चार ही हिस्सा होगा पर नई मां आधा ले लेगी तो हम तीन भाइयों का घर परिवार कैसे चलेगा । बैंक में तीन लाख बचे है । बारह लाख रूपये मां हजम कर चुकी है । बीघा से अधिक खेत अपने नाम करा चुकी है । पंचो चार बीघा खेत ये कोठी जिस पर मां का ही कब्जा है । हम भाई लोग तो झोपडी में रह रहे हैं पूरा गांव देख ही रहा है । इसके बाद भी मां का पेट नही भर रहा है तो पंचों आप लोग हम भाइयो को जैसे कहो वैसे राजी है । बाप भी नही मेरी सगी मां सत्रह साल पहले मर चुकी है । नई मां हम भाइयों की कब्र खोद रही है । पंचों फैसला आपके हाथ में हैं । हम भाई राजी हैं पंचों के फैसले पर । पंचों नई मां से बारह लाख रूपयें और बाकी जो सम्पति छिपाकर रखी है या मायके पहुंचा दी है उसका भी खुलासा कर दें ।जानने को तो सभी जानते है पर नई मां अपने मुंह से कह तो दे ।
सेठूप्रधान–मंथरादेवी दिलेश्वर ने जो कुछ कहा हैं जायज है । हिसाब तो हिसाब है देना होगा । तभी बंटवारा होगा ।
मंथरादेवी– जो दिलेश्वर के मृतक बाप के नाम हैं उसी का हिस्सा हो सकता है । मेरे नाम है या मेरे पास जो कुछ हैं उसमें हिस्सा कैसे लगेगा । वह तो दिलेश्वर के मृतक

बाप ने जीते जी मेरे नाम कर दिये है । उस पर तो बस मेरा हक है चाहे बारह लाख हो या बीस ....
सेठूप्रधान–मंथरादेवी ध्यान से सुनो भले ही बंशीधर भइया ने तुम्हारे नाम कर दिया हैं पर तुम्हारे बाद तुम्हारी चल अचल सम्पति के मालिक यही तीनो होगे ।
मंथरादेवी– जो मेरी परवरिश करेगा वह मेरी दौलत का वारिस होगा । मैं अपने नाम की सम्पति का उपयोग करने को स्वतन्त्र हूं । कानून भी मुझे इजाजत देता हैं । अपने हिस्से की दौलत चाहे अपने बाप के नाम करूं या भाई के नाम या भतीजे के नाम कोई रोक नही सकता ।
सेठूप्रधान–यह तो अन्याय है। धोखा है । क्या इसीलिये ब्याह की थी चालीस साल की उम्र में साठ साल की उम्र वाले बंशीधर भइया से।
रामश्रृंगार–प्रधानजी ब्याह नही यह एक सौदा हैं । दौलत हडपने की घिनौनी साजिश है । आप तो फैसला सुनाओं । मानना होगी तो मंथरादेवी मान लेगी ।कचहरी जाना चाहे तो शौक से जाये । पूरा गांव तो हकीकत जान चुका है ।
सेठूप्रधान–ठीक कह रहे हो रामश्रृंगार । फैसला तो तैयार हैं । ग्राम पंचायत के सदस्यों की दस्खत करवाकर मुहर लगा कर फैसला पढकर सुना दो ।
रामश्रृंगार–प्रधान के कहे अनुसार कार्रवाई पूरी की । इसके बाद फैसला सुनाया मृतक बंशीधर की दौलत में

दिलेश्वर,मनेश्वर,रतेश्वर और उनकी सौतेली मां मंथरादेवी के बराबर के हिस्से का ।
फैसला सुनकर मंथरादेवी उसके मां बाप के चेहरे खिल उठे । वही दूसरी ओर दिलेश्वर,मनेश्वर और रतेश्वर की आंखों में आंसू माथे पर चिन्ता के बादल मडा रहे थे तीनो बेटो को रोता देखकर बंशीधर के बडे भाई कलधर उठे और तीनों को बांह में समेटते हुए बोले बेटा झुनझुनबाबा,रमरजिया देवी और उनकी बेटी मंथरादेवी के चक्रव्यूह के रहस्य को तुम्हारा अधिकारी बाप नही समझ पाया।बंशीधर को ना जाने कैसे बुढौती में ब्याह की सूझी थी जबकि दुनिया जानती है । कि बुढौती में ब्याह बर्बादी को न्यौता देना है । इसका गवाह तो इतिहास भी है । मंथरादेवी अपनी चाल में कामयाब हो गयी और तुम्हारे भाग्य में मंथरादेवी ने भर दिया मुट्‌ठी भर आग । यह ब्याह नही मंथरादेवी की साजिश थी ।

7- कन्यादान

मिस्टर रामअधार बाबू डूबते सूरज को निहार निहारकर जैसे कोई सम्भावना तलाश रहे थे । इसी बीच उनके दरवाजे पर सफेद रंग की चमचमाती कार रूकी । रामअधार बाबू बेखबर थे । कार में से उनके पुराने परिचित गिरधर बाबू अकेले निकले और कमरे में आ गये । इसके बाद भी रामअधार बाबू के कानों को भनक न पडी । मिस्टर गिरधर बाबू

मिस्टर रामअधार बाबू के पास खडे होकर बोले क्या भाई साहब जब देखो तब सोच में डूबे रहते हो । जागते हुए सपना देख रहे हो। पुष्पा भाभी से मन भर गया क्या ?
मिस्टर रामअधार बाबू चौक कर बोले कौन ?
मिस्टर गिरधर बाबू– मैं भाई साहब ?
रामअधार बाबू–आप.....बड़ भाग्य हमारे आपके दर्शन तो हो गये ।
मिस्टर गिरधर बाबू– हां .....भाई साहब डूबते सूरज में क्या तलाश रहे थे । कहते हैं डूबते सूरज को नही देखना चाहिये आप तो घुर घुर कर देख रहे थे । ये तो मैं था कही चोर घर में घुस गया होता तो ....
रामअधार– सम्भावना तलाश रहा था । हमारे घर में चोर को कागज के अलावा और क्या मिलेगा ।
गिरधरबाबू–डूबते सूरज में सम्भावना तलाश रहे थे ।
मिस्टर रामअधार बाबू– हां भाई साहब खैर छोडिये कहां से आ रहे हैं वह भी अकेले बच्चे कहां हैं । बरखा बीटिया भी इंजीनियर हो गयी हैं अपने पांव पर खडी हो गयी है । भाई साहब आपकी चिन्ता तो दूर हो गयी। उसको भी लाना था ।
मिस्टर गिरधरबाबू– चिन्ता तो कन्यादान के बाद खत्म होगी ।

रामअधार–हां बडा बोझ तो उतरना बाकी है ।खैर ये भी उतर जायेगा । भाई साहब आप तो कह रहे थे सपरिवार आये है । कहां हैं बाकी लोग ।
मिस्टर गिरधर बाबू–हां भाई साहब........बरखा बीटिया बेटा उदय,उनकी मां और पंडितजी कार में है ।
मिस्टर रामअधार–पंडितजी को लेकर कहीं जा रहे हैं क्या ?
मिस्टर गिरधरबाबू–यहीं तक आये हैं और कहीं नही जाना है ।
मिस्टर रामअधार–कर्मकाण्ड में तो मेरा विश्वास नही है । हम तो बस भगवान को मानते है । खैर आप लेकर आये है तो मैं बुलाकर लाता हूं । आप तो बैठिये ।पंडितजी तो हमारे घर का पानी तो पीयेगे नहीं ।
मिस्टर गिरधरबाबू– क्यों नही पीयेगे जमाना बदल गया है । भाई साहब आपका बेटा विजय बडा इंजीनियर बन गया है,बेटी खुशबू भी नाम रोशन कर रही है । सबसे छोटा बेटा स्वतन्त्र भी ऊंची पढाई कर रहा है । भाईसाहब अब तो अब बडे हैं । आपके सामने तो हम छोटे है । भाई साहब रूढिवादी व्यवस्था ने तथाकथित जातीय छोटे लोगों की जिन्दगी में मुट्ठी भर आग रूप बदल बदल कर भरी है । जाति से आदमी बडा नही बनता कर्म से बडा बनता है ।
मिस्टर रामअधार–भाई साहब कथनी करनी में अन्तर होता है ।

मिस्टर गिरधर बाबू- होता होगा पर मैं नही मानता ।
मिसेज पुष्पा–क्यों बहस करने लगे विजय के पापा ।भाई साहब तो अतिथि है। अतिथि तो भगवान होता है ।
मिस्टर रामअधार–भागवान कहां बहस हो रही है । कोई कोर्ट कचहरी तो नही हैं यहां । बहस तो वकीलों के बीच जज साहब के सामने होती हैं ।
मिसेज पुष्पा–जातिवाद की बीमारी एक दिन में तो खत्म होने वाली नही हैं । जातीय अभिमान में लोग खत्म करने के लिये जाति तोडो अभियान भी तो नहीं छेड रहे है ।
रामअधार–वाह रे भागवान तुम तो उपदेश देने लगी ।
मिस्टर गिरधरबाबू–भाई साहब भाभीजी ठीक कह रही है । भाभीजी जाति तोडो आन्दोलन छिडे या ना छिडे पर जातिवाद की बीमारी तो खत्म होकर रहेगी धीरे धीरे । एक दो पीढी के बाद जाति बिरादरी को नामोनिशान नही होगा । रिश्ते भी जाति के आधार पर नही कर्म और शैक्षणिक योग्यताओं को देखकर तय होगें ।
मिसेज पुष्पा–भाई साहब आप बैठिये मैं कामिनी भाभी और बच्चो को लेकर आती हूं ।
मिस्टर गिरधर बाबू–पंडितजी भी साथ है । उन्हे नही भूलना ।
मिसेज पुष्पा– पंडित जी क्यों............
मिस्टर गिरधरबाबू–काम है.........

मिसेज पुष्पा–विजय के पापा तो कभी हाथ नही दिखाये आज तक अब बुढौती में क्या दिखायेगे ?
मिस्टर रामअधार–देखो दुनिया भले बुढा कह दे पर तुम ना कहना ।
मिस्टर गिरधरबाबू–भाई सीब को भले ही पंडित का काम न हो पर मुझे तो है।
मिसेज पुष्पा– अच्छा तो आप कोई नया काम करने जा रहे हैं ।
गिरधरबाबू–वही समझ लीजिये ।
मिसेज पुष्पा–ठीक हैं पंडितजी को भी लेकर आती हूं । पुष्पा सभी को आदर के साथ लेकर अन्दर आयी और बैठने का आग्रह करते हुए बीटिया खुशबू को आवाज देने लगी ।
मिसेज कामिनी–भाभीजी विजय नही दिखायी पड रहा है ।
मिसेज पुष्पा–कम्प्यूटर पर कुछ कर रहा होगा ।
मिसेज कामिनी–विजय बेटा बरखा के बचपन का दोस्त है । देखो कितने जल्दी सयाने हो गये । ब्याह गौने की उम्र के हो गये ।
मिसेजपुष्पा–समय को नही बांधा जा सकता भाभी जी ....
मिसेजकामिनी– ठीक कह रही हो भाभीजी । बरखा ओर उदय नन्हे नन्हे थे तो भाई साहब नहलाकर खूब तेल मालिश करते थे दोनो की धूप में बिठाकर ।

मिसेजकामिनी–याद है ।वही बच्चे अब कितने बडे हो गये । बरखा और विजय इंजीनियर बन गये । दोनो को साथ देकर मन बहुत खुश हो जाता है ।

मिस्टर रामअधार–अरे विजय देखो अंकल आण्टी आये है साथ में बरखा और उदय भी हैं । बाद में काम कर लेना । सचमुच कोई काम कर रहे हो या गेम खेल रहे हो । बाहर आ जाओ । अंकल आण्टी का पैर तो छू लो........

मिसेजपुष्पा– अपने बचपन में तो ऐसी कोई सुविधा थी ही नही । बेटा बच्चा तो है नही । समझदार है । बड़ा इंजीनियर है ।

मिस्टर रामअधार– बच्चा कितना बड़ा क्यों न बन जाये मां बाप के लिये बच्चा ही होता है । बच्चे की तरक्की ही तो हर मां बाप का सपना होता है ।

विजय और खुशबू भाई बहन साथ साथ आये सभी के पांव छुये । विजय एक तरफ कुर्सी लेकर बैठ गया । खुशबू मिस्टर गिरधर से मुखातिब होते हुए बोली क्या अंकल आप भी हम बच्चों को भूल जाते हो ।

मिस्टर गिरधर–कैसे भूल जाता हूं । देखो न पूरा कुनबा लेकर तो आया हूं । साथ में पंडितजी भी है ।

खुशबू–बरखा के भी दर्शन दुर्लभ हो गये है। बचपन ही ठीक था । ना कोई चिन्ता ना फिकर । महीने में तो एकाध बार हम बच्चे भी मिल जाते थे । अब तो सब अपनी अपनी

जिम्मेदारी सम्भालने में लगे है । बरखा भी इंजीनियर बन गयी । इयको भी फुर्सत नही रही अब ....
बरखा– हां दीदी ठीक कह रही हो । अब जिम्मेदारी का एहसास होने लगा है ।
मिसेज कामिनी – असली जिम्मेदरी तो अभी आनी बाकी है ।
बरखा– तुम भी मम्मी कहते हुए मुस्करा कर चेहरा घुमा ली......
मिसेजपुष्पा–अरे अभी तो बरखा के साल दो साल में दर्शन भी हो जाते हैं । ब्याह होने के बाद विदेश बस गयी तो सपना हो जायेगी । कामिनी भाभी बरखा का ब्याह ऐसी जगह करना की मुलाकात तो आसानी से होती रहे ना वीजा का झंझट हो ना दूसरे अन्य खुशबू के लिये भी ऐसे ही सोच रही हूं ।
मिस्टर गिरधर–बरखा तो कभी सपना नही होगी । इसकी तो गारण्टी मैं लेता हूं ।
मिसेजपुष्पा– काफी देर हो गयी चाय नाश्ता तो कुछ बना लें...
खुशबूं– मम्मी मै भी आपका हाथ बंटाती हूं ....
बरखा– दीदी मै। आपका हाथ बंटाती हूं ......
खुशबू– तुम बैठो बरखा मैं कर लूंगी । तुम मेहमान हो । बडी इंजीनियर हो चूल्ह चौके का काम तुमसे नही होगा ।

बरखा– दीदी मुझे भी तो कुछ सीखाओं ....
विजय–अरे वाह इंजीनियर साहिबा को अभी सीखना बाकी है । चार साल की इंजीनियरिंग की पढाई दो साल की पक्की नौकरी इसके बाद भी सीखना है ।
मिसेजकामिनी– बेटी गृहस्ती के गुण तो सीखने ही पडते है । चाहे कितनी ही पढाई कोई क्यो न कर ले ।
बरखा–सुने इंजीनियर साहब मम्भी क्या कह रही है कहते हुए बरखा खुशबू के साथ में कीचन में चली गयी ।
पंडितजी–गिरधर बाबू हम चाय नाश्ता नही करने आये है ।
मिस्टर गिरधर–पंडितजी इस घर में अतिथि देवता होता है । यह परम्परा अभी यहां तो कायम है । भले ही आपको दूसरी जगह नही देखने को मिलती हो ।
पंडितजी–हमे तो नहीपीना है ।
मिस्टर गिरधर– पीना होगा पंडितजी........
पंडितजी–यजमान हमें जातिपांति में अब विश्वास नही है । हम तो सम्मान के भूखे हो गये है ।इतिहास में कुछ गलतियां हुई हैं उसी प्रायश्चित कर रहा हूं । पुरखों की गलतियों के लिये क्षमा मांगता फिरता हूं । यजमान हम किसी काम से यहां आये हुए है । काम की बात क्यो नही करते ।
मिस्टरगिरधर–पंडितजी सब तो देख रहे है । क्या ये सब काम नही हो रहा है ।

पंडितजी–सब तो मंगल ही मंगल है यहां.....देखो बरखा केसे घुलमिल गयी आण्टी और अपनी खुशबू दीदी के साथ । विजय भी बरखा को अच्छी तरह से जानता है । भाई साहब और हमारे परिवार की जान पहचान हुए पच्चीस साल हो गये है ।
मिसेज कामिनी–देखो बरखा कीचन सम्भालना अभी से सीखने लगी है ।
मिसटररामअधार– क्या......? बरखा से काम करवा रही हो खुशबू बीटिया अतिथि से कोई काम करवाता है क्या ?
मिस्टरगिरधर–भाई साहब अपने से क्यो अलग करते हो ।
बरखा–अंकल मुझे भी तो कुछ समझना चाहिये ना......लो अंकल मेरे हाथ की चाय पीओ......शकर बहुत मामूली सी पड गयी है गलती से ।
मिस्टर रामअधार–बरखा तुम चाय बनाकर लायी हो ....
बरखा–हां अंकल कहते हुए ओढनी से सिर ढंकने लगी ।
मिस्टरगिरधर–बरखा अंकल नही अंकल नही डैडी कहो ।
बरखा–ठभ्क है डैडी डैडी ही कहूंगी । बरखा मिस्टररामअधार को डैडी कहते हुए उनका चरण स्पर्श कर मिसेज पुष्पा का भी पैर छूने को लटकी,इतने में मिसेज पुष्पा ने बरखा को गले से लगाते हुए बोली बेटी तुत खूब तरक्की कर । अपने मां बाप का नाम रोशन कर जिस घर में जा उस घर को मंदिर बना देना । मेरी दुआयें तुम्हारे साथ है।

खुशबू–अरे वाह क्या बात है । बरखा तो सिर ढंक कर है ।
बरखा–खुशबू की तरफ देखकर मुस्करा पडी ।
मिस्टरगिरघर–भाई साहब स्वीकार करो ।
मिस्टररामअधार–किसको.......
मिसेजपुष्पा– चाय और किसको ।चाय पीओ....
मिस्टर राअधार–चाय तो पीऊंगा चाहे जितनी मीठी क्यों न हो । बरखा बीटिया ने जो बनायी हैं पहली बार ।
पंडितजी–रामअधारबाबू गिरधर बाबू बीटिया को स्वीकार करने की बात कर रहे है ।
मिस्टररामअधार–क्या......... ?
मिस्टरगिरधर–हां भाई साहब मेरी बीटिया को अपने घर की बहू बना लीजिये ।
मिस्टररामअधार–नहीं यह नही हो सकता..........
मिस्टर गिरधरमेरे पास धन दौलत की कमी नही है । जितना धन चाहे मांग लो पर मेरी बरखा को अपने घर की बहूं बना लो ।
मिस्टररामअधार–जो ब्यवस्था समाज को जहर परोस रही हो उसका पोषण मैं कैसे कर सकता हूं । मुझे दहेज एक रूपया भी नही चाहिये । मुझे तो विषमतावादी समाज का डर है । पिछले साल की ही तो बात है हत्या हो गयी थी लडके कि अर्न्तजातीय ब्याह को लेकर । जबकि लडका लडकी दोनो खुश थे । लडकी पक्ष के लोग ही लडकी की

हत्या कर लडकी को विधवा बना दिये ना......गिरधरबाबू ना.............ये ब्याह तो नही हो सकता ।
मिस्टरगिरधर– जाति और बूढे समाज की सारी दीवारे तोड दूंगा । हम बेटी के मां बाप रिश्ता लेकर आये है । पंडितजी गवाह है । हम कन्यादान करने के लिये तैयार है । आप क्यों विरोध कर रहे हैं भाई साहब.......
मिसेजकामिनी–मान जाइये भाईसाहब अब जातिपांति की लडाई कहां रही । स्वधर्मी के घर रिश्ते नही होगे तो कहां होगे ।हमारा तो बस धर्म में विश्वास है जाति में नही । विजय से बढिया दमाद हमें और कहीं नही मिल सकता । बच्चे भी इस विवाह से खुश होगे । भाई साहब जिद ना करिये मान जाइये । तभी तो जाति टूटेगी । किसी न किसी को तो आगे आना होगा ।
मिसेजपुष्पा–भाभीजी अभी जातिवाद खत्म तो नही हुआ हैं । आपके समाज के लोग जीवन नरक बना देगे । यदि बच्चों ने गलत कदम उठा लिया या आपके समाज के लिये बच्चों की जान लेने पर उतर आये तो हम बर्बाद हो जायेगे ।
मिसेजकामिनी– भाभीजी ऐसा नही होगा । हम बच्चों की शादी कोर्ट में करेगे और रिश्पेसन आलीशान होटल में देगे । आप तो तनिक भी चिन्ता मत करो । आप तो ब्याह की हामी भर दो बस........

मिस्टर गिरधर– हां भाभी कुछ नही होगा ।सभी अपनी बेटी योग लडके को सौपना चाहते हैं । यदि मैं सौंप रहा हूं तो कोई गुनाह तो नही कर रहा । मै बडी जाति का हूं मैं आपके पास आया हूं । आपका बेटा मेरी बेटी को तो भगाकर नही ले गया है ना कि कोइ्र विरोध करेगा । यदि कोइ्र करता भी हैं मैं हूं ना मुंहतोड जबाव देने के लिये । छोटी बडी जाति के भेद को मन से निकाल दीजिये । ब्याह पर अपनी हां की मुंहर लगाइये बसभाई साहब जानता हूं वंचितों को बस मुट्ठी भर भर आग ही मिली है जिससे उनका मान सम्मान और विकास सब कुछ सुलगा है । समय बदल गया है। दूरियां कम हो चुकी है । आपकी हां के बाद बच्चों की मर्जी जानेगें........अपने बच्चे कुसंस्कारित नही है कि मां बाप का कहना नही मानेगे ?हम तो उनके भले के लिये सोच रहे है ।

मिस्टररामअधार–पहले बच्चों की राय जान लो ।

मिस्टरगिरधर–ठीक है।उनकी राय जान लेते हैं ।

मिसेजकामिनी–बरखा बेटी इधर आओ ।कुछ देर हमारे पास बैठो ।

मिस्टरगिरधर–विजय को बुलाने के लिये खुशबू को भेजे ।

विजय– खुशबू दीदी के साथ अपना काम रोक कर आ गया ।

मिस्टरगिरधर–विजय बेटा आप बरखा के सामने बैठो...........

विजय–क्या........ ?

मिस्टरगिरधर– बैठो तो सही.......

विजय–अंकल थोडा जल्दी बोलिये क्या बात है । मैं काम बीच में छोडकर आया हूं । इन्टरनेट चालू है ।

मिस्टरगिरधर–जिस काम के लिये मै आप ओर बरख को बैठाया हूं उससे बड़ा तो कोई काम हो ही नही सकता ।

विजय–कौन सा काम है अंकल ऐसा ?

मिस्टर गिरधर– बरखा से ब्याह करोगे ना । बेटा नही ना करना....

विजय–बरखा से ब्याह के बारे में तो कभी सोचा ही न था। खैर बरखा से पहले पूछ लीजिये । वह क्या चाहती है ।

मिसेज कामिनी– विजय बेटा बरखा तुम्हारे सामने है तुम पूछ लो ।

विजय–इंजीनियर मैडम आर यू एग्री टु मैरी विथ मी ....

बरखा– एस इंजीनियर सर ।

पंडितजी–सुन लिया यजमानों लडकी लडका दोनो राजी है।अब तो समधि–समधि और समधन–समधन गले मिल लो । सारे गुण मिल गये है बस एक गुण छोडकर । ब्याह बहुत सफल होगा । वर–बधू जीवन में बहुत तरक्की करेगे । अब देर किस बात की चट मंगनी पट ब्याह कर दो ।ऐसे आज्ञाकारी बच्चे तो हमने देखे ही नही थे । आज मेरा भी

जीवन धन्य होगा ।अभी फेरे दिलवा देता हूं पर दक्षिणा पूरा लूंगा........
मिस्टररामअधार–लड़का –लड़की दोनो राजी है तो मुझे भी अब कोई आपत्ति नही हैं । बरखा बीटिया की मर्जी जानना बहुत जरूरी था । बच्चों को तो जीवन साथ साथ बिताना है ।
पंडितजी–ये बच्चे जिन्दगी के हर सफर में सफल होगे । कुण्डली मिलाने की कोइ्र जरूरत नही है अब । बहुत अच्छा मुर्हुत है चाहो तो अभी फेरे दिलवा सकते है ।
मिस्टरगिरधर–पंडितजी फेरे तो बाद में होगे पहले रिंग सेरेमनी का कार्यक्रम शुभ मुर्हुत में सम्पन्न करा दीजिये ।
मिसेजकामिनी–हां पंडितजी ....
मिस्टरगिरधर–दो अंगूठी निकाले और पंडितजी के हाथ पर रखते हुए बोले पंडितजी इन्हें मन्त्रोचारित कर रिंग सेरेमनी का कार्यक्रम विधिवत् सम्पन्न कराइ्ये ।
पंडितजी के घण्टे भर के मन्त्रोचारण के बाद पंडित विजय और बरखा को एक एक अूंगठी दिये और मन्त्रोचारण के साथ एक दूसरे को पहनाने के लिये बोले । विजय और बरखा एक दूसरे को अूंगूठी पहनाये ।
मिस्टरगिरधर–विजय बेटा अब ये बरखारानी तुम्हारी महारानी बन गयी हैं । मुझे यकीन है की इनके जीवन के साथ हमारा भी जीवन धन्य हो गया तुम जैसे दमाद पाकर ।

बेटा ये बरखारानी बहुत सयानी है । मुट्ठी में रखना । अपने बाप को बहुत चकमा देती थी ।रोटी मैं अपने हाथ से खिलाता था । बेटा बडे लाड़ प्यार से पली है । खैर आप लोग तो सब कुछ जानते है । फिर भी बाप होने के नाते इतना तो कहूंगा ही की मेरी बरखा के आखों में आसूं कभी न आने पाये । होठ पर हमेशा मुस्कान बनी रहे ।
मिसेजपुष्पा–भाई साहब और भाभीजी बरखा की तनिक चिन्ता ना करना ।हमारे परिवार का चिराग हो गयी है । विजय और बरखा देखना दोनो परिवार के नाम को रोशन कर देगें । सामाजिक हंसते जख्म पर समानता का मल्हम लगेगा, दुनिया मिशाल दे देकर ना थकेगी ।
मिस्टर–हां समधनजी................
बरखा–पापा अब बस करो ।क्यों रूलाना चाहते हैं ।
मिस्टरगिरधर–बेटी तू विजय की अमानत थी । उसकी हो गयी । सच मेरा जीवन सफल हो गया ।अब तो मैं चैन से मर सकता हूं । कहते हुए आखें मसलने लगे ।
मिसेजकामिनी– हां बेटी मेरी बरसो की तपस्या सफल हो गयी । तू सदा खुश रहे यही दुआ है । तू तो परायी थी ही तेरे पापा ठीक कह रहे है । हर लड़की परायी होती है । उसका बाप एक दिन कन्यादान करता हैं । डोली उठती है ।
मिस्टरगिरधर–कन्यादान और डोली उठने में सप्ताह भर अैर लगेगा। सप्ताह भर के अन्दर विजय और बरखा का

अर्न्तजातीय विवाह विधिवत् सम्पन्न हो गया । मिस्टरगिरधर बेटी का कन्यादान कर समधि मि.रामअधार और समधन मिसेज पुष्पा और खुद पति–पत्नि चारो धाम की यात्रा पर निकल पडे ।

8–घरोही

कुतरीदेवी–बेटा सुर्तीलाल तुम्हारी घरोही सांप बिच्छू की स्थायी निवास हो गयी है । कुछ लोग तो भूतहाघर कहने लगे है ।आसपास वाले का तो अतिक्रमण भी शुरू हो गया है ।
सुर्तीलाल–काकी ज्रगह की तंगी की वजह से बाप दादा की घरोही छोड़कर दूर आकर बस गया रहले लगा ताकि भाईयों के लिये घर बनाने की जगह बनी रहे । पिताजी ना जाने कौन से परदेस चले गये कि लौट कर आये । दंबगो ने छल बल के भरोसे सारी खेती की जमीन हड़प लिये ।बीसा भर घरोही थी उस पर भी नजर आ टिकी है ।क्या करूं काकी ।
कुतरीदेवी–तेरा दद्र समझती हूं । तेरा बाप को दबंगो ने देश निकाला दे दिया। पखण्डी लेखपाल ने सारी जमीन लिप पोत दी । पखण्डी ने तुम्हारे बाप का जीना मुश्किल कर दिया था ।बेचारे अत्याचारियों के खौंफ से गांव छोड़ दिये फिर कभी ना लौटे ।
सुर्तीलाल–काकी पुराने घाव ना खुरच । घरोही के बारे में कुछ कह रही थी ।

कुतरीदेवी–बेटा तू कहता तो तुम्हारी घरोही की खाली जमीन पर गोबर पाथ लिया करती । परिवार की जमीन पर दूसरे कब्जा कर रहे है । देखा नही जाता । तुम्हारी घरोी की चिन्ता मुझे सता रही है । बेटा मैं नही चाहती की कोई कब्जा करे । अगर मेरी बात अच्छी लगे तो मुझे गोबर पाथने भर की जगह दे दो ।
सुर्तीलाल–काका घरोही तो मां बाप की निशानी है । जन्मभूमि तो जान से प्यारी होती है कैसे दे दूं ।
कुतरीदेवी–मैं एकदम से थोड़े ही मांग रही हूं । बस गोबर पाथने भर को मांग रही हूं इससे तुम्हारी घरोही की रखवाली हो जायेगी । अगर ऐसा ही रहा तो एक दिन सब आसपास वाले कब्जा कर लेगे हाथ मलते रह जाओगे ।
सुर्तीलाल–कैसे कोई हड़प लेगा चार नीम के पेड़ मां बाप की यादे है ।
कुतरीदेवी–बेटा देख तेरे भले की सोच रही हूं घरोही का तेरे पास कोई कागज तो नही है ।मैं पूरी देखभाल करूंगी तनिका चिन्ता ना करना । किसी को भर आंख देखने तक नहीं दूंगी ।बस मुझे गोबर पाथने और गोरू चउवा बांधने की इजाजत दे दो बेटा सुर्तीलाल । मान जा मेरी बात ।बाप दादा की इतनी बड़ी खेतीबारी चली गयी बीसा भर घरोही है वह भी कोई किसी दिन हड़प लेगा ।

सुर्तीलाल–काका डर लग रही है । मां बाप आत्मा उसी घरोही में बसी होगी । कैसे तुमको सौंप दूं ।
कुतरीदेवी–बेटा तेरी घरोही तेरी रहेगी । हमें कब्जा नही करना है । मैं तो बस इतना चाहती हूं कि तुम्हारे बापदादा की निशानी बची रहे ।
सुर्तीलाल–काकी गोबर पाथने में गोरूचउवा बांधने में कोई दिक्कत नही है पर तेरे बेटो ं की नियति में खोट आ गयी तो ।काकी चार बीसा जीमन है घरोही की ।
कुतरीदेवी–ना बेटा ना मेरे बेटे मेरी जबान कभी नही काटेगे ।
सुर्तीलाल–काकी खून के रिश्ते की हो देखना विश्वास नही तोड़ना ।
कुतरीदेवी–यकीन कर बेटा ।खून के रिश्ते की छाती में भाला घोपकर क्या चैन से मर सकूगी ।बेटा मुझे नरक जाने का कोई इरादा नही है नही तुम्हारी घरोही हड़पने को । परिवार को इसलिये तुमसे अपने मन की बात कह दी । देना ना देना तुम्हारी मर्जी घरोही तो तुम्हारी है ।
सुर्तीलाल–तेरी जबान का विश्वास तो मैं कर लूंगा पर तेरे बेटे तेरी जबान काट दिये तो ।
कुतरीदेवी–बेटी ऐसी नौबत नही आयेगी ।मैतुम्हारी मुट्ठी में आग नही भरूंगी नेकी के बदले ।

सुर्तीलाल–पाथ ले गोबर बांध ले गोरू चउवा पर काकी नियति खराब नही करना । अगर नियति खराब की तो मेरी घरोही पर कोई सुख से नही रह सकेगा । एक गरीब का ब्रहम मुहुर्त में कहा गया वाक्य खाली नही जायेगा ।
कुतरीदेवी–हां बेटा जानती हूं आजकल तुम्हारी जबान पर ब्रहमा बैठ्ते है । तुम्हारी विश्वास नही टूटेगा ।
सुर्तीलाल–विश्वास तोड़ने वाले हमेश तकलीफ में रहते है । यहां तक की दीया बत्ती करने वाले नही बचते काकी तू तो जानती है इतिहास भी गवाह है । जा तुमको गोबर पाथने भर के लिये घरोही का उपयोग कर काकी ।
कुतरीदेवी–सुखी रह बेटवा कहते हुए घर गयी । आसपास वालों को सुनाते हुए दूर से आवाज लगाते हुए बोला ला धोखू बेटा फरसा सुर्तीलाल की घरोही के सामने का घासफूस सांफ कर दे कल से यही गोबर पाथना है । गोरूचउवा भी यही बांधेगे ।
धोखू– क्या कह रही हो माई सुर्तीलाल भईया गोबर पाथने देगे क्या ?
कुतरीदेवी–हां क्यों नही घण्टा भर से तो सिफारिस कर रही थी सुर्तीलाल की । मानता नही तो क्या करता ।ऐसी घड़ियाली आंसू रोयी हूं कि उसका दिल पसीज गया है ।एक दिन ये घरोही अपनी होगी धोखू ।ाले ही खून बहाना पड़े ।
धोख–माई भइया की घरोही अपनी कैसे होगी ।

कुतरीदेवी–चुपकर मूरख कोई सुन लेगा । घासफूस काटकर साफ कर और कचरा सुर्तीलाल की बंसवारी में डाल दे। बंसवारी को भी कब्जे में एक दिन लेना है ।

धोखू–मां तू तो अपनी मोहरे चलती रहना हमे तो झूला डालने के लिये नीम का पेड़ मिल गया । नागपंचमी के दिन यही झूला डालूंगा । सुर्तीलाल भइया के बच्चों को भी लाकर झूलाऊंगा ।

कुतरीदेवी–जो करना दिल खोलकर करना ।अब तो तुमको करना बाकी है । मुझे जो करना था कर दी ।अभी तो मेरा हाथ बंटाओ । फरसा से जमीन जमीन छिल कर बरोबर कर दो । मैं खटिया डालने के लिये गोबर डाल देती हूं । दो घण्टे भर में तो कुतरीदेवी ने बिल्कुल साफ कर दी ।

मां का हाथ मशीन की तरह चलता देखकर धोखू बोला सब काम आज कर डालोगी क्या माई । कुछ कल के लिये भी तो छोड दे । मैं तो थक गया हूं ।

कुतरीदेवी–कल सुर्तीलाल बदल गया तो । साफ सफाई हो गयी चार खांची घूर में से गोबर उठाकर ला बेटा आज कुछ उपले बनाकर खड़ा कर देती हूं ।

धोखू–ठीक है माई जैसा कहो वैसा करूंगा ।

कुतरीदेवी ने शाम होते होते गोबर पाथकर उपले भी खड़े कर लिये ।दूसरे दिन से तो आसपास वालों का आनाजाना बन्द करने लगी जैसे सुतीध्लाल की घरोही उसने खरीद ली

हो ।आसपास वालो को कुतरीदेवी का नियति में खामी दिखी ।हर आदमी कुतरीदेवी से पूछता क्या सुर्तीलाल ने घरोही तुमको दे दी ।
कुतरीदेवी– हंसहंसकर हां में जबाब देती ।
कुतरीदेवी आसपास वालों का सवालो से वह तंग आकर रात के अंधियारे में हैरान परेशान का स्वांग रचकर सुर्तीलाल के पास पहुंची ।
सुर्तीलाल बोला क्या हुआ काकी किसी से झगड़ा करके आ रही हो ।
कुतरीदेवी–हां बेटा देखो हरहिया और उसके परिवार के लोग मारने के लिये दौड़ा रहे है बीच घरोही से रास्ता मांग रहे है ।
सुर्तीलाल–काकी बीच घरोही से रास्ता कैसे दे सकते है ।बाप दादा की निशानी किसी को कैसे हड़पने दूंगा ।
कुतरीदेवी– बेटा तू चिन्ता ना कर किसी की दाल नही गलने दूंगी तू तो बस चार छः बासं मुझे दे दे। बांस का पैसा भले ही ले लेना । मैं दे दूंगी फोकट में नही मांग रही हूं सुर्तीलाल ।बाउण्डरी बना देती हूं। हरमजादो का रास्ता बन्द कर देती हूं ।देखती हूं कौन क्या करता है । अरे राहजनी तो नही मची है कि कोई किसी की घरोही पर जर्बदस्ती कब्जा कर लेगा ।

सुर्तीलाल–काकी ऐसे कैसे हो सकता है कि मैं बीच घरोही में से रास्ता दे दूं ।
कुतरीदेवी–बेटा तू चिन्ता ना कर तेरी घरोही की ओर कोइ आंख उठाकर मेरे जीते जी देख भी नही सकता है ।
सुर्तीलाल–चल देखता हूं कौन मेरी घरोही के बीच से रास्ता मांगता है ।
कुतरीदेवी–ना बेटा तू ना चल तू तो वेसे ही मुसीबत का मारा है । मैं देख लूंगी । तू तो बस कुछ बांस दे दे ।
सुर्तीलाल–जा काकी बंसवारी से जितना बांस लगे बाउण्डरी में काट ले । काकी अकेला आदमी किस किस से झगड़ा करूंगा ।
कुतरीदेवी–बेटा झगड़ा लड़ाई से कुछ मिला है । किसी के बाप की जमीन तो है नही कि जो मुंह उठाकर आये तुम उसे दे दो ।
सुर्तीलाल–जा काकी मेरी बंसवारी से बांस काटकर कर लो बाउण्डरी । कुछ नीम के पौधे लगाकर आया हूं` भी बंच जायेगे ।बकरी नही खायेगी बाउण्डरी हो जाने से ।
कुतरीदेवी–बाउण्डरी हो जाने से उपले भी उधमी बच्चे नही तोड़ेगे । ओसाई मड़ाई का काम भी कर लिया करूंगी ।
सुर्तीलाल–ठीक है काकी कर लेना ।
धीरे धीरे दस साल बित गये । कुतरीदेवी का बेटा धोखू बालबच्चेदार हो गया । कुतरीदेवी के मन में पाप घर कर

गया वह एक दिन गोधूलि बेला में रोनी सूरत बनाकर सुर्तीलाल के घर गयी और बोली बेटा एक मंड़ई डालने की इजाजत दे दो जब तुमको जरूरत होगी तो हटा लूंगी ।
सुर्तीलाल –काकी मेरे भी बाल बच्चे है चार भाईयों का परिवार है आज बाहर हे कल आयेगे तो उनको भी तो जरूरत होगी घरद्वार की । कैसे मंड़ई रखने दूं । ना काकी ना मंड़ई तो रखने की बात ना करो ।
कुतरीदेवी गरज कर बोली मंड़ई तो डालकर रहूंगी ।देखती हूं कैसे रोकता है ।
सुर्तीलाल–काकी तू क्या कह रही है मेरे बाप दादा की विरासत तो यही घरोही बची है । उस पर भी तुम जबरिया कब्जा करने की कह रही हो ।काकी घरोही तो हमारे लिये देवस्थान के बराबर है । तू हड़पना चाह रही हो । इसके लिये तो मेरी लाश पर से तुमको गुजरना होगा ।
कुतरीदेवी–सुर्तिया जरूरत पड़ी तो वह भी कर सकती हूं ।घरोही पर मेरा कब्जा है पूरी बस्ती जानती है जोर जोर से चिल्ला चिल्लाकर कहने लगी ।
सुर्तीलाल– काकी मेरे बाप दादा की आखिरी निशानी पर तेरी गिध्द नजर पड़ गयी ।काकी मेरी यकीन को ना तोड़ मैने तेरे उपर विश्वास किया तू धोखा दे रही है ।
सुर्तीलाल की बात सुनते ही कुतरीदेवी झूठमूठ में जोर जोर से रोरोकर कहने लगी देखो बस्ती वालो सुर्तीलाल मुझे

बेइज्जत कर रहा है । मेरी साड़ी फाड़ रहा है । झूठमूठ में बखेड़ा खड़ाकर रोते हुये अपने घर की ओर भागने लगी ।बस्ती वालो कुतरीदेवी की करतूत पर थू–थू कर रहे थे । दूसरे दिन सुबह अच्छे,कच्छे,सन्पति,जीवा,घिसुन जैसे और कुछ बदमाश किस्म को लेकर सुर्तीलाल की बांस की खूंटी से ढेर सारे बांस काटी और सुर्तीलाल की घरोही पर मड़ई रखकर जबरिया कब्जे की तैयारी कर ली ।कुतरीदेवी की करतूत की भनक सुर्तीलाल को लगी वह घरोही पर गया । कुतरीदेवी उसे देखते ही हंसिया लेकर मारने दौड़ पडी । कुतरीदेवी के आदमी लाठी डण्डा लेकर मारने के लिये दौड़ पड़े । बेचारा सुर्तीलाल जान बचाकर भागने लगा । इतने में एक बड़ा से ईंट का टुकड़ा उसके सिर पर लगा और सिर से खून की धार फूट पड़ी । वह बड़ी मुश्किल से जानबचाकर घर पहुंचा। खून में लथपथ देखकर सुर्तीलाल की घरवाली और उसके बच्चे रोने लगे ।उधर कुतरीदेवी अपना ब्लाउज साड़ी फाड़कर थाने पहुंच गयी । बेचारा सुर्तीलाल गांव के प्रधान और अन्य बाबू लोगों के सामने अपने बापदादा की आखिरी निशानी पर कुतरीदेवी के जबरिया कब्जा हटवाने की गुहार लगाया पर गरीब की किसी ने न सुनी । कुतरी देवी सुर्तीलाल के खिलाफ छेड़छाड़ का केस कायम करवा दी । पुलिस भी सक्रीय हो गयी । कुतरीदेवी का कब्जा हो गया । सुर्तीलाल

की घरोही पर जबरिया कब्जा करके कुतरीदेवी मददगारों और असामाजिक तत्वों को भोज भी दे दी ।
सुर्तीलाल के सारे प्रयास विफल हो गये । प्रधान और बड़े लोग सुर्तीलाल को डांटते कहते तुम छोटे लोग तनिक तनिक बातों में लड़ने मरने लगते हो । भुगते कौन भुगतेगा । सुर्तीलाल कहता मैंने तो कुतरीकाकी को खून के रिश्ते की वजह से उसकी मदद किया था पर काकी ने तो मेरी घरोही छिनकर बेईमान के चिमटे से मुझे मुट्ठी भर आग दिया है । क्या यही न्याय है । बाबू लोग कहते जैसा किये हो भरो जब कुतरीदेवी को गोबर पाथने की इजाजत दिया था तो किसी से पूछा था । आज फंसी है तो बाबू लोग याद आये है । सुर्तीलाल कुतरीदेवी के बुने जाल में एकदम फंस गया । उसका टट्टी पेशाब के लिये भी घर से बाहर निकलना मुश्किल हो गया । कुतरीदेवी जान से मारने तक साजिश रच चुकी थी । एक दिन सुर्तीलाल हत्थे चढ़ गया । कुतरीदेवी के गुण्डे पीछे पड़ गये । वह आगे पीछे मौत को देखकर हिम्मत करके खड़ा हो गया । कुतरीदेवी सादा कागज लेकर आयी बोली ले सुर्तीलाल अंगूठा लगा नही तो जान से जायेगा या जेल में सड़ेगा पुलिस भी आती होगी ।
सुर्तीलाल बोला-काकी कैसे अपने पुरखों से गद्दारी कर दूं । कुतरीदेवी- पुलिस को आता देखकर जोर से बोली बदमाश एक तो बुरी नजर डालता है दूसरे काकी कहता है । देखो

कैसे भींगी बिल्ली सरीखे बोल रहा है । इतने में पुलिस के दो जवान आ गये । कुतरीदेवी बोली लो हवलदारसाहब मुजरिम आ गया है पकड़ में । यही बलात्कार की कोशिश करने वाला सुर्तीलाल ।साहब मेरे साथ बहुत बुरा सलूक किया मेरा ब्लाउज फाड़ दिया मैं इज्जत बचाकर भागी थी ।
सुर्तीलाल–साहब ये काकी मेरी घरोही हड़पने के लिये साजिश रची है । मां समान काकी को बुरी नजर से देख सकता हूं ।
हवलदार–क्यों बे तू सही कह रहा है ।
सुर्तीलाल–हां साहब बिल्कुल सही कह रहा हूं । कुतरीकाकी मेरी ही घरोही पर मेरी ही बंसवारी से बांस काटकर जबरिया कब्जा कर रही है ।
हवलदार–क्या ?
सुर्तीलाल–हां साहब ।
कुतरीदेवी–साहब सुर्तिया झूठ बोल रहा है । मै अपनी जमीन पर मड़ई डाली हूं । ये सारे लोग है पूछ लो साहब.....
हवलदार–वहां हाजिर एक एक से पूछे सभी ने कहां कुतरीदेवी की घरोही है ।
कुतरीदेवी– और गवाही तो नही चाहिये साहब......
हवलदार–देखो सुर्तीलाल सुलहा कर लो । क्यो जेल में सड़ना चाहते हो बलात्कार का केस है । कागज पर अंगूठा लगा दो ।

सुर्तीलाल की कोई सुनना वाला न था वह आगे खाई पीछे मौत देखकर रोते हुए अंगूठा लगाते हुये बोला कुतरीकाकी हमारी घरोही तुमको आंसू के अलावा और कुछ न देगी । बाप दादा की विरासत में छोड़ी गयी घरोही पर कुतरीदेवी का जबरिया कब्जा हो गया । हवलदार बोला कुतरीदेवी मालिकाना हक भी तुम्हारे पास है । हमे साहब के सामने हाजिर होना है । समझ गयी ।
कुतरीदेवी न हवलदार को साहब के सामने हाजिर होने की शक्ति जेब में भर मुट्ठी डाल दी । हवलदार लोग मूछ पर हाथ फेरते हुए थाने की ओर चल पड़े । तनिक भर में भीड़ छंट गयी ।
कुतरीदेवी के उपर दैवीय प्रकोप शुरू हो गये । कुतरीदेवी के बेटे धोखू की बुढौती की लाठी टूट गयी। बेटा धोखू पागल सा हो गया । कुतरीदेवी को जीते जी कीड़े पड़ गये । बहुत दुख भोगकर मरी । सुर्तीलाल भर भर अंजुरी यश बटोर रहा था । कुतरीदेवी की साजिश में शामिल वही लोग जो सुर्तीलाल के उपर लांछने लगवाये थे घरोही पर कुतरीदेवी का कब्जा करवाये थे वही लोग यह कहते नही थक रहे थे कि बेईमानी नरक के द्वार खोलती है । देखो सुर्तीलाल का ब्रहममुहर्त में कहा गया ब्रहम वाक्य खाली नही गया । नेक और सच्चे आदमी की मदद ईश्वर करते है, मतलबी आदमी भले ही बद्नियति के चिमटे से क्यों न ईमानदार,सच्चे और

कर्मठ आदमी की मुट्ठी में आग भरे उनकी तकदीर तो हंसते जख्म ही बनते है ।

9–लहू के निशान

अरे चन्दा के पापा अखबार पढ रहे या अफसोस जाहिर कर रहे हो। तुम्हारी आंखे डबडबायी हुई क्यों है । भाग्यलक्ष्मी चाय का प्याला पति ब्रहमदत्त के सामने रखते हुए बोली ।
ब्रहमदत्त–ठीक कह रही हो भागवान । आदमी कितना बदल गया है ।दौस्त पर सगे रिश्तेदारो से ज्यादा यकीन लोग करते थे । आज दोस्ती के दामन पर लहू के निशान छोड़ने लगे है आजकल के दोस्त । खुद की खुशी का कैनवास दोस्त के लहू से सजाने लगे है ।
भाग्यलक्ष्मी– क्या कह रहे हो। सबेरे सबेर तो शुभ शुभ बोलो ।
ब्रहमदत्त अखबार सरकाते हुए बोला लो खुद की आखों से देख लो । यक दरिन्दा दोस्त खुद को मृत साबित करने के लिये दोस्त की हत्या कर दी मोटे मोटे अक्षरों में छपा है और साथ में बेचारे चन्द्रशेखेर की फोटो भी छपी है ।
भाग्यलक्ष्मी–ये क्या हो गया । ये तो सतीश के रिश्ते का भाई है । दरिन्दें ने बेचारे को मार डाला । अच्छा चित्रकार था । भला इंसान था ।अपनी चन्दा को बहन मानता था सतीश की तरह । हे भगवान कसाईयों को बहुत बुरी मौत

देना । दरिन्दें बेसारे के बूढे मां बाप की लाठी तोड़ दिये उनके सपनों में आग भर दिये ।
ब्रहमदत्त–अच्छा चित्रकार था आगे चलकर देश का नाम दुनिया में रोशन करता। दोस्त की नजर लग गयी बेचारा बेमौत मारा गया ।
भाग्यलक्ष्मी–सृजनकार तो सचमुच जगत का भला चाहने वाले इंसान होते है ।दलप्रपंच से इन लोगों का कोई लेना देना नही रहता । सद्भावना में बह जाते है। खुद का भला बुरा तक नही सोचते ।
ब्रहमदत्त–भोलेपन का शिकार हो गया । किसी के ब्याह में गया था । ब्याह के जश्न के बाद उसे हास्टल पहुंचना था पर वह दोस्त के यहां चला गया । दोस्त दरिन्दा साबित हुआ । कैसा घोर कलयुग आ गया है दोस्त हत्या करके जला दिया । लाश की जगह नरकंकाल पुलिस को बरामद हुआ था । पुलिस की महीने भर की भागदौड़ के बाद तो मामले पर छाये घने कुहरे छंट पाये है ।
भाग्यलक्ष्मी– अखबार पढकर बताओ बेचारे निरपराध चन्द्रशेखर को किस वजह से मारकर जला दिये ।
ब्रहमदत्त–दरिन्दे योगेश और संजय ने शराब में जहर मिला दिया था । इसके बाद पीट पीट कर मारा था ।
भाग्यलक्ष्मी–भगवान दरिन्दों को इससे भी बुरी मौत देना । कोई दरिन्दा पकड़ाया की नही । इन्हें कड़ी से कड़ी सजा

मिलने चाहिये । आजकल तो न्याय के मंदिर में भी जाने अनजाने अन्याय होने लगा है । पैसे वाले और शातिर बच निकलते है ।

ब्रहमदत्त–दरिन्दों कानून के हाथ से बंच तो नही पायेगे क्योंकि कानून के हाथ बहुत लम्बे होते है । हां यह बात मायने रखते है कि कानून के रखवाले अपने फर्ज पर कितने खरे उतरते है । दो दरिन्दों पुलिस के हत्थे तो चढ गये है तीसरा दरिन्दा अभी पुलिस को चकमें दे रहा है ।खैर बकरे की मां कब तक खैर मनायेग एक ना एक दिन दरिन्दा पकड़ा तो जायेगा । यह तीसरा दरिन्दा खूनी संजय है जो मकान मानिक का बेटा है जिस मकान में चन्द्रशेखर की हत्या कर जलाया गया था ।

भाग्यलक्ष्मी– बेचारे का दरिन्दा क्या मार डाला ? क्या बिगाड़ा था बेचारा चन्द्रशेखर । क्यों मारा बेचारों को दरिन्दों ने रहस्य से पर्दा उठा कि नहीं अखबार पढकर बताओं ।

ब्रहमदत्त–उठ गया है ।

भाग्यलक्ष्मी– पढकर सुनाओ दिल बैठा जा रहा है ।

ब्रहमदत्त–क्या सुनाऊ ?

भाग्यलक्ष्मी– अरे किस कारण से दरिन्दों ने चन्द्रशेखर की हत्या की । बूढे मां बाप की लाठी तोड़ दी । जब हत्या के रहस्य से पर्दा उठ गया है तो सब कुछ तो छपा होगा की नही ?

ब्रहमदत्त–चन्द्रशेखर के कत्ल के पीछे औरत है । एक औरत को पाने के लिये यह कत्ल हुआ है ।

भाग्यलक्ष्मी–क्या....... ?

ब्रहमदत्त–ठीक सुनी है देवीजी औरत के लिये ।

भाग्यलक्ष्मी–पूरी बात पढ़कर बताओ ।

ब्रहमदत्त–सुनो देवीजी । अखबार में छपी खबर के अनुसार मुख्य आरोपी संजय का प्रेम सम्बन्ध एक लड़की से है जो अब शादीशुदा है । उस लड़की को पाने के लिये संजय ने यह खूनी खेल खेला ।

भाग्यलक्ष्मी– क्या ?

ब्रहमदत्त–हां संजय उस लड़की के प्रेम में पागल हो गया था । उसे पाने के लिये वह कुछ भी करने को तैयार था । वह खुद को मरा हुआ साबित करने के लिये चन्द्रशेखर को मार कर जला डला योगे और दूसरे साथी के साथ ।

भाग्यलक्ष्मी–बाप रे ऐसी साजिश ?

ब्रहमदत्त–संजय की योजना थी कि जब वह लोगों की नजरों में मरा हुआ साबित हो जायेगा तो वह उस लड़की को कही और बुला लेगा किसी को पता भी नही चलेगा कि संजय लेकर भाग गया । दुर्भाग्यवस चन्द्रशेखर दोस्त के झांसे में आ गया दोस्त संजय ने शराब में जहर मिलाकर हत्या करके पेट्रोल डालकर जला डाला ।

भाग्यलक्ष्मी–ऐसे दरिन्दें से चन्द्रशेखर की दोस्ती कैसे हो गयी । दरिन्दें न पढ रहे थे और नही हास्टल में रह रहे थे । कैसे दोस्ती हो गयी । दोस्ती के नाम पर दरिन्दों ने कालिख पोत दिया । दोस्ती जैसे पाक रिश्ते को नापाक कर दिया ।
ब्रहमदत्त–संजय और योगेश किसी मोबाईल कम्पनी में काम करते थे ।मोबाईल के काम के सिलसिले मे चन्द्रशेखर को कई बार कम्पनी जाना पड़ा इसी दौरान दोस्ती हो गयी । दोस्तों ने दोस्ती के कैनवास पर लहू पोत दिये ।
भाग्यलक्ष्मी–चन्द्रशेखर दरिन्दों के झांसे में कैसे आ गया कि ब्याह से सीधे दरिन्दों के जाल में जा फंसा ।
ब्रहमदत्त–फोन करके बुलाया था ।
भाग्यलक्ष्मी–पूरा चक्रव्यूह रच कर दरिन्दों ने फाने किया होगा ।
ब्रहमदत्त–23 जनवरी की रात में संजय ने फोन किया था । रात के नौ बजे चन्द्रशेखर पहुंच गया ।दारू में जहर मिलाकर दरिन्दों ने पिला दिया । दारू पिलाने के बाद सरिये से सिर पीट डाले । इसके बाद तीसरे माले पर ले जाकर जला डाले । कंकाल के पास संजय अपना जूता छोड़कर फरार हो गया ।
भाग्यलक्ष्मी–ऐसा क्यों किया खूनी ।

ब्रहमदत्त–ताकि लोग समझे कि संजय की हत्या हुई है और नरकंकाल उसी का है ।
भाग्यलक्ष्मी–दिल दहला देने वाली साजिश । बाप रे आदमी अपना हित साधने के लिये कैसा हैवान हो जाता है यह तो संजय ने कर दिखाया। इससे तो पुलिस भी भ्रमित हो गयी होगी ।
ब्रहमदत्त– पुलिस भ्रमित तो हुई पर कुछ दिन के लिये । जब पुलिस को पता चला कि 23 जनवरी से संजय लापता है तब पुलिस का माथा ठनका और जांच का रूख बदल गया ।पुलिस चन्द्रशेखर के रिश्तेदारों से जांच पडताल करने में जुट गयी ।
भाग्यलक्ष्मी– आगे क्या हुआ बताओं ना ।
ब्रहमदत्त–चन्द्रशेखर के भाई ने कंकाल के दांत को पहचान कर चन्द्रशेखर होने की पुष्टि कर दी ।
भाग्यलक्ष्मी–एक चित्रकार के जीवन का अन्त कर दिया दरिन्दों ने । बेचारा चित्रों में रंग रंग भरते भरते बेरंग हो गया साजिश में फंसकर वह भी दोस्ती के नाम । भगवान ऐसे दरिन्दों को ऐसी जगह मारना कि रिरिक–रिरिक कर मरें दोस्ती जैसे पवित्र रिश्ते के कैनवास पर खून पोतने वाला संजय और उसके कत्ली दोस्त ।
ब्रहमदत्त–चन्द्रशेखर को गहरे रंगों से बहुत लगाव था । वह इन्ही रंगों से कैनवास पर खेलते खेलते जिन्दगी को उकेरता

रहता था । बदकिस्मत संजय के जीवन का सारा रंग ढुल गया । जिन्दगी खत्म हो गयी बेचारे की बची है तो बस यादे ओर बूढे मां बाप की चीखे । जब हत्या के रहस्य से पर्दा उठा तो सहपाठी भी रो उठे ।

भाग्यलक्ष्मी–एक निरपराध चित्रकार के लहू से दोस्ती के केनवास को रंगकर खूनियों ने घोर अपराध किया है वह भी एक शादीशुदा ओरत के लिये ।दरिन्दे को इतना ही प्यार था तो पहले ही ब्याह कर लेना था । भोले भाले मासूम चित्रकार की जान क्यों ले लिये ?

ब्रहमदत्त– विनाश काले विपरीत बुध्दि । कुबुध्दि ने हत्यारा बना दिया । दोस्ती के नाम पर धब्बा लगा दिया । बेचारा चन्द्रशेखर एक दिन पहले ही तो जिन्दगी को बेहतरीन ढंग से कैनवास पर उकेरा था । ये देखो चन्द्रशेखर की ही पेण्टिंग छपी है अखबार में । दो चार दिन पहले ही उसकी अव्वल दर्जे की पेण्टिंग दिल्ली में बीची थी । बहुत खुश तो भर दरिन्दों ने उसकी जिन्दगी में आग भर दी और मां को गम के समन्दर में ढकेल दिया ।

भाग्यलक्ष्मी–बहुत होनहार लड़का था । चन्दा बता रही थी कि पेण्टिग बनाते समय अक्सर –तड़प तड़प के इस दिल से आह निकलती रही गाना गाता रहता था । यही तड़प उसकी पेण्टिग को जीवन प्रदान करती थी ।

ब्रहमदत्त–ले ली दरिन्दों ने एक जीवन । उजाड़ दिया एक परिवार का सपना । छिन लिये बूढे मा बाप का सहारा । भर दिया आश्रितों की मुट्ठियों में आग ।
भाग्यलक्ष्मी–खूनी तो लील गये चन्द्रशेखर को पर दोस्त के चुनाव के जल्दीबाजी न करने की नसीहत भी दे गये । स्वार्थी,अपराधी एवं असामाजिक लोगों से दोस्ती का प्रतिफल तो दुखदायी ही होगा । स्वार्थ के ईंट पर टिकी दोस्ती की नींव कभी भी भरभरा कर गिर सकती है और इसके परिणाम भयावह हो सकते है । दोस्त बनाने से पहले बहुत सोच विचार करने की जरूरत अब आ पड़ी है । यदि असावधानी हुई संजय जैसे दरिन्दें मुट्ठी में आग भरने से तनिक भी नही चुकेगे ।
ब्रहमदत्त–चन्दा की मां आंसू पोछो । दरिन्दों ने तो बहुत बड़ा गुनाह किया है । इसकी सजा तो उन्हे जरूर मिलेगी । युवको को दोस्ती के कैनवास चन्द्रशेखर के लहू के निशान को ध्यान में रखते हुए सावधानी बरती होगी ताकि फिर कोई अमानुष संजय दोस्ती के पाक रिश्ते को नापाक न कर सके ।
भाग्यलक्ष्मी–भगवान चन्द्रशेख्र की आत्मा शान्ति बख्शना । परिवार को आत्मबल और जिन्दगी के कैनवास पर सुनहरा रंग भरने की शक्ति देना । भगवान दरिन्दों को ऐसी सजा

देना कि फिर कभी दोस्ती जैसा रिश्ता बदनाम न होने पाये ।

ब्रहमदत्त–हां ठीक कह रही हो ऐ दरिन्दें कठोर से कठोर सजा के हकदार है । युवा पीढ़ी से भी गुजारिस है कि दोस्ती को स्वार्थ के तूफान से बचायें ताकि दोस्ती के कैनवास पर फिर कभी लहू के निशान न पड़े और न ही हंसते खेलते परिवार की छाती पर जख्म डर बैठने पाये ।

10–दुखिया माई

का रे दुखिया अब तो तेरे करेजे को ठण्डक मिली मेरा पूरा धान तेरी भैस चौपट कर दी । खाने को अन्न नही रहने को घर नही । पाल रही हो भैंस । तेरी भैंस हांकर ले जाऊं और अपने दरवाजे पर बांध लू...... कुंवर बहादुर गरज पड़े । दुखिया के उपर तो जैसे बिजली गिर पड़ी भैंस हांक ले जाने की बात से । उसकी आखें सावन–भादों हो गयी । वह आंचल से आसूं पोछते हुए बोली– बाबू ना जाने कैसे भैंस खूंटा से छुडा ली अच्छी तरह से गांठ लगा कर बांधी थी। बिरछवा की भैंस मेरी खूंटे से बंधी भैंस से लड़ने लगी थी । मेरी भैंस की सींग भी टूट गयी है बाबू । बरछवा की भैस आक न मेरी भैंस से लडती न खूंटा टूटता और नही मेरी भैंस बाबू आपके धान के खेत मे जाती । बाबू नुकशान तो हो गया है जानबूझ कर तो मैंने नही किया है ना । भैंस

का सहारा था उसकी सींग भी टूंट गयी । सोची थी भैंस बेचकर जरूरत की कई चीजें लाऊंगी । जाड़ें के लिये एक रजाइ्र बनाऊंगी बाबू मेरा भी तो बहुत नुकशान हो गया । भैंस की कीमत आधी रह गयी । टूटी सीग वाली भैंस कौन खरीदेगा ।

कुवर बहादुर–अभी कल रोपाई हुई तेरी भैस ने सारा खेत रौंद डाली । तुमको अपने नुकशान की फिर्क है हमारे नुकशान की भरपाई का्रैन करेगा ?

कुवर बाबू की फटकार सुनकर नन्दू आ गये और बोले बाबू दुखिया माई की भेंस तो एक किनारे से भागी थी ।

दुखियामाई–हां बाबू । मेरी भैंस कोने से निकली थी और सड़क पकड़ ली थी ।

नन्दू– हां बाबू दुखियामाई भैंस को ललकारते हुए उसके पीछे पेिछे भाग रही थी। दुखियामाई भैंस हांकने के लिये अलग,बकरी हांकने के लिये अलग डण्डा रखती है पर बाबू आज उसकी भैंस आपके खेत में पांव क्या रख दी बेचारी अपराध बोध के समन्दर में डूब गयी और बकरी चराने वाले डण्डें को लेकर भैस के पीछे पीछे दौड़ रही थी । आज ना जाने दुखियामाई की भैंस को ना जाने क्या हो था कि आवाज सुनकर भाग रही थी जबकि कुछ देर पहले वही भैंस दुखियामाइ्र की एक आवाज पर दौड़ी चली आती थी ।धन

की फसल की भांति दुखियामाई की भैंस लहर लहर कर भाग रही थी शायद सींग टूटने की वजह से ।
कुंवरबहादुर–क्यों रे क्या बात है नन्दुआ तू तो बड़ी तरफदारी कर रहा है दुखिया की । क्या कल से दुखिया की जमीदारी जोतकर पेट पालेगा ?
नन्दू–बाबू हम गरीबों के पास जमींदारी होती तो गरीबी की मुट्ठी भर आग में क्यों जलते मरते रहते । बाबू हम गरीब जिस बुरी हाल में जीवन बिता रहे है उसके लिये आप भी जिम्मेदार हो ।
कुंवरबहादुर–क्या बकवास कर रहा है । दो अक्षर तुम्हारे लड़के पढने क्या लगे कि तुम अपनी औकात ही भूल गये । नन्दू बराबरी करने में अभी शदियां लगेगी ।
दुखियामाई– बाबू गुस्सा थूक दो । मेरी भैंस ने आपका धान नही रौंदा है विश्वास करो । जल्दी की रोपाई है । तेज हवा की वजह से धान के रोप से कुछ धान के पौधे निकल गये है वही किनारे लगे है । ना मेरी और नही किसी दूसरे की भैंस खेत में गयी है । खुद सोचों बाबू मेरे दरवाजा आपके खेत में खुलता है । क्या मैं अपनी भैंस से आपकी खेती चौपट करवाउंगी । आज तक कभी ऐसा हुआ है ।
नन्दु– हां बाबू यकीन करों दुखियामाई ठीक कह रही है ।
दुखियामाई– बाबू मैं तो भैंस यही पकड़ लेती सड़क पर नही जा पाती पगहा तो उसकी गर्दन में ही था । बाबू डर के

मारे नही पकड़ी कि कही और तेजी से खींचाकर भागने । मेरी दशा ठाकुर जैसी न हो जाये ।बेचारे ठाकुर की जान तो भैंस का पगहा खींचाकर बंध जाने से हुई थी ना । बेचारे ठाकुर पहचानने लायक तक नही बचे थे ।
कुवरबहादुर-तुम मुझे कहानी सुनाकर बेवकूफ नही बना सकती हो दुखिया ।
नन्दु-हां बाबू गरीब लोग बेवकूफ नही बनाते ।
कुंवर बाबू-नन्दुआ तू नही बोल तो ठीक है ।
नन्दू- बाबू गांव के जाति-परजाति के बहुत लोगों ने देखा हैं भैंस आगे आगे दुखिया माई दौड़ रही थी । आवाज सुनकर भैंस घोड़े की रफतार से भाग रही थी । बड़ी मुश्किल से कई लोगो ने घेरकर पकड़ा है । मालूम है दुखियामाई भैंस लेकर आ रही थी फिर अचानक भैंस विदक गयी और पोखरी में चली गयी दुखियामाई का जान बच गयी है बाबू।
कुंवरबाबू-बन्द कर अपनी बकवास नन्दुआ तुम सब साजिश रच रहे हो ।
दुखियामाई-कैसी साजिश बाबू । भला हम पेट में भूख दिल में मरते सपने और बंटवारे में मिली मुट्ठी भर आग में सुलगते लोग क्या साजिश रचेगे ?
नन्दू-माई देख तेरे पैर से खून बह रहा है गहरी घाव है । फिटकरी हो तो घाव में भर लो । बाबू सुनो चाहे न सुने मैं अपनी बात कह कर रहूंगा । बाबू दुखियामाई की हाल देख

रहे हो आंखों में आसूं भरा हैं पैर में शीशा फाड़ लिया भैंस को पकड़ने के लिये भागते समय । उसके तन के वस्त्र की हालत देख रहे है । जो भैंस आपकी तरफ मुंह करके चुगाली कर रही है वही कुछ देर पहले रणचण्डी बनी हुई थी। घण्टा भर से अधिक पानी में बैंठी रही । दुखियामाई पोखरी के किनारे बैठे बैठे भै।स को गालियां दे रही थी । जब दुखियामाई के गालियां का खजाना खत्म हो गया तब भैंस पानी से निकली है और दुखियामाई के पीछे पीछे आकर दरवाजे पर खड़ी हुई है । बाबू पशु भी समझदार होते है । भैंस की सींग टूट गयी है वह भी गुस्से में थी पोखरी के पानी में घण्टे भर बैठी रही जब उसका गुस्सा ठण्डा हुआ है तो खुद ब खुद चलकर आयी है । भैंस बांधकर दुखियामाई ने बहुत मारा है । दुखियामाई पीट रही थी भैंस टुकुर–टुकुर देख रही थी । देखों भैंस भी शर्मसार है जबकि उसकी गलती नही है । वह तो खूटे में बंधी थी बिरछवा की भैंस आकर हमला कर दी थी । वह तो आत्मरक्षा में भागी थी टूटी सींग लेकर ।

कुंवरबहादुर–नन्दुआ ऐसी ही तेरी जबान चलती रही तो तेरी सींग तो नही तेरी जबान जरूर टूटेगी । कुवरबहादुर दुखियामाई की ओर रूख करके बोले भैंस पालने का शौक छोड़ दो सूअर पालो तुम्हारे फायदे का सोदा है गांव की गन्दगी भी साफ हो जाया करेगी ।

नन्दु–बाबू एक भैंस ने पैंर रख दिया खेत में वह भी गलती से तो इतना लाल–पीला हो रहे हो पच्चीस पच्चास सूअर खेत में चले जायेगे तब क्या होगा ?
कुंवरबहादुर– अपना मुंह बन्द रख नन्दुआ । जिस दिन गांव के जमीदारों को गुस्सा आ गया न खड़ा होने की जगह नही मिलेगी । हंगना मूतना सब तो बाबू लोगों की जमीन में करते हो और जबान की जगह तलवार चलाते हो । देख दुखिया अब कोई नुकशान न होने पाये तेरी भैंस ने बहुत नुकशान कर दिया । अगर अब कोई नुकशान हुआ तो महीने भर बिना मजदूरी के काम करना होगा ।
दुखियामाई कुंवरबहुदर की बात टुकुर–टुकुर सुन रही थी । उसके होंठ जैसे सिल गये थे । आखों से आसूं और पैर से खून बह रहा था ।
कुंवर बहादुर की बिजली की तरह कड़कती आवाज सुनकर बिसुन के पांव थम गये । वह दुखियामाई की झोपड़ी की ओर मुड गया । दुखियामाई की दशा देखकर पूछ बैठा क्या हो गया भौजाई क्यों आंखों से आंसू और पैर से खून बह रहा है । कौन सी अनहोनी हो गयी की कुंवरबहादुर गरज रहे है बिजली की तरह ।
कुंवरबहादुर–बिसुनवा तुमको अनहोनी का इन्तजार है । दुखिया की भैंस सारा धान चौपट कर दी क्या किसी अनहोनी से कम है ।

बिसुन–बाबू ये भी कोई अनहोनी है । दो पूंजा क्या उखड़ गये । आतंक मचा दिया । गरीब की दशा नही देख रहे हो । चिल्लाये जा रहे हो । देखो दुखिया भौजाई के पांव में कितना बड़ा घाव है । अरे गरीब की आंसू का कोई मोल नही आप जैसे बड़े लोगों की निगाहो में । बाबू आप का एक पैसे का नुकशान नही हुआ है । हवा चलती है तो ताजे रोपे खेत में छुटे छिटके धान के पौंधे किनारे तो आते ही है ।

कुंवरबहादुर–नेता हो गया है क्या बिसुनवा तू बस्ती का ?

बिसुन–बाबू गरीब के दर्द का एहसास आपको तो होगा नही क्योंकि गरीबी तो आपने देखी नही हैं ।दर्द का एहसास तो उसे ही होता है जिसने दद्र का अनुभव किया हो । बाबू आपको लगता है कि मैं नेतागिरी कर रहा हूं तो यही मान लीजिये ।

बिसुन की बात ने कुंवरबहादुर के गले में जैसे गरम कोयला डाल दिया हो । वह बौखला गये और देख लेने की धमकी देते हुए उलटे पांव भाग खड़े हुए ।

भैसं कुंवरबहादुर के धान के खेत में चली गयी थी और बाबू कुंवरबहादुर बूढी दुखिया को बहुत बुरी बाते सुना गये कि खबर लल्लू दादा को कामराज बाबू की हवेली लग गयी थी । वह काम छोड़कर आ नही सका था मजदूर कट जाने की वजह से । अंधेरा के पूरी तरह पांव पसारते ही वह झोपड़ी

वापस आया । आव देख ना ताव लाठी लेकर भैंस पर पिल पड़ा । दुखिया लल्लू को अपनी कसम देकर रोकने में कामयाब हो गयी ।

लल्लूदादा अपने गुस्से पर विजय प्राप्त कर भैंस को समझााते हुए बोले तूने आज बहुत बड़ी गलती कर दी ना । जमीदार कुंवरबहादुर के खेत में चली गया । तुमको पता है हम सामाजिक आर्थिक गरीबों के बारे में । तेरे दूध दही को भी ये बाबू लोग अपविर्त मानते है क्योंकि तू एक सामाजिक और आर्थिक रूप से गरीब के खूटें पर बंधी है । बाजार में भी जगह नही है। कितना दुख सहकर तुमको पाल रही है ये बुढिया तू है कि तनिक भी परवाह नही करती। ये बाबू लोग तो हम गरीबों की परछाई पड़ने तक को अपराध मान लेते है । तुम तो धान के खेत में पेर रख दिया । पता है तुमको कुंवरबहादुर बुढिया को कितनी गांलिया दे गये है । अरे हम अपने पेट में रूखी सूखी डालने के पहले तुम्हारा इन्तजाम करते है तू है कि आंसू दे रही है । देखा बूढिया के आंख का आंसू दर्द तो तू भी समझती है ना ।

दुखिया– हां बुढउ ये भैंस भी समझती है दर्द। देखों उसकी आंखों से भी आसूं भरभरा पड़ा है । दुखिया भैंस के सिर पर हाथ फेरने लगी । भैंस दुखियामाई का पांव चाटने लगी ।

नन्दू और बिसुन एक स्वर में बोले जानवर भी समझते है पर उन्माद में डूबा आदमी कुछ नही समझ रहा है । काश खुद को बड़ा समझने वाले बाबू लोग शोषित दुखियों के दर्द का एहसास कर पाते तो अत्याचार की आंधी थम जाती ।
लल्लूदादा- हां भइया पर बाबू लोगों को अत्याचार से फुर्सत नही है । चल बुढिया बत्तीजार कर ले । घाव गहरी है । ठीक तो हो जायेगी पर कुवर बहादुर की दी गयी घाव तो कभी नही ठीक हो सकेगी किसी दवादारू से । क्या तकदीर हो गयी है हम गरीबो की कि चहुंओर से मुट्ठी भर भर आग ही मिलती है । रूढीवादी व्यवस्था द्वारा परोसी आग में हमें सुलगते रहना है । तू ठीक कह रही है जख्म देने वाले बाबू लोगों से तो अधिक समझती है ये भैंस हम दुखियों के दर्द को ।

11-एक्सीडेण्ट

फोन की घनघनाहट सुनकर मिसेज लाल चौंककर फोन की ओर दौड़ पड़ी । फोन की घनघनाहट ना जाने उन्हे क्यों अशुभ सी लग रही थी । वे हड़बड़ायी सी कांपते हाथ से फोन का रिसीवर उठायी और लड़खड़ाती जबान से हेलो बोली । दूसरी तरफ की हेलो की आवाज मिसेज लाल के कान को जैसे चीर गयी । वे घबरायी सी हेलो हेलो रूधें कण्ठ से किये जा रही थी । वे समझ गयी कि दूसरी तरफ फोन पर

कोई और नही उनके पति मि.लाल है । मि.लाल की घबराहट भरे हेलो शब्द ने उन्हे किसी अनहोनी की आशंका के घेरे में लाकर पटक दिया । वे हिम्मत करके बोली क्या हुआ । क्यों घबराये हुए हो । कुछ तो बोलो परन्तु मि. लाल के कण्ठ से आवाज नही निकल रही थी । बड़ी मुश्किल से मि.लाल बोले भागवान बहुत बुरा हो गया ।

मिसेज लाल–क्या हुआ अभी तो गये हो बीटिया को लेकर प्राइज लेने । क्या प्रोग्राम कैंसिल हो गया ।

मि.लाल–नहीं ।

मिसेज लाल–तब क्या हुआ? मेरी जान निकली जा रही है । कुछ बताओगे ?

मि.लाल–घबराओ नही।

मिसेज लाल–हुआ क्या बताओ तो सही ।

मि.लाल–एक्सीडेण्ट । श्रमिक कालोनी के अस्पताल में पहुंच गया हूं किसी तरह आटो करके। आटो ने दस रूपया की जगह पच्चास रूपये किराया वसूल किया है । अस्पताल वाले भी पुलिस का डर दिखा रहे है । कोई अनुनय विनय तक को नही सुन रहा है । मैं खड़ा नहीं हो पा रहा हूं । बीटिया लहूलुहान दर्द से तड़प रही है । सिस्टर दरोगा की तरह डांट रही है ,कह रही है । बड़े अस्पताल जाओ पुलिस केस करना है तो । फर्स्ट एड भी यहां नही मिल रहा है ।

पुलिस कार्रवाई न करने के लिये दबाव बना रहे है । ना जाने इसमें अस्पताल वालों का कौन सा हित सध रहा है ।
मिसेज लाल पुलिस केस का बाद में सोचेगे पहले तो बोलो इलाज शुरू करें । मै पहुंच रही हूं । पैसे का इन्तजाम करके ।
मि.लाल–ठीक है । डाक्टर तो कई है पर नर्स सनडे का बहाना कर कह रही है अभी डांक्टर है । नर्स से पुलिस केस नही करने की बात कहता हूं देखो मान जाये तो ठीक है । तुम आओ तो बड़े अस्पताल ही चलते है । जल्दी आओ ।
मि.लाल पुनः नर्स के पास गये । इलाज शुरू करने का अनुरोध किये । नर्स अपने रवैया पर अड़ी थी वह बोली पुलिस केस है हम हाथ नही लगा सकते । हम तभी इलाज शुरू करेगे जब तुम पुलिस केस न करने का वचन दो और इस कागज पर दस्ख्त करो ।
मि.लाल–ठीक है । लाइये दस्खत कर देता हूं । इलाज शुरू करो ।
इतने में डाक्टर हाजिर हो गये । झटपट मुआयना किये और बोले घबराने की बात नही है । हड्डी नही टूटी है । खरोंच की वजह से खून बहा है । नर्स हां में हां मिलाती रही ।

इतने में मिसेज लाल आ गयी बीटिया को लहूलुहान देखकर धड़ाम से गिर पड़ी ।
नर्स बोली– क्यों इतना नाटक कर रही हो मैडम । जरा सी चोट लगी है । मरहम पट्टी हो गयी है । डाक्टर साहब ने दवा लिख दी है खिलाते रहना । दो चार दिन में दौड़ने लगेगी तुम्हारी बीटिया । तुम्हारे मिस्टर को घाव तो नही लगी है उन्हे झूठमूठ की बेचैनी है । यहां से घर ले जाओ । बढिया चाय बनाकर अपने हाथ से पीलाओ ठीक हो जायेगे । जहां घाव लगी हो वहां बरफ से सेकायी करते रहना । सब ठीक हो जायेगा । इंजेकशन लग गया है ,दवा दे दी है । घर ले जाओ और आराम करने दो । नर्स ने पांच सौ रूपये रखवा लिये जिसकी कोई रसीद भी अस्पताल से नहीं दी गयी और न ही डाक्टर का परचा दिया गया ।
किसी तरह से मिसेज लाल बेटी और पति को आटो रिक्शे में लादकर घर ले गयी । बाप बेटी के एक्सीडेण्ट की खबर पुरी कालोनी में फैल गयी । शुक्लाजी,चौहानजी,शर्माजी और जैनजी बाप बेटी की हालत देखकर तुरन्त आटो रिक्शा बुलाये और बाप बेटी को लेकर हड्डी रोग विशेषज्ञ के पास पहुंचे । बीटिया को टेबल पर लेटर दिया गया । डाक्टर पहले बीटिया का चेक अप किये फिर मि.लाल का ।
शुक्लाजी डां. से पूछे डांक्टर साहब फैक्चर तो नही है ना ।

डां. मिस्टर लाल को फैक्चर नही है पर घाव थोड़ी गहरी है। कुछ अन्दरूनी चोटी भी है । पन्द्रह बीस दिन दवा लेनी पडेगी । बीटिया को फैक्चर तो है । एक्सरे के बाद स्थिति साफ हो जायेगी ।

एक्सरे आदि करने में चार बज गये दो घण्टे के बाद रिर्पोट आयी । फैक्चर है । मामला साफ हो गया । डाक्टर तुरन्त कच्चा प्लास्टर करने में जुट गये । घण्टे भर में प्लास्टर हो गया । हाथ धोते हुए डाक्टर साहब बोले मि.लाल आप रेगुलर दवा लेते रहना । बीटिया का प्लास्टर तो हो गया है । बीटिया को ठीक होने में महीना से अधिक समय लग सकता है । बीटिया को कमप्लीट बेडरेस्ट की जरूरत है । पुलिस केस बनता है एफ.आई.आर.जरूर दर्ज करवा देना । गाड़ी नम्बर तो नोट कर लिया होगा ।

मिस्टरलाल –हां ।

सुनील और जान्सन स्कूटर नम्बर के आधार पर एक्सीडेण्ट कर भागने वाले अपराधी डी.सक्सेना,जनता क्वार्टर,नन्दानगर का पता लग लिये पर पुलिस ने एफ.आई.आर. न दर्ज करने की कसम खा ली । मि.लाल अपने क्षेत्र के थाने में जाते तो वहा कहां जाता कि जिस क्षेत्र में एक्सीडेण्ट हुआ वहां एफ.आई.आर.दर्ज होगी इस थाने में नही । इस तरह मि. लाल काफी भागदौड़ किये पर पुलिस इधर से उधर भगाती रही । इसी बीच एक दिन डी.सक्सेना मि.लाल के घर आया

और बोला पुलिस केस मत करो मेरी शान माटी में मिल जायेगी । बीटिया के इलाज के खर्च को खुद वहन करने का वादा कर चला गया । दोगला डी.सक्सेना अपनी चाल में कामयाब हो गया । महीने भर तक पैतरेबाजी करता रहा । कल रूपये दे जाऊंगा परसों दे जाउंगा फिर अपनी बात से मुकर गया । बोला हमने कोई वादा नही किया था । हम तो समाज सेवक है । सड़क पर चलते लोगों का खून नही बहाते । नगर सुरक्षा समिति का सक्रीय सदस्य हूं । हमारे खिलाफ किसी थाने में एफ.आई.आर.दर्ज नही हो सकती । यह तो पता चल गया होगा ।
मि.जैन–सक्सेना धमकी दे रहे हो । बीटिया का पैर तोड़ दिये डेढ महीने से खटिया पर पड़ी है । तुम इलाज के खर्च को वहन करने का वादा किये थे । एक पैसा आज तक नही दिये कैसे दगाबाज हो । बनते समाज सेवक हो क्या तुम्हारे जैसे ही समाज सेवक होते है । एक्सीडेण्ट करके भाग जाते है । जब पकड़ में आते है तो पैतरेबाजी करते है । अरे कुछ तो शरम करो ।
सक्सेना–मुझ से एक्सीडेण्ट तो हुआ है । मैं रात में जागता हूं समाज सेवा के लिये । चलती राह मेरी आंख नीद की वजह से बन्द हो गयी । मेरी गाड़ी टकरा गयी । हो गया एक्सीडेण्ट तो मैं क्या करूं । जो तुम लोग कर सकते थे

कर लिये । नही लिखा गया एफ.आई.आर ना ......देख लो मैं क्या कर सकता हूं ।

मि.लाल– बड़े दोगले आदमी हो तुम तो । आंख में धूल छोकना तुम्हे अच्छी तरह से आता है ।खून से खेलते हो होली और बनते हो समाज सेवक । क्यों समाज सेवकों का नाम खराब कर रहे हो ।समाज सेवा के नाम पर पाप कर रहे हो ।खून बहाते हो उपर से धमकी भी देते हो । देखो पैसा हाथ की मैल है । मै इलाज में कोई कोतहाई नही बरत रहा हूं । जरूरत पड़ी तो बीटिया को बड़े से बड़े डाक्टर को देश के किसी कोने में ले जाकर इलाज करवा सकता हूं । सक्सेना तुमने खर्च वहन का वचन दिया था । अपनी जबान से मुकर रहे हो । ऐसा तो दोगले किस्म के लोग ही कर सकते है । अरे दरिन्दे तुमने अपनी गलती का प्रायश्चित कर लेते इतना मेरे लिये बहुत था । तुमने मुझे धोखा क्यों दिया । मेरा केस रजिस्टर्ड नही होने दिया । कैसे घटिया इंसान हो ।तुम्हारे मुंह पर जमाना थूकेगा । समाज सेवा का ढकोसला बन्द कर दो ।

मि.सक्सेना देखो इज्जत मत उतारो ।

मि.शर्मा– तुम्हारी कोई इज्जत भी है । मैं तुमको अच्छी तरह जानता हूं ।तुमने पुलिस केस से बचने के लिये षणयन्त्र रचा था ।

सक्सेना– कामयाब भी हो गया । तुम सब देखते रह गये । चले जाना जिस अदालत में मरे खिलाफ जाना हो । तुम्हारा अंगूठा तो हमने काट लिया । अब तो कही एफ. आई.आर.दर्ज तो करवा नही सकते । कहते हुए दोगला अंगूठा दिखाकर भाग निकला । दोगले की करतूत देख्कार सभी अवाक् रह गये । डी.सक्सेना,जनता क्वाटर वाले ने बाप बेटी को टक्कर मारकर भाग गया । पकड़ में आने पर इलाज का खर्च वहन करने का वादा किया था पर ये तो उसका षण्यन्त्र था । जब षणयन्त्र का पता आसपास के लोगो को लगा तो सभी मशविरा देने के लिये जैसे उमड़ पड़े । कोई डी.जी.पी. से कोई एस.पी. से कोई किसी और से शिकायत करने की मशविरा देता । कोई कहता क्या थाने के चक्कर में पड़ना जान बची करोड़ो पाये । कोई बीटिया को दुआये देता कहता भगवान करे मेरी बीटिया जल्दी चलने लगे । कोई कहता भगवान के घर देर है अंधेर नही इसका फल डी.सक्सेना को जरूर मिलेगा । उसकी टांग कट जायेगी । कोई कहता उसकी कटी टांग में कीड़े जरूर पड़ेगे । देखना जख्म देने वाले का जीवन हंसते जख्म में बितेगा । दोगला बहुत शातिर निकला,भगवान दो मुंहे की खुशी पर मुट्ठी भर आग जरूर डालेगे। सन्तोष करो लाल भईया भगवान तुम्हारा सब दुख हर लेगा । वही तुम्हारा खजाना

भरेगा । मि.लाल रिसते जख्म पर मलहम लगाने में मशगूल थे और लोग डी.सक्सेना को बददुआये देने में।

12–नेकी

दीदी देखो ना । नन्हकी को न जाने क्या हो गया ? आंख उपर नीचे कर रही है । छुट्टी के दिन भी उनको फुर्सत नही है । कह कर गये थे कि जल्दी आ जाउूंगा पर अभी तक आये नही । दीदी कुछ जल्दी करो ना टीलू की आखों से आसूं टपके जा रहे थे ।

पुष्पा–टीलू ,रो ना । अभी अस्पताल लेकर चलते है ।क्यो परेशान हो रही हो । बीटिया रानी को कुछ नही होगा,कहते हुए मिसेज पुष्पा आवाज लगान लगी । अरे सुनो जी नहा लिये क्या । देखो रीता की तबियत खराब हो गयी है । अस्पताल लेकर जाना होगा अभी। वकीलभइया घर पर नही है । जल्दी करो ।

मिसेज पुष्पा की पुकार पर दीनदयाल बाथरूम से बाहर आ गये ।

पुष्पा–अरे ये क्या ? बनियाइन तो पहन लिये होते ।

दीनदयाल–इतनी मोहल्लत तुमने कहां दिया । बनियाइन निकाल कर खूटी पर टांगा ही था कि तुमने आवाज देना शुरू कर दिया । भला इतनी देर में कोई नहा सकता है क्या कि मैं नहा लूंगा । कुछ मोहल्ल तो दे दिया करो,जब

देखो तब चढी घोड़ी पर सवार रहती हो । खैर छोड़ो पहले तो बताओ रीता को क्या हो गया ।
पुष्पा–कुर्ता पायजामा पहनों । अब बाद में नहाना । पहले रीता को अस्पताल लेकर चलो । सनडे का दिन है अस्पताल में कोई डाक्टर मिलते है भी कि नही । देखो देर मत करो । टीलू बहुत रो रही है । रीता की आंख उपर नीचे हो रही है । मुझे बहुत डर लग रही है । इतने बरसों के बाद तो एक लडकी पैदा हुई थी वह भी पोलियोग्रस्त । वकील बाबू और टीलू बीटिया को बहुत प्यार करते है । बड़े लाड़प्यार से पाल रहे है । पता नही किसकी नजर लग गयी । कल तो चंगी भली थी आज अचानक न जाने क्या हो गया ?
दीनदयाल– झट से पायजामा कुर्ता पहनता हूं । पहले डाक्टर को रीता को दिखाते है । बाकी काम बाद में होगा ।
पुष्पा–क्या कर रहे हो । कब से पायजामा पहन रहे हो । जल्दी नही पहन सकते क्या ?
दीनदयाल– भागवान कुछ तो समय लगेगा । नाड़ा तो बांध लेने दो ।
पुष्पा– हे भगवान इतनी देर पायजामा पहने में लग रहा है । उधर टीलू जोर जोर से रो रही रही है ।लोग कहेगे कैसे पड़ोसी है । दिखाते तो सगे जैसे पर बीमार लड़की को लेकर डाक्टर के पास तक नही ले जा रहे ।

दीनदयाल–क्यों परेशान हो रही हो । चलो नीचे उतरो । स्कूटर की चाभी मेरे हाथ में है । पांच मिनट में अस्पताल पहुंच जायेगे । रीता को कुछ नही होगा ।
पुष्पा–जब काम पड़ता है तब तुम्हारा स्कूटर जबाब दे जाता है । फेको स्कूटर चलो भाग कर । समय बर्बाद हो रहा है । रीता बेहोश हुए जा रही है ।
दीनदयाल–चलो स्कूटर स्टॉर्ट हो गया । तुम रीता को लेकर स्कूटर पर बैठो । अस्पताल भर्ती करवा कर टीलू को ले जाऊंगा ।
पुष्पा–टीलू को सान्तवना देते हुए अस्पताल की ओर भागी । टीलू मैडम चिल्ला चिल्ला कर रोये जा रही थी । आनन फानन में दीनदयाल अस्पताल पहुंचे ।
डाक्टर साहब पड़ी फुर्ती से आपरेशन थियेटर की ओर इशारा करते हुए भागे । इशारे से दीनदयाल के हाथपांव फूल गये । डाक्टर साहब तनिक भर में कई मशीने लगा दिये पर सब बेकार। आक्सीजन लगा दिये फिर माथा पकड़कर बैठ गये । दीनदयाल बेसुध पड़ी रीता को निहारे जा रहे थे कि कब रो पड़े ।
डाक्टर–दीनदयालजी आप मरीज को ले जा सकते है । कुछ नही हो सकता अब ।
दीनदयाल–क्या ?
डाक्टर–हां । बेबी मर चुकी है ।

अस्पताल पास में होने की वजह से पड़ोसियों की भीड़ लग गयी । दीनदयाल शव लेकर चल पड़े । दीनदयाल के पीछे भीड़, रोती बिलखती टीलू मैंडम और उन्हे सम्भालते आंसू बहाते हुए पुष्पा । टीलू मैडम तो पागल सी हो गयी । इकलौती सन्तान काफी मान मनौती के बाद पैदा हुई थी शादी के काफी वर्षो के बाद पोलियोग्रस्त । वह भी वल बसी । रीता की परवरिश टीलू और वकील भइया बड़े लाड़ प्यार से कर रहे थे ।उन्हे इस अपंग बीटिया पर बड़ा नाज था । रीता गर्दन तो उठा नही पाती थी पर आसपास के लोगों को अच्छी तरह से पहचानती थी । मिसेज पुष्पा को देखकर वह करवटे बदलने लगती थी । हाथ पांव पटकने लगती थी । उसके भाव को देखकर मिसेज पुष्पा समझ जाती थी कि वह गोद में उठाने को कह रही है । गोद में उठाते ही वह मुंह पर एकटक देखती रहती थी । मिसेज पुष्पा के भी आंसू नही बन्द हो रहे थे । उनकी आंख के सामने रीता का चेहरा बार बार उभर रहा था । मिसेज पुष्पा छाती पर पत्थर रखकर टीलू को समझाने का अथक प्रयत्न कर रही थी । टीलू थी की बयान कर–कर दहाड़ मार–मार कर रोये जा रही थी । मिसेज पुष्पा टीलू की देखरेख में लगी हुई थी और दीनदयाल क्रियाकर्म करने की तैयारी में । दीनदयाल वकील भइया के परिचितों को अपने बच्चों को भेजकर बुलवाया दूर के परिचितों को किसी दूसरें का हाथ जोड़ जोड़ कर बुलवाये

। वकील भइया को बुलाने के लिये एक आदमी को दौड़ाये ।खुद अन्तिम संस्कार का इन्तजाम करने के लिये एक दो को साथ लेकर करने में जुट गये । कुछ देर में काफी लोग जुट गये पर वकील भइया के दूर के परिचित ड्राइवर प्रसाद ने तो सारी हदे पार कर दी । दीनदयाल की बीटिया काजल को डांट्कर भगा दिये । काजल से बोले तेरा बाप कितना बेवकूफ है ना जान ना पहचान तू मेरा मेहमान हर ऐरे गैरे के काम के लिये बुलावा भेज देता है । अरे उसकी अपाहिज बीटिया मर गयी तो कौन सी दुनिया उजड़ गयी । अच्छा हुआ । दुनिया में ना जाने कितने रोज मरते है । वकील की अपाहिज बेटी मर गयी तो कौन सा पहाड़ टूट गया । मेरी कोई जान पहचान वकील से नही है । मेरे और भी काम है । जा कह देना अपने बेवकूफ बाप से । अरे खुद मुसीबत में डूब रहा है । दूसरों की मुसीबत में क्या जरूरत है कूदने की । बड़ा भला मानुष बनता है । घर में खाने का इन्तजाम नही चला है नेकी करने । खुद की घरवाली का दुख दर्द ठीक से देख नही पा रहा है । समाज को बदलने का जैसे ठेका ले लिया है । भाड़ में जाये ऐसी जनसेवा । बेचारी काजल रोते हुए वापस आ गयी । वकील भइया की बीटिया रीता की मय्यत में ड्राइवर प्रसाद नही सरीख हुआ । कही घूमने चला गय । खैर प्रसाद नही आया । वकील भइया की मृत बेटी को दफना दिया गया ।

दीनदयाल वैसे ही मिसेज पुष्पा की असाध्य बीमारी,खुद की बीमारी और आर्थिक तंगी से त्रस्त थे। दवा का इन्तजाम भी बडी मुश्किल से हो रहा था । बच्चे कपड़े लते को रतस रहे थे ।गांव में परिवार के लोग नाराज थे क्योंकि मनिआर्डर नही कर पा रहे थे । सार कमाई दवाई पर स्वाहा हो रही थी । दीनदयाल के पिताजी पूरी बस्ती वालों के सामने कहते बेटवा ससुरा शहर में मजा कर रहा है । गांव में हम सुर्ती बीड़ी के लिये नस्तवान हो रहे है । बीबी बच्चों को साथ में रखा है भला इस गांव में उसका कौन है । क्यों करेगा मनिआर्डर । जबकि दीनदयाल जो कुछ हो जाता जरूर भेजते थे । दीनदयाल अपनी दयनीय दशा को वैसे ही उजागर नही होने देते थे जैसे नवयौवना अपने तन के तार–तार वस्त्र से अपने अंग को ढकती हो । दीनदयाल खुद के परिवार का खर्च उठाने में दिक्कत महसूस कर रहे थे । इसी बीच वकीलभइया के परिवार का भार आ गया । आने जाने वालों के चाय नाश्ता,भोजन तक की इन्तजाम करना पड़ता । वकील भइया के मुसीबत को अपनी मुसीबत मानकर दीनदयाल और पुष्पा सारा भार वहन कर रहे थे । बीटिया के मरते ही टीलू तो पागल जैसी हो गयी थी । पड़ोस में एक लड़की पैद्या हुआ उसे अपनी बीटिया का पुर्नजन्म मानकर उसे लेने दौड पड़ती । तंगी के बोझ तले दबे दीनदयाल हिम्मत नही हारे पूरी तरह से मदद किये

। वकील के परिवार का खाना दीनदयाल के घर ही बनता । पुष्पा और दीनदयाल ने सगों से बढकर वकीलभइया के बुरे वक्त काम आये । दीन दयाल खुद इतने दुखी थे कि दूसरों के दुख में काम आना उनकी कमर टूटने जैसा था । दीनदयाल की इनकम अधिक न थी । वे एक कम्पनी में मामूली से मुलाजिम थे । छोटी सी तनख्वाह थी। पत्नी के चार चार आपरेशन का दर्द भोग चुके थे। इसी बीच बाप का आपरेशन, इसके बाद वकील भइया की मुसीबत दीनदयाल के लिये किसी सुनामी से कम न थी । घर में खाने के लिये अन्न की कमी उपर से एक और परिवार का खर्च पर अपनी दिक्कतों का एहसास तनिक भी वकीलभइया को नही होने दिया । वकील भइया मानसिक रूप से परेशान रहने लगे वे शहर छोड़ने का फैसला कर लिये । पड़ोसियो के ,दीनदयाल और पुष्पा के लाख समझाने के बाद भी मानने को तैयार न थे । दीनदयाल और वकीलभइया में दूर दूर तक कोई रिश्ता नही था । दीनदयाल और पुष्पा को देवदूत कहते वकीलभइया और टीलू न थकते थे । वकीलभइया और दीनदयाल जाति बिरादरी से भी एक ना थे । दीदयाल इंसानियत के पुजारी थे । इंसानियत का धर्म निभाना दीनदयाल को अच्छी तरह से आता था । वकील साहब दूसरे शहर चले तो गये पर उन्हे नया शहर रास नही आया । वे वापस आ गये कुछ महीनों के। दीनदयाल खुद किराये के

घर में रहते थे । घर बहुत छोटा था इसके बाद भी आश्रय दिये । दो दिन में वकीलभइया के लिये किराये का घर ढूढ लिये । वकील भइया टीलू के साथ अपने किराये के घर में रहने लगे । यह घर वकील भइया के लिये भाग्यशाली साबित हुआ । उनका काम चल पड़ा । वे तरक्की की राह पर दौड़ पड़े । कामयाबी पर टीलू मैडम को गुमान होने लगा । दीनदयाल और उनका परिवार जो साल भर पहले उनके के लिये देवता समान था । अब उन्हे उनमें खोट लगाने लगी । वे टीलू मैडम की नजर में छोटे हो गये । दीनदयाल की नेकी का टीलू मैडम के लिये कोई मोल न रहा ।

टीलू मैडम के लिये ड्राइवर प्रसाद उनका परिवार,ढकोसलबाज तेगवहादुर और उसकी घरवाली मंथरा प्रिय हो गये । ये वही प्रसाद थे जो टीलू मैडम की बेटी रीता के जनाजे में शामिल होने से मना कर दिये थे । टीलू मैडम प्रसाद की घरवाली ललिता की बातों पर कुछ अधिक विश्वास करने लगी । प्रसाद और ललिता दूसरों के अच्छे रिश्ते उन्हे पसन्द नही थे । वे हर हाल में बिगाड़ने का षणयन्त्र रचते अन्ततः कामयाब भी हो जाते । हां बाद में भले ही लोग उनके मुंह पर थूक दे उसकी तनिक परवाह न करते । ललिता जब वे दूसरों के अच्छे सम्बन्ध में दरार डालने में कामयाब नहीं हो पाती तो राखी बांधकर रूर बिलगाव पैदा कर देती । खुद

अच्छी और दो परिवार को एक दूसरे का दुश्मन बना देती । उसके व्यवहार में दिखावा कूटकूट कर भरा हुआ था । ललिता के षणयन्त्र का शिकार होकर टीलू मैडम दीनदयाल के नेकी को बिसार कर नेकी में खोट खोजने लगी । जहां दो चार औरते इक्ट्ठा होती देवता समान दीनदयाल और उनकी पत्नी पुष्पा की बुराई करने में तनिक भी न चूकती । वकील भइया ने भी आना जाना बन्द कर दिया । पुष्पा महीने भर अस्पताल में मौत से संघर्षरत् थी पर टीलू मैडम, न वकील भइया ,न ललिता और न प्रसाद देखने भर को तो न हुए । हां विपत्ति के दिनों में भी दीनदयाल की राह में मुट्ठी भर–भर आग बिछाने से न चूके । एक दिन राह चलते टीलू मैडम से मिसेज कल्यानी की मुलाकात हो गयी । टीलू मैडम मिसेज कल्यानी को देखकर बोली कहां से आ रही हो भाभी बड़ी जल्दी जल्दी । क्या बात है बहुत जल्दी में हो ?

मिसेज कल्यानी – अस्पताल से आ रही हूं पुष्पा को देखकर महीने भर से अस्पताल में पड़ी है । दीनदयाल भइया बड़ी मुसीबत में हैं ।

टीलू मैडम– मर तो नही रही है ना ?

मिसेज–कल्यानी क्या कह रही हो टीलू ?

टीलू मैडम–ठीक कह रही हूं । मेरे उपर उसका बहुत एहसान है ना ?

मिसेज कल्यानी–एहसान है तो बेचारी महीने से अस्पताल में पड़ी है । बच्चे भूखे प्यास दिन काट रहे है । जाकर अस्पताल देख आती । बच्चों की देखभाल कर लेती । अगर इतनी एहसानमन्द है तो ।
टीलू मैडम–भाभी ये सब मुझे नही करना है ।
मिसेज कल्यानी–मुसीबत में तो अपने ही काम आते है । तुम्हारी मुसीबत में तो दीनदयाल भइया और उनका परिवार जी जान लगा दिया था ।तुम तो कभी अस्पताल में नही दिखी।
टीलूमैडम– भाभी हमे तो इन्तजार है उस दिन का ।
मिसेजकल्यानी–कौन से दिन का इन्तजार कर रही हो ।
टीलूमैडम– जिस दिन उसका बेटा मरे और मै उसके काम आऊं । पूरी कालोनी जान गयी है ना उसने मेरे साथ बहुत एहसान किये है । एहसान चुकाने का मौका तो मिले । मेरी बीटिया मरी थी तो एहसान की थी ना । मैं एहसान कर पूरे शहर को बता देना चाहतीहूं । पहले वो ना उसका बेटा मरे ताकि देख तो ले मेरे एहसान को ।
मिसेज कल्यानी– टीलू होश में तो हो । तुम नेकी पर बदनेकी की आग डाल रही हो । अरे भगवान से तो डरो । मैं जानती हूं दीनदयाल भइया ने तुम्हारे लिये क्या किया है। मैं भी पड़ोस में ही रहती हूं । कोई दूर नही रहती । खुद तकलीफ उठाये पर तुमको तकलीफ नही पड़ने दिये अपने

बच्चों का निवाला तुम्हे दिया । असाध्य रोग से पीड़ित पुष्पा बहन ने रात दिन एक कर दिया । तुम्हारे खून के रिश्तेदार तो एक दिन भी नही दिखे,महीने भर पूरा परिवार एक पांव पर खड़ा था । बेचारे दीनदयाल भइया की नेकी भूल कर बुरे की सोच रही हो । पुष्पा के बेटे की मौत की कामना में जुटी हो । जो दूसरे का बुरा सोचते है उनका बुरा पहले होता है । तुमको पता है कि नही टीलू ?
टीलूमैडम– क्या ?
मिसेज कल्यानी–सत्य कभी नही हारता भले ही परेशान हो जाये । तुम्हारी मुसीबत में जो कुछ दीनदयाल भइया और पुष्पा भाभी ने किया है । उसके बदले तुमसे उन्हे कोई चाह न थी । वे तो हर किसी के दुख को अपना दुख मानकर आगे आ जाते है । उनके खिलाफ जो जहर तुम बो रही हूं वह तुम्हारे लिये घातक होगा । इसके लिये तुम्हे भगवान भी माफ नही करेगा । हां दीनदयाल भइया जरूर माफ कर देगे । मेरी बात गठिया लो । एक दिन तुम जरूर दीनदयाल भइया के चौखट पर माथा पटकोगी । अरे किसी की नेकी के बदले नेकी नही कर सकती तो बुराई की मुट्ठी भर भर आग क्यों । नेकी के बदले ऐसा सिला क्यूं टीलू ? दीनदयाल भइया तो कहते है नेकी करो पर नेकी के बदले को चाह न रखो । आज के जमाने में जब लोगो को आग बोने से फुर्सत नही है ,दीनदयाल भइया जैसा कोई आदमी

तो है नेकी की राह पर चलने वाला । दूसरों के दुख में काम आने वाला ।
टीलू मैडम– क्या ?
मिसेजकल्यानी– हां । मानवता की राह पर चलने वालों की राहो में फूल बिछाने चाहिये मुट्ठी भर भर आग नही । किसी की नेकी बिसारना महापाप है ।
टीलू मैडम–मै ललिता और मंथरा भाभी के बहकावे में आ गयी थी ।वे कहती थी ठोटे लोगों की सोहब्बत से दूर रहना चाहिये ।
मिसेजकल्यानी– क्या ? दीनदयाल भइया इतना बड़ा आदमी तो तुम्हे इस जन्म में तो नही मिलेगा । अरे आदमी पद दौलत और जाति से बड़ा नही होता ।आदमी तो सद्कर्म और नेक हौशले से बड़ा होता है । दीनदयाल भइया भले ही जाति से छोटे हो पद और दौलत से छोटे हो पर वे बहुत बड़े आदमी है टीलू । आदमी को समझना सीखो । नेकी क बदले हंसते जख्म देना अगला जन्म बिगाड़ना है।
टीलूमैडम– गलती का एहसास हो गया है मुझे दीदी । मैं प्रायश्चित करूंगी । भइया और भाभी का पांव पकड़कर माफी मांगूगी कहते हुए अस्पताल की ओर भागीं जहां पुष्पा मौत से युध्दरत् थी।

13–समाचार

साल भर की कमरतोड़,आंखफोड़ पढाई का फल छात्रों नतीजे के रूप में मिलता है । यदि इन भष्यि के वैज्ञानिकों,विद्वानों,उद्योगपतियों,राजनेताओं, सैनिकों एंव समाज सुधारकों के भविष्य के साथ खिलवाड़ लाभबस होता है तो यह खिलवाड़ भविष्य में सामाजिक,आर्थिक, एवं राष्ट्रीय हित पर सुनामी के कहर से कम न होगा । सुबह परीक्षा थी, रामू पूरी रात तैयारी में जुटा रहा । किशन के मार्निंगवाक बाहर निकलते ही किरायेदार प्रकाशबाबू का बेटा रामू बाहर आ गया । रामू को देखकर किशन बोले रामू अखबार का इन्तजार कर रहे हो क्या ?

रामू–नही अंकल । कल पेपर है । अखबार पढने का समय का है । परीक्षा की तैयारी कर रहा हूं ।

किशन–तैयारी अच्छी चल रही है ना ।

रामू–हां अंकल । अव्वल आना है तभी ना पापा साइकिल दिलवायेगे ।

किशन–जरूर अव्वल आओगे । पढाई करो ।नतीजा अच्छा आयेगा बेटा ।

रामू–अंकल पूरे साल से कर रहा हूं ।

किशन–केन्द्र कहां है ।

रामू– अपनी ही कालोनी में । आने जाने मे परेशानी नही होगी ।

किशन–ये भी अच्छी बात है । तुमको ज्यादा देर तक पढने का समय मिल जायेगा । बेटा तुम पढो । मैं मार्निंग वाक् कर लूं ।
रामू–जी अंकल ।
किशन– बेस्ट आफ लक बेटा ।
रामू– थैंक यू अंकल।
रामू मार्निंग वाक् से जल्दी लौट आये और वे भी अपनी बीटिया को परीक्षा केन्द्र छोडने चले गये जो दूर था ।बीटिया उषा दसवीं की छात्रा थी । उषा को परीक्षा केन्द्र छोड़कर किशन घर भी नही पहुंच पाये । कालोनी पुलिस छावनी बन चुकी थी । पत्थरबाजी देखकर दिल दहल गया । बचते बचाते किशन घर तक तो पहुंचा पर पुलिस की ललकार सुनकर आगे बढ गया । किशन का बेटा कुमार बाट जोह रहा था । पापा को घर के सामने से जाता हुआ देखकर पापा.....पापा... चिल्लाते पीछे पीछे दौड़ लगा दिया । आगे बढकर पुलिस के एक जवान ने किशन को रोका ।
पुलिस के रोकने पर किशन रूक गया । वह हिम्मत करके बोला क्या हंगामा है ये । अपने घर में भी नही घुसने दिया जा रहा है । क्या आफत है । क्या हो गया कालोनी में आधा घण्टा पहले तो ऐसा कुछ नही था ।
पुलिस जवान–देख नही रहे हो दंगा हो गया है ।
किशन–दंगा क्यो हो गया ?

जवान– ऐन वक्त पर परीक्षा केन्द्र बदल गया है । इसलिये.....
तब तक हांफते हुए कुमार पहुंच गया और किशन से बोला पापा घर चलों मम्मी परेशान हो रहा है । कुमार डरा सहमा थर–थर कांप रहा था ।दंगे का खौफ उसकी नजरों के सामने घूम रहा था । वह नन्हा सब कुछ अपनी आंखों से देख चुका था । उसे डर था कि कहीं कोई पत्थर उसके सिर न फोड़ दे । वह किशन का हाथ पकड़कर घर चलने की जिद पर अड़ गया ।
किशन–बेटा स्कूटर पर बैठो । अंकल से बात कर लूं । घर ही चलूंगा ।
कुमार–पापा कोई पत्थर मार देगा।
किशन–नही बेटा ये अंकल है ना । पत्थर मारने वालों को पकडने के लिये ।
कुमार– अंकल जैसे तो बहुत लोग थे । देखो न बस को कूंच डाले।
किशन– कुछ नही होगा अब । पुलिस अंकल लोग आ गये है ना ।
इतने में तेज धमाका हुआ । कुमार रोते हुए बोला पापा अब घर चलो । देखो बस पर पत्थरबाजी शुरू हो गयी । सभी लोग अपने अपने घरो के अन्दर है । कुमार की जिद के आगे किशन को झुकना पड़ा । वे अपने घर वापस आ गये

। स्कूटर धड़ा कर दंगास्थल ओर जाने लगी । इतने में उनकी धर्मपत्नी गीता डपटकर बोली कहां जा रहे हो जी । देख रहे हो चारो ओर से पत्थरबाजी हो रही है । क्यो सिर फोड़वाने जा रहे हो । इतने में कुछ लड़कियां दीवार की ओट में रोती हुई दिखाई पड़ गयी। किशन लड़कियों के पास गये पूछे बेटी क्या हुआ ।

एक लड़की आसू पोछते हुए बोली परीक्षा केन्द्र बदल गया हम तो परीक्षा देने आये थे । यहां तो सिर फूट गया । कई लड़के लड़किया अस्पताल जा चुकी है । परीक्षा केन्द्र कहां है ।

किशन–परीक्षा केन्द्र बदलने की सूचना तो पहले मिल गया होगी ।

लड़की – नही अंकल अभी पता चला है । कोई कह रहा है नन्दाकालोनी में है तो कोई कहीं और बता रहा है ।

कुछ सरकारी अफसर भी आ गये । कुछ परीक्षार्थी जा चुके थे । कुछ अधिकारियों को उम्मीद भरी निगाहों से देख रहे ताकि परीक्षा टल जाये । दस मिनट के बाद शिक्षा अधिकारी भी आ गये । पालक और परीक्षार्थी प्रश्नों की झड़ी लगा दिये । एक आदमी स्पष्ट शब्दों में बोला साहब क्या यह भ्रष्टाचार का केस नही है । ले दे कर परीक्षा केन्द्र बदला गया हो ।

शिक्षा अधिकारी महोदय अनुत्तर हो गये ।इतने में अपर कलेक्टर साहब आ गये । स्कूल के संचालक को बुलवाये । आपस में कुछ बातचीत किये । थाने चलो कह कर अपर कलेक्टर साहब आग बढे फिर क्या गाड़ियों का काफिल चल पड़ा अपर कलेक्टर साहब के पीछे पीछे । बच गये कुछ घायल परीक्षार्थी और टूटी बसें । किशन भीड़ के छंटते ही बस के पास सिसकती लड़कियों से बात करने लगे ।इतने में पड़ोस वाला ओमजी आ गये बोले भाई साहब क्या एकटक निहार रहे है ।

किशन–कराहता हुआ भविष्य ।

ओमजी–भाई साहब जब तक भ्रष्टाचार है तब तक सारी कराहे जवां रहेगी । आओ घर चले । इनते में एक पत्रकार महोदय आ गये । पत्रकार महोदय आक्रोश का शिकार हुई बस का फोटो कई ऐंगल से खीचने लगे । कुछ देर में पत्रकार महोदय भी अपनी जिम्मेदारी पूरी कर चले गये । स्कूल के पास कुछ पुलिस जवानों के साथ कोई नहा था । कुछ घण्टे पहले जहां दंगा हो रहा था । लोगों का तांता लगा हुआ था । अब वहां पूरी शान्ति थी । किशन अपने काम पर चले गये । कुछ ही देर में किशन के परिचितों ने ने फोन लगाना ऐस शुरू किया की फोन की घंटी बन्द होने का नाम ही नही ले रही थी । गीता जबाब दे देकर परेशान हो गयी । सब एक ही बात कहते भाई साहब को फोटो

अखबार में देखा है इसलिये फोन किया है । भाई साहब आये तो जरूर बताना हमारा फोन आया था । श्रीमती गीता फोन की घण्टी से परेशान तो थी पर मन में खुशी भी थी पतिदेव का बड़ा फोटो अखबार में जो छपा था । वे उधेड़बुन में थी कि कहीं बड़े साहब तो नही हो गये पर दूसरे पल उनकी खुशी पर वज्रपात हो जाता सोचती उनकी किस्मत में कहां । यदि किस्मत में होती तो कब के बड़े अधिकारी हो गये होते पर कुछ लोगों की कागदुष्टि उन पर ऐसी पड़ी की बड़ी–बड़ी डिग्री के बाद भी क्लर्क की नौकरी भी चैन से नही कर पा रहे है । भेद की दीवार खड़ी करने वाले रिसते जख्म खुरचते रहते है । भला अधिकारी कैसे बनने देगे । अपने पास कोई बड़ी पहुंच भी तो नही है ।दूसरे पल कोई अनहोनी का डर सताने लगता । काफी माथा पच्ची के बाद दफतर में फोन लगा दी । संयोगबस किशन ने ही फोन उठाया श्रीमती गीता आवाज पहचन कर बोली क्यों जी तरक्की हो गयी क्या ?

किशन–कहां से समाचार मिला ।

श्रीमतीगीता–सच आप साहब बन गये आप । आज मैं बहुत खुश हूं ।

किशन–कहां से समाचार आप तक पहुंच गया । मुझे तो कुछ पता नहीं ।

श्रीमतीगीता–दुनिया जान गयी । आपको पता नही ।आपके जाते ही सभी जानने वालों के फोन आने का सिलसिला अभी तक जारी है ।
किशन–क्या ?
श्रीमतीगीता–हां । सभी आपकी फोटो छपने का समाचार बता रहे थे ।
किशन–सुबह वाले अखबार में तो कुछ नही छपा है ।
श्रीमतीगीता–अरे दोपहर का कोई बड़ा अखबार है । देखो अखबार घर लेकर आना और कम से कम पाव भर रसमलाई जरूर लाना ।
किशन–ठीक है । अब फोन रखो । बिल बढ रहा है ।
श्रीमतीगीता–चहकते हुए बोली बाय बड़े साहब ।
किशन किसी अनहोनी के डर में भयभीत होने लगा । बड़ी मुश्किल से दफतर से सूरज डूबने के बाद निकल पाया । अखबार की दुकान पर पहुंचा । सभी लोग किशन को घूर–घूर कर देख रहे थे । वह समझ ही नही पा रहा था कि असल माजरा क्या है ?
दुकान वाला मोड़कर अखबार किशन की ओर बढाते हुए बोला लो साहब आप इसे खोज रहे है ना । कितनी बड़ी फोटो छापी है अखबार वाले ने आपकी । साहब दीजिये एक रूपया ।

किशन पाकेट से एक रूपया निकाला अखबार वाले के हाथ पर रखा । अखबार लिया अखबार का पहला पन्ना खोलते ही होश उड़ गये। खड़े किशन और और जाते हुए ओमजी की फोटो अखबार नवीस ने बड़ी बारीकी से खींची थी । फोटो देखने पर ऐसा लग रहा था कि असली दंगाई किशन ही हो और ओमजी कुछ दूर भागते नजर आ रहे थे । जिम्मेदार पत्रकार असली बुराई से कोसो दूर थे । तस्वीर के नीचे छपा था क्रुध्द भीड़ और स्कूल की क्षतिग्रस्त बस । उखड़े पांव किशन घर पहुंचे । श्रीमतीगीता होठो पर मुस्कान लिये दरवाजे पर खड़ी मिली । किशन अखबार हाथ पर रखते हुए बोले ये हंसते जख्म ।
श्रीमतीगीता–बाप रे समाचार ने तो मेरी खुशी पर मुट्ठी भर आग डाल दिया ।

14–नेकी बना अभिशाप

अतिपिछड़े छोटे से गांव में दरद्रिता के दलदल में धंसा माधव रहता था । वह अपने भाई भतीजों को खुशहाल बनाने के लिये गांव के जमीदार कंसबाबू का बंधुआ मजदूर बन गया था । माधव का त्याग सफल हो गया,उसका बड़ा भाई केशव कलकते में नौकरी करने लगा । सबसे बड़ा भाई राघव केशव की ससुराल में वारिस न होने की वजह से चारो

भाईयों के नाम रजिस्ट्री हुई पांच बीघा जमीन पर खेती करने लगा था। माधव का सबसे छोटा भाई उधम तो बचपन से कुछ अंवारा किस्म का था वह भी गांव से शहर जा बसा । माधव अपने और परिवार के स्वर्णिम कल के सपने खुली आंखों से देखने लगा । कुछ बरस में ही केशव और उसकी घरवाली कजरी की नियति में खोट आ गयी । कजरी पांच बीघे खेत से उपजे कुण्टलों अनाज से एक दाना और केशव की कमाई से पैसा भी न देने की कसम खा ली । अब क्या माधव पर वज्रपात हो गया । राघव अपने सगे भाई केशव का मजदूर होकर रह गया । केशव और उसकी पत्नी कजरी पर लोभ का भूत सवार हो गया जबकि औलाद के नाम पर बस एक कन्या थी । केशव वही भाई था जिसके गुणगान करते राघव और माधव नही थकते थे । राघव ने तो केशव के गुणगान में बना डाला था । जहां चार छः लोग इक्ट्ठा हुये कि राघव गाने लगता था ।

भइया हो तो बस अनपे केशव जैसा
अपना केशव तो चांद जैसा ।
ना आये आंच कभी रिश्ते पर अपने
बना रहे प्यार सदा सच होवे सपने ।
भईया का प्यार करे खुशहाल
केशव की खुशी पर परिवार निहाल ।
भईया केशव भय्यपन का सरताज,

स्वार्थ के युग में ऐसा भाई कहां मिले आज ।
राघव और माधव का गुमान केशव की दगाबाजी के सामने नही टिक सका । केशव और उसका दमाद प्रभु जो कचहरी में मुलाजिम था साजिश रचकर सत्रह साल पुरानी रजिस्ट्री नोट के बण्डल परोस कर रद्‌द करवा लिया । चुपके चुपके केशव सारी जमीन अपनी इकलौती बेटी के नाम करवा लिया । किसी को भनक तक न लगने दी । कई बरसों के बाद राघव को दाल में कुछ काला लगा वह छानबिन करने लगा । इसकी भनक प्रभु को लगी वह साजिश से परदा हटता देखकर राघव को रास्ते से हटा दिया और इल्जाम राघव के माथे मढ दिया गया आत्महत्या का ।
राघव की घरवाली बहुत बरस पहले उससे नाता तोड़कर मायके जा बसी थी नवजात शिशु उजाला को माधव की चौखट पर फेंक कर। । माधव की नवविवाहिता घरवाली धनरी ने भेड़ बकरी और खुद तक की छाती चटाकर उजाला को पाल पोष ली । राघव के मरते ही बंधुवा मजदूर माधव की जैसे भुजायें कट गयी । वह बेसहारा हो गया । मुश्किलों के समय में कोई सहारा देने वाला न रहा । पैतृक घर पर परिवार वालों का कब्जा हो गया । माधव और उसके बच्चों को सिर छिपाने की जगह न बची। जमींदार का हाथपांव जोड़कर वह बस्ती से कुछ दूर गांव समाज की जमीन पर मड़ई डालकर बसर करने लगा ।

गरीबी के दलदल में फंसे माधव को उबरने का कोई रास्ता दूर दूर तक नजर नही आ रहा था । बेचारे माधव के पास तंगी, भूमिहीनता, रोजी रोटी का कोई पुख्ता इन्तजाम नही । दिन भर जमीदार के खेत और चौखट पर हाड़फोड़ने की दो सेर मजदूरी इसके बाद भी माधव ने हार नही माना । उजाला को अपने बड़ा बेटा माना उसे पढाने लिखाने में जुट गया जबकि वह खुद लाख दुख भोग रहा था । माधव के त्याग से उजाला आठवीं जमात का इम्तहान भी पास कर लिया । माधव उसे आगे पढाना चाहता था पर ना जाने क्यूं उजाला माधव और उसके परिवार को सांप की तरह फुफकारता रहता था । धनरी इतनी सन्तोषी औरत थी कि उजाला की हर गलती माफ कर देती कहती बेटा पढाई पर ध्यान दो आगे बढो । अपने बच्चों की तरफ इशारा करते कहती अपने भाई बहनो को तुम्हे हा आगे ले जानस है । बेटा हम तो अपनी औकात के अनुसार तुमको कोई तकलीफ नही पड़ने दे रहे है । अगर कोई दुख तकलीफ पड़ रहा है तो बेटा इसमें हमारी कोई गलती नही है । तुम तो अपने काका की कमाई देख ही रहे हो । हमारा सपना है कि तुम पढ लिखकर साहेब बनो । बेटा हम गरीब का मान रख लेना । उजाला माधव और धनरी के त्याग को कभी भी नही माना । वह बस्ती वालो से कहता मेरी मां छः दिन का छोड़कर भाग गयी तो काका काकी को मुझे नही पालना था

फेक देना था । कुत्ते बिल्ली खा गये होते । धनरी के कान तक ये बाते पहुंचती को तो वह घण्टो रोती पर माधव से कुछ ना कहती । माधव तो भोर में जमीदार की चौखट पर हाजिरी लगाकर काम में लग जाता । पूरी बस्ती सो जाती तब वापस आ पाता । आठवीं का रिजल्ट आया ही नही उसके पहले उजाला शहर भाग गया । शहर में एक कम्पनी में नौकरी करने लगा और बाकी समय में डाई–मेकिंग का काम सीखने लगा। कुछ महीनों में उजाला एक कामयाब मिस्त्री बन गया । अच्छा पैसा कमाने लगा । बड़ा मिस्त्री बन गया ।उसकी कामयाबी के चर्चे पूरे शहर में होने लगे थे । उजाला अपनी कामयाबी की खबर से माधव को कोसो दूर रखा । माधव को जब कभी चिट्ठी उजाला लिखता तो बस यही लिखता कि कामधाम नही चल रहा है मैं बीमार हूं । उजाला के बीमारी की खबर सुनकर माधव और धनरी रो उठ्ते । बड़ी मुश्किल से अर्न्तदेशीय खरीदते उजाला को चिट्ठी लिखवाते बेटा कुछ दिन के लिये घर आ हवा पानी बदल जायेगा तो तुम्हारी सेहद सुधर जायेगी । उजाला के दिल में तो विश्वासघात था उसे गिरगिट की तरह रंग बदलने भलिभांति आता था । मां बाप की हैसियत से माधव और धनरी चिन्तित रहते । शहर गये उजाला को कई बरस बित गये पर वह कभी गरीब माधव

की ओर नही देखा एकाध बार गांव गया भी तो आश्वासन के अलावा और कुछ नही दिया ।
उजाला के ससुराल वाले गौने देने के लिये माधव पर जोर देने लगे । माधव ने उजाला का ब्याह तीन चार साल की उम्र में ही कर दिया था । माधव उजाला के गौना की दिन तारीख पक्की कर चिट्ठी लिखवा दिया । गौना चार दिन पहले उजाला आ गया । इस बार काका काकी और छोटे भाई बहनों को कपड़े भी लाया और माधव के हाथ पर सौ रूपया भी रख दिया । माधव को तो जैसे दुनिया की दौलत मिल गयी । वह इस खुशी के आगे गौने के खान खर्च के लिये जमीदार से उधार को एकदम से भूल गया । क्यो न भूलता उजाला ने जो कहा था काका तुम चिन्ता ना करो सब दुख दूर हो जायेगा । भतीजे के इस शब्द ने तो और अधिक दुख सहने की शक्ति जैसे दे दी । माधव बोला बेटा तुम खुश रह यही हमारी सबसे बड़ी दौलत है । तुमको देखकर खुश रह लूंगा ।
बड़ी हंसी खुशी उजाला का गौना आया । गौना कराकर महीने भर बाद उजाला शहर चला गया । दो महीने के बाद ससुराल से सीधे अपनी पत्नी उर्मिला को अपने ससुर को खत लिखकर शहर बुलवा लिया । उर्मिला के शहर पहुंचते ही बचाखुंचा नाता भी उजाला ने माधव से खत्म कर उसकी नेकी पर मुट्ठी भर आग डाल दिया ।

कई साल पहले राघव मर गया या या मार दिया गया । राघव के जीते जी उजाला ने उसे कभी बाप का दर्जा नही दिया । उसके जीवन और मौत से उजाला को कोई फर्क नही पड़ा यदि किसी को फर्क पड़ा तो माधव को । राघव की मौत को प्रभू केशव और केशव के समधी दुधई ने सदा के लिये अबुझ पहेली बना दिया पर लोग दबी जुबान हत्यारा इन्ही तीनों को कहते । उजाला के मुंहमोड़ लेने से माधव एकदम अकेला होकर रह गया । बेचारा कभी काल कम से कम चिट्ठी लिखवा कर अपनी पीड़ा पर मरहम तो लगा लेता था । वह भी सहारा खत्म हो गया ।

उजाला का गौना आये कई साल बित गये । वह एक लड़की दो लड़के का बाप बन गया । लड़की ब्याह लायक हो गयी । पन्द्रह साल के बाद फिर उजाला की चिट्ठी आयी पुरानी चिट्ठी की तरह ही रोना काका मैं बीमार हूं । परिवार को शहर में रखना बहुत महंगा पड़ रहा है । काका मुझे रहने का ठिकाना दे देतो मैं बच्चों को गांव में छोड़ देता । अब क्या हर महीने उजाला की चिट्ठी आने लगी । उजाला की चिट्ठी पढवाकर माधव और धनरी रो उठते । एक दिन अचानक उजाला परिवार सहित आ धमका ।

धनरी उजाला के बच्चों को छाती से लगाकर बिलख बिलख रोने लगी ।

उजाला–काकी ना रो। ये बच्चे तेरे पास ही रहेगे । काकी मेरा खोया हक दे देना बस ।
सीधी साधी धनरी बोली – हां बेटा । दाना पानी कर बहुत थक गया होगा । तेरे काका तो जमींदार की बीटिया के ब्याह में लगे है । दिन रात गांव गांव से खटिया ढो–ढोकर ला रहे है । मैं भी वही गोबर डालकर आ रही हूं । सुबह से लट्के लट्के कमर टूट गयी । जमींदार के बेटी का ब्याह है दिन रात एक हमारी हो रही है । अपनी बीटिया के ब्याह में हम इतना परेशान नही हुए थे ।
उजाला–काकी मेरी भी बीटिया ब्याह करने लायक हो गयी है । काकी तुमको हवेली जाना है तो चली जा उर्मिला रोटी बना लेगी ।उजाला परिवार सहित गांव आया है कि खबर माधव को लगी वह भी दौड़ता हांफता आया ।
उजाला– माधव का पांव छूते हुए बोला काका अपने चरणों में जगह दे दो ।
माधव–क्या कह रहे हो उजाला । शहर की कोठी छोड़कर यहां रहोगे । मेरे चरणों में भला तुम्हारे जैसा बड़ा सेठ कैसे रहेगा । बेटा जब तक रहना हो रह ले । जो रूखा सूखा मुझ गरीब की झोपड़ी में बनेगा खा लेना । पोता पोती को कुछ दिन खेलाने का सुख भोग लूंगा ।अभी तक तो गरीबी और अपने ने बहुत रूलाया है । कुछ दिन बच्चों के साथ

हंस खेल लूंगा किसी बड़े सूख से कम नही होग हमारे लिय ।
उजाला–काका मैं अब तुमको दुख नही दूंगा । खूब बच्चों को खिलाओ । बच्चों के रहने के लिये पिछवाडें की मड़ई दे दो । जब तक हम रहेगे बना खा लेगे । हां खान खर्च का भार तुम्हारे उपर नही डालूंगा ।
माधव–क्या........?
उजाला– हां काका । अलग रहूंगा बस कुछ दिन रहने का ठिकाना दे दो ।
माधव–द्वारिका की मां सुन रही हो । कितनी आसानी से दिल पर आरा चला दिया है इस उजाला ने । बीस साल के बाद भी नही बदला उजाला । सांप की तरह अभी भी फुफकारता है ।
धनरी–ठीक है । पढा लिखा है समझदार है । कुछ सोच समझकर ही कहा होगा । हम तो ठहरे गंवार । क्या समझे शहर की भाषा ? ठीक है बेटा रह ले जब तक चाहे । द्वारिका,हरिद्वार, गंगा,जमुना,गोमती और सरस्वती बीटिया की तरह तुमने भी तो मेरी छाती चाटकर पले बढे हो। हां तब इन बच्चों का जन्म नही हुआ था । अपनो पर विश्वास नही करेगे तो जमाने में फिर किस पर विश्वास करेगे , जेठ देवर, खानदान तक के लोगों ने धोखा दिया है । बेटा अब और दिल ना दुखाना ।

उजाला– काकी क्या कह रही हो ?
माधव–बेटा एक मां के आंसू का मोल रखना । मां की ममता पर मुट्‌ठी भर आग मत डालना । कोई एतराज नही है । अलग रहो या एक में । पोते पोती को भर आंख देखकर स्वर्ग का सुख मिल गया ।
उजाला–काका कोई दगाबाजी नही करूंगा ।
माधव काम पर चला गया । धनरी दाना पानी का इन्तजाम झटपट कर पिछवाड़े की मड़ईनुमा कच्चे घर को लीपपोत कर साफ सुथरी कर दी । उजाला का परिवार मड़ईनुमा कच्चे घर में रहने लगा । हफते भर में उजाला शहर गया फिर आ गया । दो बीघा जमीन लिखवा कर और मड़ईनुमा कच्चे घर की जगह पर पक्का मकान बनवाने की शुरूवात कर शहर चला गया । माधव ने खुशी खुशी मड़ई की जमीन दे दिया। माधव उजाला के षणयन्त्र को तनिक नही समझ सका । चार महीने में पक्का मकान बन गया । अपने झोपड़ीनुमा घर के पास भतीजे के पक्के मकान को देखकर माधव बहुत खुश था । साल भर के अन्दर उजाला की बीटियाका ब्याह तय हो गया । बीटिया के ब्याह में माधव ने भी जी जान लगा दिया । खानदान की नाक का सवाल जो था । ब्याह बिताकर उजाला शहर चला गया । कुछ महीने के बाद फिर सुबह सुबह शहर से आ गया । रात में माधव जमीदार के काम से आया । माधव के आने की

खबर लगते ही वह माधव से मिलने गया । माधव का पांव छुआ ।
माधव - उजाला को जी भर कर आशीश दिया और बोला बेटा बहुत ठण्डी है ओलाव सेको । द्वारिका शाम को ही जला देता है । मड़ई गरमा जाती है सब पुआल में दुबक कर सो जाते है।
उजाला- हां काका ठण्ड तो है । काका मैं तुम से आज्ञा लेने आया था ।
माधव-कैसी आज्ञा बेटवा ।
उजाला- काका तुमने मुझे मड़ई की जगह देकर मेरे उपर बड़ा उपकार किया है ।
माधव-बेटा उजाला उपकार कैसा । मैंने तुमको तब अपनी छाती से लगाया था जब तू सिर्फ छः दिन का था । तेरी मां तुमको भइया को और घरबार छोड़कर मायके जा बसी थी । मैं और तेरी काकी रात रात भर जागे है । पास में रहेगा तो हमें भी बहुत खुशी होगी । इसलिये द्वारिका और हरिद्वार का हक मारकर तुमको घर बनाने की जगह दे दिया । बेटा तू सूखी रह । तेरी सूरत में मुझे राघव भइया नजर आते है । मेरे विश्वास को बनाये रखना ।
धनरी-द्वारिका के बापू रोटी ओलाव के पास बैठकर खा लो ।
माधव-आज कोई नयी बात है । रोज तो ओलाव तापते तापते खाकर यही पुआल में सो जाता हूं ।

उजाला–काका रजाई क्यो नही बनवा लेते । आठ प्राणी हो कम से कम चार रजाई तो होनी चाहिये ।
माधव– सोचता तो हर साल हूं पर बन नही पाती है । जब द्वारिका कुछ कमाने धमाने लगेगा तो रजाई भी बनेगी गद्दा और तकिया भी ।
उजाला–जरूर द्वारिका कमायेगा काका । काका ये लो ।
माधव–क्या है ।
उजाला–काका मिरचहिया गांजा है ।
माधव–जरा सन्तू को आवाज दे दो ।
धनरी– दो चिलम पहले ही पी चुके हो । अब मिरचहिया पीओगे तो सुबह उठ नही पाओगे । जमीदार दरवाजे पर आकर उलटा सुलटा बोलने लगेगे । कल पी लेना मिरचहिया अभी तो रोटी खाओ और सो जाओ । दिन भर हाड़फोड़ें हो अराम करो ।
माधव–ठीक है लाओ ।
धनरी–लिट्टी और गुड है थाली में । थाली के बाहर हाथ नही करना । नही तो ओलाव की आग मुट्ठी में आ जायेगी ।
माधव–हां भागवान मुझे भी मालूम है । इतना नशा अभी नही चढा है। उजाला खायेगा गुड रोटी । लो तनिक खा लो ।

उजाला–तुम खाओ । मै खा चुका हूं । उर्मिला मुर्गा बनायी थी,दरपन का दोस्त आया था । उसके साथ मैने खा लिया है । काका एक बात करने आया था तुमसे कहो तो कहूं।
माधव–कौन सी बात है बोल,रोटी खाते समय दांत काम करेगे कान थोड़े ही ।
उजाला–मेरे पक्के मकान के सामने वाली जमीन दे दो ।
इतना सुनते ही माधव के गले में रोटी अटक गयी । वह गिलास भर पानी के सहारे रोटी का निवाला पेट में ढकेलते हुए बोला क्या ?
उजाला–हां काका । मड़ई वाली जगह तो मुझे चाहिये ।
माधव– मुझे लोग पहले आगाह कर रहे थे कि माधव भतीजे पर विश्वास न करो । भतीजा और भेड़ा पर विश्वास करने वाला जरूर मुंह के बल गिरता है । काश मैं पहले सोच लिया होता । मड़ई की जगह देकर गलती कर दिया क्या ? तू मेरे बच्चों का ठिकाना छिनना चाहता है अंगुली पकड़ कर तु मेरा हाथ उखाड़ना चाहता है क्या?
उजाला–नहीं मैं तो कह रहा हूं कि मेरे घर के सामने से मड़ई अच्छी नही लग रही है । हटा लो बस ।
माधव–मड़ई लेकर जाऊंगा कहां ।
उजाला–किनारे हो जाओ । अभी पश्चिम की तरफ तो जमीन है ।

माधव–दो खटिया की जगह में मेरे दो बेटे कैसे रहेगे । उजाला अब मैं तेरी चाल समझ गया ।

उजाला–काका मैं जो चाह रहा हूं वही होगा ।

माधव–क्या हमे बेघर कर देगा ? जिन्दगी भर के लिये जख्म देगा ।

उजाला–घर में रहो या बेघर हो जाओ । मेरे घर के सामने वाली जमीन तो मेरी होकर रहेगी अब । जख्म नही हंसते जख्म में जीना होगा काका तुम्हें ।

माधव–धमकी दे रहा है ।

उजाला–धमकी तो नही अपनी राह का कांटा हटाने को जरूर कह रहा हूं ।

माधव–हम तुम्हारी राह के कांटे हो गये है। भूल गये वो दिन जब तुमको सुखे में सुलाते थे। गीले में बारी बारी से हम और तुम्हारी काकी तुमको लेकर सोते थे । कितनी बार तुम मेरी जांघ पर टट्टी कर दिया करते थे । सब व्यर्थ हो गया किया कराया । बेटा नेकी को बदनाम ना कर।

उजाला–काका जमीन तो लेकर रहूंगा । चलता हूं । तुम रोटी खाओ और सो जाओ ।

माधव– क्या मेरी नेकी मेरे लिये अभिशाप बन गयी है।

उजाला–नेकी क्यों किया ? हमने कहा था क्या कि मुझे पालो ? अरे मेरी मां छोड़कर भाग गयी थी तो तुमको पालने की क्या जरूरत थी ? फेंक देते कुत्ते बिल्लियों के

आगे मेरे मां बाप की तरह । झगड़े वाली जमीन को लेकर फैसला कल दे देना ।
उजाला धनरी और माधव का चैन छिन कर चला गया । धनरी और माधव रात भर ओलाव के पास बैठे चिन्ता की चिता में सुलगते रहे । एक दूसरे का मुंह ताकते रहे बेबस सा । मुर्गा बोलना शुरू किये । माधवा कुल्ला-फराकत करने चला गया । नित-कर्म से निपट कर आया । भैंस की हौदी धोया । पानी चारा डाला । भैंस को हौदी लगा कर जमींदार की मजदूरी पर चला । धनरी भी अपने काम में लग गयी । उधर उजाला भी रात भर जमीन हड़पने की उधेड़-बुन में नही सो पाया था । वह सूरज निकलते ही दरवाजे पर हाजिर हो गया काका... काका... की आवाज लगाने लगा ।
धनरी-वो तो काम पर चले गये क्यो बुला रहे हो ?
उजाला-क्या फैसला किया काका ने ?
धनरी-कैसा फैसला । अरे अपने बच्चों को ठिकाना तुमको कैसे सौप देगे । हमारा जो फर्ज था । जिम्मेदारी के साथ निभाया । अब बेघर तो नही हो सकते ना ।
उजाला-घर -बेघर से मुझे क्या लेना । मुझे तो बस अपनी हवेली के सामने से मड़ई हटवाना है ।
धनरी-क्या ?
उजाला-हां ।
धनरी-तुम्हारी हवेली की नींव हमारी छाती पर पड़ी है ।

उजाला– हवेली है तो हमारी ना । देखता हूं कब तक काका आंख मिचौली खेलते है । आंख मिचौली का जबाब मेरे पास है ।
धनरी– क्या करोगे। थाना पुलिस लाओगे । रूपया और ताकत के भरोसे हमे बेघर कर दोगे ।
उजाला– उजाला नाम मेरा तुमने ना जाने क्या सोच कर रखा है पर मैं सांप का बच्चा हूं मेरी मां नागिन थी। जानती हो दूध पीलाने वाले को भी सांप डंसने से परहेज नही करता । आज और काका के फैसले का इन्तजार कर लेता हूं । आये तो कह देना बस ....
धनरी–क्यों दूध के बदले जहर देने पर तूले हो । अरे तुम्हारी मां ने तुमको फेंक दिया तो क्या हमने तुमको अपनी छाती से नही लगाया ? मेरे दूध का यही कर्ज चुका रहे हो । अरे तुम्हारे पास तो पद और दौलत दोनों है तुम चाहते तो और भी कहीं जगह लेकर महल खड़ी कर सकते थे । तुम्हारी नजर हमारी मड़ई पर ही क्यो टिकी है ? मेरी माटी की दीवाल अब तुम्हे भा नही आ रही है । तुम मेरे माटी की दीवाल ढहाकर पक्की हवेली की शान में हीरे जोड़ना चाहते हो । मै ऐसा नही होने दूंगी । दक्षिण तरफ लकडी के सहारे खड़ी मड़ई को माटी के दीवाल खड़ी करने के उपक्रम में बच्चों के साथ लग गयी। उजाला–काकी तू कितनों भी माटी की दीवल खड़ी कर ले ये जमीन मेरी

होकर रहेगी । मेरा भी हक बनता है । चार हिस्सेदारों की जमीन तुम अकेले ले लोगी क्या ? देखता हूं तुम्हारी मड़ई कैसे खड़ी रहती है मेरे पक्के मकान के सामने ।

धनरी–तुम मेरी मड़ई गिरा दोगे क्या ? मैं भी देखती हूं कैसे जर्बदस्ती कब्जा कर लेते हो । कब्जा करने के लिये तुम्हे हमारी लाश पर से जाना होगा ।

काकी ऐसी बात है तो वह भी कर सकता हूं कहकर उजाला केशव के दमाद प्रभु से मिला जो उसके बाप का कातिल था । उसी के साथ साठगांठ किया माधव की जमीन हड़पने के लिये । कुछ बदमाशों को दारू मुर्गा देकर माधव और उसके परिवार को डराने धमकाने के लिये लगा दिया । प्रभु को इसी दिन का जैसे इन्तजार था । उजाला को अपने जाल में फंसता देखकर चारा डाल दिया । वह तो कचहरी में काम करता ही था इधर उधर करके हफते भर स्टे आर्डर जारी करवा दिया ।

उजाला चारो ओर से दबाव तो बनाये हुए था । माधव और उसका परिवार डरा सहमा रहने लगा था । कोई उसकी मदद के लिये आगे नही आ रहा था । माधव गांव के मुखिया प्रधान सबके आगे माथा पटका पर कहीं सुनवाई नही हुई । आखिरकार एक दिन सुबह सुबह ही पूरा थाना लेकर उजाला आ धमका। पुलिस वाले माधव माधव की आवाज देने लगे और उजाला के गुण्डा मड़ई गिराने में जुट गये। माधव

घबराया आंखों में आसू लिये हाजिर हुआ दरोगाजी को सारा वृतान्त सुनाया । माधव के आसूं सच्चाई उगल गये । दरोगाजी बोले- क्यो नेकी को अभिशापित कर रहे हो उजाला ।

दरोगा जी की बात को सुनकर बस्ती के दो चार लोगों का जमीर जागा । वे माधव के पक्ष में दबी जुबान बोलने लगे ।

अब क्या घुरहू प्रधान भी आगे आ गये और बोले दरोगा जी अब अन्याय होगा इस गांव में । नेकी अभिशाप नही बनेगी । हमारी आंख खुल गयी है ।

दरोगाजी कोरा कागज मंगवाये। सुलहनामा तैयार हुआ । उजाला को बुलाये दरोगाजी ।

उजाला हाथ जोड़कर खड़ा हुआ । दरोगा जी ने कहां उजाला सबके सामने हकीकत आ चुकी है कि तुम कितना दगगाबाज है पर तुमको कुछ कहना हो तो कह सकते हो ।

उजाला- पंचों काका ने मुझे जो दिया है वह बहुत है ।काका काकी के एहसान तले इस जन्म क्या कई और जन्म भी नही उबर सकता हूं । मेरे मन में खोट आ गयी थी इसी वजह से गलती हो गयी । काका की जमीन पर अब मेरी बुरी नजर नहीं पड़ेगी । मैं बहुते शर्मिन्दा हूं । हो सके तो मुझे माफ कर देना ।

दरोगाजी–सुलहनामें पर दसख्त करो । गांव वालों से ही नही माफी माधव से मागों । माधव ने माफ कर दिया तो समझो भगवान ने माफ कर दिया । तुमने तो गरीब की नेकी पर मुट्‌ठी भर आग डाल ही दिया है । नेकी के बदले बद्‌नेकी तो महापाप है । माधव का पैर पकड़ कर माफी मांगो । खुद दरिद्रता के दलदल में धंसा रहकर भी तुमको उपर उठा दिया । तुमने नेकी को अभिशाप बना दिया । माधव तुम्हारे लिये भगवान से कम नही है उजाला ।
उजाला–माधव का पैर पकड़ लिया ।
माधव की आंखों से तर–तर आंसू बह निकले वह उजाला को झट से गले लगा लिया ।

15–चोरनी

सूरज डूब चुका था । अंधियारा पसरने को उतावला था । पंक्षियां अपने अपने घोंसलों की ओर भाग रहे थे ।घरों से निकलने वाला धुआं अभी साफ साफ नजर आ रहा था । खेत में काम करने वाले मजदूर घर लौट रहे थे या खेत मालिकों की हवेली सलाम ठोकने भागे जा रहे थे । रामू दादा भी खेत में काम कर हवेली गये । वे फावड़ा वहां रखे दो चार टहल मालिक की बजाये और घर वापस आ गये । घर पहुंचे ही नही बाहर से आवाज लगाने लगे अरे दीनु की मां घर में हो क्या ? या किसी के घर चिलम गुड़गुड़ाने में

लगी है । काम पर से आओ तो कभी डयोढी पर मिलती नही ।
शान्तिदेवी –तनतनाते हुए बाहर आयी और बोली तुम खेत में काम करके आ रहे हो तो क्या मैं घर में खाली बैठी रहती हूं । रोटी तोड़ती रहती हूं । मैं भी दिन रात एक कर रही हूं । इधर उधर चिलम की जुआड़ में नही भटकती रहती ।ऐसी होती तो आज तुम ऐसे बात ना करते । तुम्हारा एक पैसा फिजूल खर्च नही करती । पाई पाई जोड़ती हूं । ये माटी का घर सिर्फ तुम्हारी कमाई से नही खड़ा है । देखो मेरे सिर के बाल झड़ गये । इस घर को बनाने में माटी ढो–ढो कर। जब देखो तब आग उगलते रहते है । अरे अभी तक तो अकेले चिलम नही गुड़गुड़ायी आज कहां से सूरज पछिम से उग गया कि चिलम लेकर बैठ गयी । नन्हकी को चुप करा रही थी । पुष्पा चूल्ह चौके में लगी है ।
रामू–भागवान क्यों नाराज हो रही है । चार बार बुलाया एक बार भी नही बोली । घर में तुम हो या नही कोई आहट नही ।
शान्तिदेवी – हां मेरी आहट अब तुमको नही लगेगी । वो दिन भूल गये जब मेरी आहट तुम्हारे नथूनों को लग जाती थी । मैं भी वही हूं तुम भी । देखो समय कितना बदल गया कि तुम्हे मेरी आहट नही लग रही है ।ये तो होना ही था । लो खटिया डाल दी बैठो । मैं पानी लाती हूं ।

शान्तिदेवी झटपट गुड़पानी देकर चिलम चढा लायी और रामू को थमाते हुए बोली लो तुम भी जी भर कर हुक्का गुड़गुडा लो दिन भर नही मिला है ना । कहते हुए वह खटिया पकड़कर चुपचाप बैठ गयी ।
शान्तिदेवी को मौन देखकर रामू बोला-दीनु की मां क्यों गुमसुम हो गयी ।बेटवा की कोई चिट्ठी आयी है क्या ? थोड़ी देर पहले बहुत ताना महना मार रही थी । एकदम से क्या हो गया ।
शान्तिदेवी-क्या करूं । झगड़ा करूं ।
रामू- देवी क्रोध ना करो । हमने तो क्रोध करने लायक कुछ नही कहा । क्यों उखड़ी उखड़ी बातें कर रही हो । क्या बात है ?
शान्तिदेवी-कोई बात नही है ।
रामू-कोई ना कोई बात तो है । बताओ ना क्यो दुखी हो रही हो अकेले । तकलीफ बांटने से कम होती है । देह दुख रही है क्या ? बताओ ना क्या बात है ? क्यों रोनी सूरत बनाये बैठी हो ।
शान्तिदेवी-क्या बताऊं । कई दिन से देख रही हूं ।
रामू-क्या देख रही हो ?
शान्तिदेवी-बोलने दो तब ना बताऊं ।
रामू- बीच में टोंक कर गलती कर दिया कैया ? बोलो क्या बताने वाली थी ?

शान्तिदेवी–सुनो ।

रामू–क्या सुना रही हो ?

शान्तिदेवी–सामने के घर से सुनाई दे रही गाली ।

रामू–अपने घर में कोई कुछ करे हमें क्या लेना ?

शान्तिदेवी–मुझे तो कुछ शंका हो रही है ।

रामू–क्यों ?

शान्तिदेवी–घमण्डीदेवी मुझे देखकर गाली देती है। दीनू के बाबू तुम कहो तो मैं पूंछू कि ऐसा क्यो करती है ।

रामू–क्या पूछोगी उस झगड़ालू से । गांव की कई लोगों को पीट चुकी है । अपने मर्द को भी बुरी बुरी गाली देती है कई बार मार भी चुकी है । गाली तो उसकी छठी पर चढायी होगी उसकी मां ने ।

शान्तिदेवी–गोधूलि बेला में गाली देना अच्छी बात तो नही है ।

रामू–दीनू की मां तुम उसको मना भी तो नही कर सकती । अगर कुछ बोली तो अपने गले पड़ जायेगी । आ बैल मुझे मार वाली बात होगी । छोड़ो जाने दो । ये थामों हुक्का तम्बाकू जल गयी ।

शान्तिदेवी–बाप रे इतना जल्दी एक चिलम तम्बाकू जल गयी ।इतना हुक्का पीओगे तो कहां से आयेगा। मैं इन्तजार में बैठी थी कि तुम पीकर मुझे दोगे ।

रामू–एक और चिलम चढा लो ।

शान्तिदेवी–नहीं रात हो गयी । दूसरे काम भी तो करने है । पुष्पा रोटी बना चुकी है । रोटी खाओ । तम्बाकू पीकर पेट थोड़े ही भरेगा । चलो खटिया घर में डाल देती हूं । यहां मच्छर बहुत लगने लगे हैं । रोहित ने अन्दर धुआं कर दिया है । मच्छर नही लगेगा । अच्छा बैठो मैं चिलम चढाकर लाती हूं । तुम बैठकर गुड़गुड़ाओ में तनिक घमण्डीदेवी से पूछकर आती हूं । कौन सी तकलीफ आ गयी है ।

रामू–ना तू ना जा खामखाह झगड़ा हो जायेगा ।

शान्तिदेवी–अरे मैं झगड़ा नही करने जा रही हूं हालचाल पूछने जा रही हूं ।

रामू–बहुत दया आ रही है । नही मान रही हो तो जाओ फिर आकर आंसू नही बहाना ।

शान्तिदेवी–मैं पूछकर आती हूं । तुम हुक्का गुड़गुड़ाओ ।

रामू–ठीक है जाओ ।

शान्तिदेवी भागी भागी घमण्डीदेवी के घर गयी ।बाहर से घमण्डी बहन घमण्डी बहन की आवाज देने लगी ।

घमण्डीदेवी भूखी शेरनी की तरह बाहर आयी और बोली अच्छा तू है ।

शान्तिदेवी–हां बहन मैं हूं । क्या बात है तू आजकल परेशान रहती है । बहन गाली देने से परेशानी खत्म तो नही होगी

। गाली कही जाती नही है । लौटकर अपने को ही लगती है । गाली देने से आत्मा भी अशुध्द होती है ।
घमण्डीदेवी–अच्छा तो तू समझाने आयी है चोरनी कहीं की ।
शान्तिदेवी– क्या कह रही हो ? होश में तो हो ? मुझे चारेनी कहते हुये तुमको शरम भी नही आयी । भला मैं और चोरनी ।
घमण्डीदेवी–हां हां तू चोरनी नही तो और कौन ? मेरी हंसुली चुराकर सुराहीदार गर्दन सजा रही है । चोरनी मुझे समझा रही है ।
शान्तिदेवी को काटो तो खून नही । वह बेसुध सी घमण्डीदेवी की फटकार सुनकर अपने घर की ओर दौड पड़ी , बरदौल तक आते आते गश खाकर गिर पड़ी । कई घण्टे वही पड़ी रही किसी को पता नही चला । काफी देर तक वापस न आने पर रामू दादा लालटेन लेकर ढूढने निकले । बरदौल के पिछ्वाड़े शान्तिदेवी को बेसुध पड़ी देखकर चिल्ला उठे । रामू की चिल्लाहट सुनकर छोटा बेटा रोहित बड़ी बहू पुष्पा रोते हु दौड़ पडें । रोने की आवाज सुनकर दस–बीस लोग इक्ट्ठा हो गये । शान्तिदेवी को उठाकर लाये और दालान में खटिया पर लेटा दिये । कुछ देर में पूरी बस्ती इक्ट्ठा हो गयी । काफी देर के बाद शान्तिदेवी को होश आया ।
सभी उस हादशे को जानने के उत्सुक थे जिसके कारण शान्तिदेवी बेसुध हुई थी । शान्तिदेवी की आंखे पथरा गयी

थी । उनके कण्ठ से आवाज ही नही निकल पा रही थी । बड़ी कोशिश के बाद अटक अटक कर घमण्डीदेवी का अपने माथे मढा इल्जाम बयान कर पायी ।
रामूदादा को जैसे सांप सूंघ गया शान्तिदेवी की बात सुनकर । उसके मुंह से निकल पड़ा घमण्डीदेवी ने ऐसा कैसे कह दिया ?
मजियादादी बोली–रामू दादा और शान्तिदेवी को समझाते हुए बोली तुम लोग घमण्डीदेवी की बात से इतने दुखी हो । अरे पूरा गांव जानता है । वह औरत कितनी शरीफ और ईमानदार है । निरापद पर इल्जाम लगाते हुए उसकी जबान झर कर क्यों नहीं गिर गयी । देवी समान औरत के उपर इल्जाम लगाकर पाप का भागी बनी है । चोर की घरवाली चोरनी तो खुद घमण्डीदेवी है । दुनिया जान गयी है मंधारी बहन की मनौती का खस्सी उसका आदमी बाहुबलियों के साथ मिलकर काटकर खा गया । कितनी ओझाई सोखाई हुई तो जान बची है।
इतना कहना था कि दखौतीकाकी का भोंपू चालू हो गया वह बोली शान्तिबहन तू चिन्ता ना कर दुनिया चुडैल के बारे में जानती है । एक दिन जरूर हंसुली के चोरी से पर्दा हटेगा । देखना यही घमण्डी खुद अपना सिर पत्थर से कूचेगी । दुनिया इस मरदमरूई के मुंह पर थूकेगी । घमण्डी तो घमण्डी उसके लड़को ने भी उपद्रव मचा रखा है । देखा नही

अपने लड़कों से रोहित को पानी में पटवाकर कितना मरवायी थी । रामू घर पर थे देख लिये नही तो रोहित को मार डालते सब मिलकर ।शान्ति बहन तू अपनी आदत में बदलाव कर हर किसी के दुख तकलीफ में कूद जाती है । अरे तो इतनी भलमनसत ना दिखाती तो आज तेरे उपर कीचड़ नही फेंक पाती ना घमण्डी । क्रोध पाप है । तुम्हारे उपर फूट पड़ा घमण्डी का क्रोध ।
रामू–अरे आदमी होने के नाते फर्ज बनता है कि आदमी के दुख में तो काम आये ।
सुन्दरीदेवी–बबुआ ठीक तो कह रहे हो पर आदमी भी तो उस लायक हो । यहां तो आदमी के वेष में शैतान मौजूद है । ईमानदार और नेक इंसान के मुंह पर मुट्ठी भर आग मार रहे हैं ।
रामू–पूरा गांव जानता है इस घमण्डी का घर बनवाने में हमने क्या नही किया । गांव के बाहुबलियों से दुश्मनी तक ले लिया पर घर बनवा कर सांस लिया । वही घमण्डी हमारी बुढिया को आज चोरनी कह रही है ।
सुन्दरीदेवी–नेकी का फल जरूर मिलेगा भइया । भगवान के घर भले ही देर हो पर अंधेर नही हो सकती । बबुआ एक बात कहूं बुरा तो नही मानोगे ना ?
रामूदादा–घमण्डीदेवी कह रही है तो तुम भी कह दो जो जी में आये ।

सुन्दरीदेवी–बबुआ हम दिल दुखाने के लिये नही कह रही हूं ना ।
रामूदादा–कह दे भौजाई । तेरी भी सुन लूंगा । सबकी तो सुन ही रहा हूं ना कब से ।
सुन्दरीदेवी–बबुआ हर किसी के दुख तकलीफ में अब मत खड़ा हुआ करना । आज से कान पकड़ लो।
रामूदादा–भौजाई आज के जमाने को देखते हुए कह तो सही रही हो पर ना मुझसे और ना ही दीनू की महतारी से ही किसी की तकलीफ देखा जाती है । बुरा तो किसी का नही कर रहे है ना । आदमी नेकी नही मानेगा तो क्या भगवान तो मानेगा ?
सुन्दरीदेवी–देवरजी तुम्हारी यही सोच तो पूरे गांव में तुमको सबसे उपर उठाती है । नासमझ लोग है कि समझते नही।
सुन्दरीदेवी शान्तिदेवी को भर अंकवार उठाते हुए बोली चलो बहन उठो हाथपांव धो लो मन थोड़ा ठौरिक हो जायेगा । एकाध रोटी खाकर सो जाओ । घमण्डीदेवी का अभिमान जरूर चूर होकर रहेगा । सच्चे इंसान के उपर उगली उठायी है भस्म हो जायेगी । घमण्डी देवी ने बहुत बड़ा इल्जाम माथे मढ दिया है ।
शान्तिदेवी की बहू पुष्पा लोटे में पानी लेकर आयी सास से बोली अम्माजी उठो मुंह हाथ धो लो कुछ खाकर दवाई

खाओ । घमण्डीदेवी एक ना हजार इल्जाम लगाये कर ना तो डर कैसी ?
शान्तिदेवी- बीटिया कुछ मन नही कर रहा है ।
पुष्पा लोटे से पानी ली और शान्तिदेवी का मुंह धोकर अपने आंचल से मुंह पोछकर मुंह में रोटी तरकारी ठूसने लगी ।
शान्तिदेवी-बीटिया तुमने तो अपनी कर ली । अब तू भी जा खा ले और आराम कर रात काफी हो गयी है ।
पुष्पा-अम्मा दवाई तो खा लो ।
शान्तिदेवी-ठीक है लाओ वह भी जर्बदस्ती ठूस दो । देख नन्हकी रो रही है जा उसको सुला । मेरी फिक्र ना कर मैं मरने वाली नही हूं जब तक घमण्डी की हंसुली की चोरी से पर्दा नहीं उठता है । माथे से इल्जाम हटते ही सदा के लिये सो जाउूं भगवान ।
पुष्पा- अम्मा कैसी मनौती कर रही हो । ऐसा ना कहो अम्माा कहते हुए पुष्पा नन्हकी को चुप कराने । वह नन्हकी को चुप कराते कराते खुद भी सो गयी । उधर शान्तिदेवी की आंख से नींद गायब । रामू दादा भी करवटे बदल बदल कर थक गये पर उनसे भी नींद कोसों दूर । बार बार रामूदादा को करवटें बदलता देखकर शान्तिदेवी बोली दीनू के बाबू नींद नही आ रही है ।
रामू-कैसे नींद आयेगी । चोरी का इतना बड़ा इल्जाम सिर पर जो है ।

शान्तिदेवी–क्यों घबरा रहे हो । चोरी तो हमने किया नही है ।
रामू–किस किस का मुंह पकड़ेगे । कल आसपास के गांवों में बात फैल जायेगी ।
शान्तिदेवी घमण्डीदेवी की हंसुली चोरी हुई है तो किसी ने जरूर चुराया है। लेकिन वह इल्जाम मेरे माथे क्यो मढ दी ?
रामू–राज एक दिन खुल जायेगा । तुम थोड़ी देर आंख बन्द कर सोने की कोशिश करो । नींद नही आयी तो दिन भर सिर दुखेगा । पुष्पा क्या क्या करेगी ? नन्हकी भी तो रोती रहती है आजकल बहुत जिदी हो गयी है । शहर में दीनू बेटवा भी दुखी होगा यह सब सुनकर ।
शान्तिदेवी–इल्जाम माथे आ ही गया है । जब तक रहस्य से पर्दा नही हटता है तब तक तो इल्जाम की मुट्ठी भर आग में सुलगना ही है ।
घमण्डीदेवी के हंसुली की चोरी की खबर जंगल की आग की तरह फैल गयी । शान्तिदेवी ने चोरी की है इस बात को कोई मानने को तैयार ना था । धीरे घीरे छः महीना बित गया पर घमण्डीदेवी की हंसुली की चोरी का पता नही चला । एक दिन हैरान परेशान हरी बाबू आये रोहित से बोले रोहित बाबू सोनार की दुकान तक चलो बहुत जरूरी काम है

। रोहित –अरे कौन सा इतना जरूरी काम आ धमका हरी बाबू ।
हरीबाबू–हंसुली गिरवी रखना है । रूपये की सख्त जरूरत है ।
रोहित हरीबाबू के साथ बाजार सोनार की दुकान चले गये । रोहित बाबू को देखकर सोनार बोला कैसे आना हुआ डाक्टर बाबू ।
रोहित –हंसुली गिरवी रखने आया हूं ।
सोनी– रोहित बाबू क्या बात है आपके गांव का कोई आदमी हंसुली गिरवी रखता है तो कोई छुडवाता है ।
रोहित –कौन छुडवाकर ले गया ?
सोनी–गभरू । वही गभरू जो पहले ईक्का हांकते थे ।
हरीबाबू–अच्छा तो घमण्डी काकी की हंसुली गिरवी रखी गयी थी । चोरी के इल्जाम की मुट्ठी भर आग काकी के सिर पर दहक रही थी अब तक ।
हरीबाबू की हंसुली गिरवी सोनी ने रखकर रूपये दे दिये । रूपया लेकर हरीबाबू रोहित बाबू को साथ लेकर रिश्तेदारी में चले गये । इधर रात में गभरू सोये हुये बड़बड़ाया हंसुली पुआल में क्यों फेंक रही है । मिल गयी हंसुली । चोरनी फेंक गयी ।
घमण्डीदेवी– गभरू को जगाते हुए बोली क्यों बड़बडा रहे हो। हंसुली तो चोरनी पचा गयी ।

गभरू–नही पचा सकती । घर की देवी सपने ने मुझे बतायी है कि हंसुली पुआल के ढेर में हैं । चलो देखते है सच्चाई क्या है ?

घमण्डीदेवी और गभरू दोनो पुआल के ढेर के पास गये । गभरू के पहली बार में ही अंकवार में पुआल उठाते हंसुली हाथ में आ गयी । घमण्डी देवी झटपट हंसुली को गले में सजायी और रात भर गभरू से हंसी ठिठोली करती रही । खुशी के मारे उसकी आंखों से नीद उ़ड गयी थी । भोर हो गयी मुर्गा बोलने लगे । कुछ देर में उजाला हो गया अब क्या घमण्डीदेवी शान्तिदेवी के घर की ओर मुंह कर गाली देना शुरू कर दी ।

सूरज की पहली किरण के साथ हरीबाबू और रोहित भी आ गये । घमण्डीदेवी को गाली देते देखकर रोहित बोला क्यों गाली दे रही हो काकी ।

घमण्डीदेवी–क्यों गाली गोली जैसे लग रही है । अपनी चोरनी मां से पूछ । भूत–मेलान के डर से हंसुली पुआल के ढेर में फेक गयी । वाह रे चोरनी ।

रोहित –पंचायत में फैसला हो जायेगा । पंचायत बुलाने जा रहा हूं ।

गांव के प्रधान को बुलाने के लिये खुद दौ़ड प़डा और बस्ती वालों को रामूदादा बुलाने में जुट गये । कुछ ही देर में पंचायत इक्ट्ठा हो गयी ।

प्रधान–घमण्डी देवी मिल गयी तुम्हारी हंसुली ।

घमण्डी देवी–हां बाबू चोरनी पुआल में फेंक गयी थी तो मिलनी ही थी। कुछ दिन और रखती तो मेरी कुलदेवी चोरनी शान्तिदेवी के पूत को ना खा जाती । सत्यानाश की डर से पुआल में रख गयी । रात में कुलदेवी ने सपने में रंजीते के बाबू को सपने में बतायी थी। रंजीते के बाबू के पुआल उठाते ही हंसुली नीचे गिर पड़ी थी।

प्रधान–क्या यही सच है गभरू बेटा ।

गभरू शान्तिदेवी का पांव पकड़कर रोते हुए बोला माफ कर दो भौजाई चोरनी तू नही चोर मै हूं । मैने शान्तिदेवी को जीवन भर के लिये हंसते जख्म के समन्दर में झोंक दिया । घरवाली की चोरी से बाप के इलाज के लिये गिरवी रख दिया था । इक्ट्ठा लोग शान्तिदेवी की जय जयकार करने लगे । गांव वालों की श्रध्दा देखकर शान्तिदेवी की आंखों से झराझर मोती झरने लगे ।

16–रिश्ता

दुनिया में सबसे बडा कोई रिश्ता है तो वह है दर्द का रिश्ता । जानते हुए भी आज का आदमी मतलब के पीछे भागने लगा है । आज के इस युग में परमार्थी लोग तो कम है पर आदमियत को जिन्दा रखे हुए है । सेवाराम को विचार मंथन में देखकर ध्यानबाबू उनकी तरफ मुड गये और उनके

सामने खड़े हो गये पर सेवाराम बेखबर थे । सेवाराम को बेखबर देखकर वह जरा उुची आवाज में बोले क्या बात है सेवाराम क्यो नजरअंदाज कर रहे हो ।
सेवाराम हड़बड़ा कर बोले अरे ध्यानबाबू आप ?
ध्यानबाबू- हां मै। कहां खो हुए थे ।
सेवाराम-कही नही बाबू । सोच रहा था आज का आदमी जिस तरह से रिश्ते को रौद रहा है । अगर ऐसा ही होता रहा तो आदमी आदमी का ही नही होगा । आदमियत का रिश्ता भी लहूलुहान हो रहा है ।
ध्यानबाबू- आज का आदमी तो बस अपने स्वार्थ में जी रहा है ।
सेवाराम-स्वार्थ की बाढ में कहीं रिश्ते न बह जाय ।
ध्यानबाबू-सच चिन्ता का मुद्‌दा बन गया है रिश्ते का कत्ल ।
सेवाराम-ठीक कह रहे हो आज का आदमी एक दूसरे को टोपी पहनाने में लगा हुआ है । रिश्ता भी स्वार्थसिध्दि के लिये बनाने लगे है ।
ध्यानबाबू-ऐसे रिश्तेदार तो आदमियत का कत्ल ही करेगे ।
सेवाराम-ऐसा ही हो रहा है । दो साल भर पहले टेकचन्द साहूकार गिड़गिड़ाते हुए बोले सेवाराम मेरी मदद कर दो पांच हजार रूपया दे दो बस हफ्ता भर के लिये । टेकचन्द की गिड़गिड़ाहट के आगे मैं मना नही कर पाया नेकचन्द से

उधार लेकर दिया था । टेकचन्द ने दो साल में कभी सौ कभी पच्चास ऐसे रो रोकर दिया कि पता ही नही चला । जबकि मुझे नेकचन्द को एकमुश्त हफ्ते भर के अन्दर देना पड़ा था । टेकचन्द को एक अखबार वाले को पच्चास सौ रूपया देना है । एक विज्ञापन छपवा लिये है अपनी दुकान का । अखबार वाला मेरे साथी आज पांच साल से अधि हो गया पैसा नही दिये । जब मांगो तो टाल जाते हैं टेकचन्द आजकल की कहकर । अखबार वाले से मेरा रिश्ता पैसे की वजह से खराब कर दिये ।

ध्यानबाबू–टेकचन्द साहूकार तो इनकी टोपी उनको उनकी उनको पहनाने में माहिर है । उसे रिश्ते से क्या लेना । वो बस सौदागर है।सेवाराम क्यों झांसे में आ जाते है स्वार्थियों के ।

सेवाराम–बाबू हम तो रिश्ते के सोधेपन के भूख है । आदमी में आदमियत का भाव ढूढते रहते है । परमार्थ में असीम आनन्द है पर मतलबी लोग है कि घाव दे जाते है । सभी टेकचन्द साहूकार जैसे नही होते ध्यानबाबू।

ध्यानबाबू–वो समीर भी तो तुमको ठग गया । उसे तुम भाई मानते थे । कई सालों तक अपने घर में रखे । तुम्हारी वजह से कामयाब आदमी बना है पर तुम्हे एहसान के बदले क्या दिया बदनामी और रिश्ते को मुट्ठी भर आग का दहकता घाव ना ।

सेवाराम–समीर खुश है अपने कामयाबी पर । भले ही मुझे रिश्ता घाव दे गया पर आपको हकीकत मालूम है ना । आप मेरी नेकी को हवा दे रहे हो ना क्या यह कम है ?दुनिया में अभी रिश्ते का मान रखने वाले लखन और बलदेव देवता किस्म के लोग है ध्यान बाबू ।
ध्यानबाबू- कहां ऐसे लोग मिल गये सेवाराम ?
सेवाराम- दिल्ली में जब साला कौशल जब डेगू की चपेट में था । मौत के मुंह में से निकला है लखन भईया की वजह से । पन्द्रह साल पहले मां कैंसर से जूझ कर मरी और पिता साल भर पहले फेफडा गल जाने की वजह से ।
ध्यानबाबू–ये लखन देव कौन है ?
सेवाराम- बलदेव इंजीनियर है पर तकदीर ठगी जा जुकी है किसी शाप पर काम करता है और लखन की नौकरी छूट गयी है जो अब चौकीदार की नौकर करके परिवार पाल रहे है । यही तो है वे फरिश्ते जो झोपड़पट्टी में और तकलीफ के समन्दर में डूबकर भी रिश्ते पर मर मिटने को तैयार रहते है ।
ध्यानबाबू–वो कैसे ?
सेवाराम–बाबू कौशल की जान लखन भईया की वजह से बची है । जब पास के नर्सिगहोम वालो ने हाथ खड़ा कर लिये तो लखनभईया दिल्ली के एक बड़े नर्सिगं होम में कौशल को मरणासन्न स्थिति में ले गये । वहां डाक्टर ने

पच्चास हजार रूपये जमा करवाने को और दस बोतल खून तुरन्त देने को कहा गया।
लखन- डांक्टर साहब मैं पच्चास नही साठ हजार अभी जमा कर दूंगा भले मुझे बाद में अपना कच्चा घर बेचना पडे । खून भी दे दूंगा अपने तन को निचोड़कर पर गारण्टी दो कि मेरे भाई को कुछ नही होगा ।
डाक्टर- कोई गरण्टी नही । बचेगा तो अपनी किस्मत से या मरेगा तो अपनी मौत से ।
लखन- डाक्टर साहब आप कसाई है क्या ?
बलदेव-भईया सब धन्धा है । चलो अब सरकारी अस्पताल ले चले किस्मत पर ही भरोसा करना है ।
लखन और बलदेव कौशल को लोहिया अस्पताल में ले गये बड़ी नाजुक स्थिति थी पर डाक्टरों और स्टाफ ने बहुत सहानुभूति दिखायी कौशल को आपातकालीन कक्ष में रखा गया जबकि एक पलंग पर तीन तीन डेगू पीड़ित थे और दिल्ली डेगू महामारी बन हुआ था । लखन और बलदेव ने अपना-अपना खून दिया। रेडक्रास सोसाइटी से खून मैं खुद ले कर आया था ।
ध्यानबाबू- जब डेगू का आतंक था तब दिल्ली में थे क्या ?
सेवाराम-कौशल के लोहिया अस्पताल में भर्ती होने के बाद खबर लगी थी । पति-पत्नी तुरन्त निकल गये थे । दूसरे दिन दोपहर में अस्पताल पहुंचे थे। अस्पताल तो मरघट बना

हुआ था । देखकर हम घबरा गये हमारी मैडम को तो रो रोकर वैसे ही बुरा हाल था ।
ध्यानबाबू–सच डेगूं ने तो दिल्ली पर कहर बरसा दिया । हम तो अखबार में पढकर रो पड़े थे । जिन लोगो ने यह हादशा देखा होगा तो उनका हाल सोच कर कंपकपी छूट जाती है।
सेवाराम– कौशल की जान बच गयी । लखन और बलदेव देवदूत साबित हुए कौशल के लिये ।
ध्यानबाबू– सच लखन और बलदेव ने आदमी होने का फर्ज बड़ी ईमानदारी से निभाया । इंसानियत के रिश्ते को अपने लहू से सींचा । बहुत बड़ा काम किये दोनो । एक परिवार बिखरने से बच गया ।
सेवाराम–छोटे छोटे दो बच्चे है बीबी है । कुछ हो जाता सब अनाथ हो जाते । आज के जमाने में तो सगे भी दूर होते जा रहे है । कौन किसका पेट –परदा चलायेगा ? कुछ लोग तो मीठी मीठी बाते करते है सिर्फ मतलब के लिये । जहां मतलब निकला खंजर कर मार कर मुट्ठी भर आग और डाल दिये ताकि तडपते रहो ।
ध्यानबाबू–लोग बहुत मतलबी हो गये है जबकि सब जानते है आदमी मुट्ठी बांधकर आया है हाथ फैलाये जायेगा ,इसके बाद भी छल,धोखा,जालसाजी,अत्याचार,शोरुण,दोहन यहां तक

देह व्यासपार अंग व्यार तक करने लगा है आजका आदमी । आज आदमी स्वार्थ में गले तक डूब गया है ।

सेवाराम–अब तो मान मर्यादा पर भी स्वार्थ ने दहकता निशान छोड़ना शुरू कर दिया है । पति–पत्नी का चोंच लड़ी मामला कोर्ट में । तलाक तक हो जा रहे है ।दहेज दानव की फुफकार तो आज के युग में और डराने लगी है । कभी लोग रिश्ते पर मर मिटते थे आज स्वार्थ के लिये गला काटने के लिये तैयार है । अरे मां–बाप जिसे धरती का भगवान कहते है वे जीवन की सांध्य बेला में वृध्दाश्रम / अनाथ आश्रम का पता पूछते सड़क पर भटक रहे है । रिश्ते की बगिया में जैसे पतझड आ गया है । रिश्ते की बगिया के फूल कब खिलखिलायेगे ?

ध्यानबाबू– पाश्चात्य संस्कृति का जहर हमारी संस्कृति को ले डूबेगा । हमारे देश में अतिथि देवो भवः मांता–पिता धरती के भगवान है आदि ऐसे अनेक रिश्ते के सोधेपन खिलखिलाते थे पर आज पाश्चात्य संस्कृति ने स्वार्थ की आग में झोक दिया है जैसे ।

सेवाराम–वैश्वीकरण के जमाने में आदमी सिर्फ अपने लिये जी रहा है। बिरले ही लखन,बलदेव,अनिल और उसकी घरवाली जैसे लोग है ।

ध्यानबाबू– अनिल और उसकी घरवाली बीच में कहां से आ गये ।

सेवाराम–अनिल और उसकी घरवली, बलदेवकी घरवाली और लखन भईया की घरवाली सभी ने कौशल की बीमारी में रात दिन एक कर दिया था ।ऐसे लोग इंसानियत को जिन्दा रख सकते है । इंसानियत का रिश्ता कभी नही मरेगा जब तक गिने चुने लोग बचे है आदमी के आसूं का मोल समझने वाले ।
ध्यानबाबू– धनी–गरीब का, मालिक–मजदूर का, अफसर–कर्मचारी का जाति–बिरादरी का आदि ऐसे बहुत कांटे आदमियत की छाती में छेद कर रहे है । सामाजिक बुराईयां तो और ही मानवीय रिश्ते को तार तार कर रही है ।
सेवाराम– सामाजिक बुराईयां मानवीय संवदेना का नाश कर रही है । आदमी–आदमी के बीच नफरत की खाई खोदती है ,जिससे अब आदमी आदमी को नही होता है । पद दौलत और जाति की श्रेष्ठता का खुलेआम प्रदर्शन होने लगा है । ये सब तो आदमियत के रिश्ते के लिये किसी घातक जहर से कम नही ।
ध्यानबाबू–ठीक कह रहे सेवाराम पर नाउम्मीद होने की जरूरत नही है । देखो दिल्ली में कुछ लोग पक्षी और आदमी के बीच रिश्ता जोड़ रहे है । दिल्ली का पक्षी अस्पताल दुनिया में मिशाल है ।
सेवाराम–बाबू ऐसी ऊंची सोच हो जाये तो फिर ये लूट्खसोट,रिश्वतखोरी,भदेभाव सब खत्म हो जाये।मुझ जैसे

को हर पल हंसते जख्म न मिले पर क्या यहां तो जख्म के साथ जीना है । अमानुष और स्वार्थी किस्म के लोग मुट्ठी भर आग बोते रहेगे। देखो तुम्हारे पड़ोसी मकान नम्बर चौदह में रहने वाला यू.एन.कुकूरकाटव पड़ोसियों के घर में ताकझाक करता फिरता है।दूसरों की बीन बेटियों को बुरी नजर से देखता है । बुरी नियति से पड़ोसी के घर तक में घुस रहा था । पड़ोसी की इज्जत बच गयी । राह चलती महिलाओं तक को छेड़ता है । कहते है पड़ोसी भगवान होता है । यू.एन.कुकूरकाटव परिवार तो शैतान से कम नही है । ऐसे लोग रिश्ते का खून ही करते है ।

ध्यानबाबू-ऐसे लोग मानवता के लिये कोढ की खाझ है । ऐसे लोग रिश्ता की गरिमा क्या समझेगे ? इनका सामूहिक-सामाजिक बहिप्कार होना चाहिये । रिश्ते की आन तो रामलखन,बलदेव,अनिल और ऐसे लोग होते है जो रिश्ते को सद्भावना,संवेदना का अमृतपान कराते है ।

सेवाराम-ठीक कह रहे हो बाबू ऐसे लोगो ने इंसानियत को जिन्दा रखा है । यू.एन.कुकूरकाटव परिवार जैसे लोग तो मानवता और पड़ोसी के रिश्ते के लिये नासूर है।

ध्यानबाबू-हां सच है । सुना है तुम्हारे एक रिश्ते पर दैवीय पहाड़ टूट गया है ।

सेवाराम-बाबूराम फूफाजी मर गये । बाबू रिश्ता टूटा नही है । मेरे फूफाजी मरे है । दुनिया भर के नही ।

ध्यानबाबू–ठीक कह रहे हो । ये रिश्ते तो अमर है जिस पर परिवार और समाज जीवन पाता है ।

सेवाराम–बाबू हमारे यहां तो फूफाजी का रिश्ता बहुत सम्मानित होता है ।

ध्यानबाबू– फूफा और मामा का रिश्ता बहुत नजदीकी का और पवित्र रिश्ता होता है । जीवन मरण तो प्रभु के हाथ में है । रिश्ते का सोधापन तो सदा हवा में समाया रहता है । अपनेपन और मानवता को जीवित रखता है । कुछ लोग तो बस खुद के लिये रिश्ते जोड़ते है । मतलब निकलते ही दिल के टुकड़े कर देते है ।कुछ लोग रिश्ते को ऊंचाई देकर अमर हो जाते है । हम जिस की पूजा करते है । वे भी तो हमारे जैसे थे । जिनके साथ आज आदमी और भगवान अथवा देवता का रिश्ता कायम हो गया है क्योंकि वे आदमियत के रिश्ते का इतिहास रचा है ।

सेवाराम–ठीक कह रहे हो बाबू आदमियत का रिश्ता तो सर्वश्रेष्ठ और महान है ।

ध्यानबाबू–आदमी को धर्मवाद, जातिवाद, छोटे–बड़े के भेद, अमीर–गरीब की खाई को पाटकर , आदमी के सुख–दुख में काम आकर आदमियत के रिश्ते को अधिक प्रगाढ बनाने का बीड़ा उठाना चाहिये । रिश्ते का सोधापन समय के आरपार प्रवाहित होता है सेवाराम ।

सेवाराम–आओ हम सब आदमियत के रिश्ते को धर्म बनाने की कसम खाये क्योंकि आदमियत ही सबसे बडा धर्म और सबसे बड़ा कोई रिशत जगत में है तो दर्द का। इस यथाशक्ति निर्वाह करने वाले लोग सच्चे आदमी कहलाने के हकदार होते है ।
सेवाराम की ललकार सुनते ध्यानबाबू सहित सभी लोग एक स्वर में बोले आदमियत के रिश्ते के हंसते जख्म पीना कोई गुनाह नही ।

1 7–जलसा

कम्पनी की आधारशिला रखने के साथ स्थापना दिवस मनाने का प्रचलन शुरू हो गया था । जश्न देश के हर छोट बड़े दफतरो में मनाया जाने लगा था बकायदा कम्पनी इसके लिये बजट देती थी । एक विशेषता तो यह भी थी कि कम्पनी में कर्मचारियों और अधिकारियों में बिना भेद के प्रति व्यक्ति बजट का प्रावधान होता था। इस जश्न में कर्मचारी ,अधिकारी और उनका परिवार बढ–चढ कर भाग लेता था । यह जश्न तो कम्पनी के सभी कर्मचारियों के लिये एक त्यौहार हो गया था । बच्चे तो जलसे के महीने भर पहले से ही तैयारी में लग जाते थे । छोटे कर्मचारियों के बच्चों के लिये तो यह जलसे जैसा होता था । पूरा पारिवारिक माहौल बन जाता था । सभी लोग बिना किसी भेदभाव के आनन्द

उठाते थे । कर्मचारी और उनके परिवार के लोग सांस्कृतिक में बढ–चढकर भाग लेते थे । इस उत्सव में ऐसा लगता था कि मानो साल भर की भागमभाग के फारीक होकर सभी कर्मचारी पारिवारिक माहौल में छुट्टी मना रहे हो । कम्पनी का यह जलसा किसी प्रसिध्द पिकनिक स्पांट अथवा अच्छे होटल में आयोजित होता था । इस जलसे को विभाग प्रमुख हंसमुख साहब और अधिक पारिवारिक बना देते थे । जब तक वे कम्पनी के शाखा प्रमुख रहे तब तक छोटे कर्मचारियों के परिवार को घर से लाने और जलसा की समााप्ति के बाद घर तक छोड़ने का जिम्मा बड़ी जिम्मेदारी के साथ निभाते थे । कई बरसो बाद हंसमुख साहब का स्थानान्तरण हो गया । उनकी जगह पर लाभचन्द साहब आ गये । लाभचन्द साहब के ज्वाइन करते ही कम्पनी के स्थापना दिवस आ गया । लाभचन्द साहब गुमचुप जलसे की घोषणा शुक्रवार को शाम को देर से कर तो कर दी पर छोटे कर्मचारियों को भनक तक नही पड़ने दी ।यह खबर किसी तरह चपरासी बहकुदीन तक पहुंच गयी । वह सन्तोषबाबू
से बोला–बड़े बाबू आज के बाद दो दिन की छुट्टी पड़ रही है ।

सन्तोषबाबू– हां शनिवार रविवार की छुट्टी तो पहले से होती आ रही है ।इसमें नई बात क्या है ।

बहकुदीन– है ना ....

सन्तोष–तुम इंसीडेण्टल की बात कर रहे हो । अरे भाई इंसीडेण्टल और ओवर टाइम तो खास लोगों के लिये होता है । हंसमुख साहब ने काम तो खूब करवाये पर इंसीडेण्टल और ओवर टाइम चहेतो को दिये । हम तो पहले से पेट पर पट्‌टी बांधे हुए है । आंख में आंसू भरे हुए है और मेरी योग्यता पर वज्रपात हो रहा है । मैं नये साहब से भी कोई उम्मीद नही करता । बस अपना काम ईमानदारी से करता रहूंगा ।

बहुदीन– सोमवार को कम्पनी का वार्षिक जलसा मनने वाला है । आप तो जानते ही हो कि साहब लोग इकत्तीस मार्च के पहले कभी भी मना सकते है । बजट को उपभोग करना जो होता है ।

सन्तोष– सब बात तुमको कैसे मालूम पड़ जाती है ।

बहकुदीन– ड्राइवर,चपरासी और घर में काम करने वाली बाई से कुछ नही छिप सकता लाख कोई छिपाये बड़े बाबू।

सन्तोष–वार्षिक जलसे में छिपाने जैसी क्या बात है ।

बहकुदीन– है तभी तो किसी छोटे कर्मचारी को मालूम नही है । चिट्‌ठी भी नही जायेगी सभी फील्ड अफसरों को फोन पर खबर पहुंचेगी । छोटे कर्मचारियों को दूर रखे जाने की साजिश रची जा रही है ।

सन्तोष– तुमको कोई गलतफहमी हो गयी है बहकुदीन ।

बहकुदीन–नही बड़े बाबू । कोई गलतफहमी नही है । लाभचन्दसाहब सिर्फ अफसरों को बुलाना चाहते है । छोटे कर्मचारियों को दूर रखना चाहते है । गैप मेनटेन जो करना है ।

सन्तोष–क्या ? कह रहे हो मेरी तो कुछ भी समझ में नही आ रहा है ।

बहकुदीन–सोमवार को समझ में आ जायेगा आफिस आने पर ....

सन्तोष– क्या मालूम पड़ जायेगा ?

बहकुदीन– सच्चाई .....

सन्तोष–यार साहब ने मुझे बताया तो है नहीं । ऐसे कैसे जलसा आयोजित हो जायेगा । बच्चे तो सबुह स्कूल चले जायेगे । पत्नी की तबियत खराब है तुम सभी जानते हो चलना फिरना बड़ी मुश्किल से हो पाता है । कैसे बच्चे आयेगे ।

बहकुदीन–लाभचन्द साहब और उनके चममचे यही चाहते है कि छोटे कर्मचारी और न उनके बच्चे जलसे में शामिल हो पाये । सोमवार को आफिस खुलने पर सूचित तो करेगे ताकि छोटे कर्मचारी अछूतों की तरह जलसे से दूर रहे , जानते है ना बड़े बाबू ?

सन्तोष– क्या ?

बहकुदीन–इल्जाम भी आपके सिर आने वाला है ।

सन्तोष–यार तुम मुझे क्यों भड़का रहा है ।
बहकुदीन–भड़का नही सही कह रहा हूं अपने जासूसी कानों की कसम । गाज तो बड़े बाबू तुम पर गिरने वाली है । सावधान रहना ।
सन्तोष– क्या गाज गिरेगी । हमें ओवर टाइम और इंसीडेण्टल से कोई लगाव नही है । जरूरत पड़ेगी तो आकर काम कर दूंगा कम्पनी के लिये बस ।
बहकुदीन–यही वफादरी तो गाज का कारण बनने वाली है ।वैसे भी ये साहब अपने वालों को ज्यादा तवज्जो देते है । जब से आये है तब से दारू के कुये में कूद–कूद कर जश्न ही तो मना रहे है।यह जश्न रूतबेदार तभी होगा जब छोटे लोग जी हजुरी करे चम्मचों की तरह । जो कुछ कह रहा हूं सुनी सुनाई ही नही खंजांचीबाबू भी विक्रय अधिकारी से बतिया रहे थे इसी बारे में। सोमवार को आफिसियली छोटे लोगो को सूचित किया जायेगा ताकि छोटे लोग सपरिवार नही पहुंच पाये । देखना सोमवार को यही होगा ।
सन्तोष–अरे नही बहकुदीन इतने बड़े बड़े साहब लोग भला ऐसा सोच सकते है क्या ? तुमको कोई गलतफहमी हुई है ।
बहकुदीन–क्यों इतने भोले बन रहे हो बडे बाबू सबसे ज्यादा तो आपके साथ भेदभाव होता है । देखना मैं जो कह रहा हूं वही होने वाला है ।हमारे और आपके बच्चे जलसे में नही

जा पायेगे ।दफतर की गाड़ी में तो साहब और उनका परिवार जायेगा । दफतर की गाडी साहब के लिये चौबीस घण्टे के लिये रिजर्व है । हम जैसे छोटे लोग तो भर आंख देख भी नही सकते । बाकी लोगों का इन्टाइटलमेण्ट है ट्रवेल से कार बुला लेगे हम और आप साइकिल से जायेगे क्या ? पूरा परिवार लेकर वह भी शहर से पच्चीस किलोमीटर दूर ।

सन्तोष- चिन्ता मत करो साहब सबके लिये व्यवस्था करेंगे । ऐसा भेदभाव नही करेगें । अरे हमारे नाम का भी पैसा तो कम्पनी ने दिया है सिर्फ साहब लोगों के लिये थोडे ही स्थापना दिवस का जलसा आयोजित होता है ।

बहकुदीन- मुझे जहां तक जानकारी है लाभचन्दसाहब सिर्फ अधिकारी वर्ग को जलसे में शामिल करना चाहते है । हंसमुखसाहब जैसे छोटे बड़े सबको साथ में लेकर नये साहब नही लेकर चलने वाले । पुराने ख्यालात के लगते है । पुराने ख्यालात के लोग कितने खतरनाक होते है वंचितों के लिये ।बड़े बाबू ये क्यो भूल जाते हो आप भी उसी वंचित समाज से आते हो । आपके खिलाफ कितने षणयन्त्र रचे गये और रचे जा रहे है निरन्तर यहां क्या आप भूल गये ।

सन्तोष-ऐसी बाते मत करो बहकुदीन । पढे लिखे हो उच्च विचार रखो । कांटे बोने वालों के लिये फूल बोओ बाकी सब भूल जाओ। अच्छाई के बारे मे सोचे बुरी त्यागो बहकुदीन ।

अभी जलसे की कोई चर्चा नही है । सोमवार को जश्न कैसे मन पायेगा । मुझे तो नही लगता । बहकुदीन जब भी जलसा आयोजित होगा हमारे तुम्हारे और सभी के बच्चे शामिल होगे कम्पनी के जलसे में । यदि तुम्हारी बात सही हुई तो सचमुच में छोटे कर्मचारियों के साथ अन्याय होगा ।
बहकुदीन–अन्याय तो होकर रहेगी क्योकि हवा लाभचन्द साहब के ज्वाइन करते ही विपरीत चलने लगी है खासकर छोटे और शोषित कर्मचारियों के सन्तोषबाबू । आप मेरी बात मान भी तो नही सकते क्योंकि आपका दर्जा मुझसे थोड़ा उुंचा जो है ।
सन्तोष–बहकुदीन तुम भी कर्मचारी हो मैं भी । ठीक है मैं बाबू हूं तुम चपरासी हो बस इतना सा फर्क है ।
बहकुदीन– साहब लोग तो इससे उपर सोच रहे है ना ।कर्मचारियों और अधिकारियों में गैप मेन्टेन करना चाहते है । शुरूआत तो बहुत पहले से हो गयी है । आप तो भेद की तलवार हर चहरे पर तनी दिखने लगी है । खैर बहुत बात हो गयी । इस बारे में किसी से कुछ कहना नही । नही तो मैं तारगेट हो जाऊंगा ।जश्न तो सोमवार को ही मनेगा यह भी नोट कर लेना ।
सन्तोष–इतना अन्याय तो नही होगा बहकुदीन ।
बहकुदीन–होगा मेरी बात क्यों नही मानते । पुराने सारे अन्याय भूल गये क्या ?

सन्तोष–हां । कल का सूरज खुशी लेकर आयेगा ।
बहकुदीन–सोचने और हकीकत में अन्तर है ।अपने दफतर में यह अन्तर सिर चढ़क बोलने लगा है ।
सन्तोष–देखते है सोमवार को क्या होता है? अब मुझे काम कर लेने दो ।बहुत काम है । देखो इतनी सारी रिर्पोट बनानी है और टाइप भी करनी होगी ।
बहकुदीन–करो बाबू अरमानों की बलि चढाकर । इन लोगों को खुश नहीं कर पाओगे कितनों रात दिन एक कर दो । शनिवार और रविार की छुटटी है । असलियत से तो सोमवार को रूबरू हो पाओगे सन्तोष बाबू ।
सन्तोष–इन्तजार करूंगा और भगवान से प्रार्थना भी कि सब कुछ अच्छा हो ।
शनिवार और रविवार की छुट्टियां खत्म हो गयी । सोमवार के दिन सन्तोष दफतर पहुंचा दोपहर के खाने की टिफिन लेकर । ग्यारह बजे तक सन्तोष को भनक तक नही लगने पायी पर अन्दर –अन्दर सारी तैयारियां चल रही थी । शनिवार और रविार की छुट्टियों में बच्चों के खेल खिलौने एवं गिफट् आदि के नाम पर अच्छी खरीदारी और कमाई भी लाभचन्दसाहब के चम्मचों ने की । दो दिन की छुट्टी का इंसीडेण्टल भी लिये । खैर ओवरटाइम और दूसरे अन्य फायदों से सन्तोंष को पहले से ही दूर रखे जाने का षणयन्त्र था पर काम तो करना ही पड़ता था आंखों में आसू

छिपा कर । सन्तोष काम में लगा हुआ था इतने में बहकुदीन पानी का गिलास टेबल पर पटकते हुए बोला लो बड़ेबाबू पानी पी लो ।
सन्तोष-पानी पिला रहे हो या टेबल तोड़ रहे हो ।
बहकुदीन-बड़ेबाबू दिमाग बहुत खराब है अभी ।
सन्तोष-क्यों ।
बहकुदीन-कम्पनी की स्थापना के जलसे का आयोजन आज हो रहा है ना । मेरे बच्चे कैसे जायेगे । सब स्कूल गये है । मैं खुद टिफिन लेकर आया हूं ।होटल चांद शहर से बीस किलोमीटर दूर है । कैसे पहुंच सकता हूं ।
सन्तोष-क्या....? मैं भी टिफिन लेकर आया हूं ।मेरे बच्चे भी स्कूल गये है । ये कैसा जलसा है । इतने में लाभचन्द साहब कालबेल पर जैसे बैठ गये बहकुदीन भागा भागा गया ।
साहब-बहकुदीन होटल चांद में आ जाना कुछ देर में । टाइपिस्ट क्या नाम है उसका ?
बहुकदीन-बड़े बाबू का नाम ।
साहब-हां वही तुम्हारे बड़े बाबू ।
बहकुदीन-सन्तोष बाबू.....
साहब- हां । सन्तोष..... उसको भी बोल देना । लंच तुम लोग वही कर लेना ।
बहकुदीन- कोई प्रोग्राम है होटल चांद में साहब ?

साहब–हां कम्पनी के स्थापना दिवस का जलसा मन रहा है ना आज ।
बहकुदीन–क्या ?
साहब–मुंह क्यों फाड़ रहे हो । जाओ बड़े बाबू को बुलाकर लाओ ।
बहकुदीन– साहब के हुक्म का तामिल किया ।
सन्तोष साहब के सामने हाजिर हुआ । साहब उसको देखकर बोले क्यों सन्तोषबाबू जलसे में नही चल रहे हो क्या ?
सन्तोष– कैसा जलसा सर....
साहब–क्यों खंजाची साहब ने तुमको नही बताया था ? क्या तुमको ये भी पता नही सभी कर्मचारी सपरिवार इस जलसे में शामिल होते है ।
सन्तोष– सभी सपरिवार शामिल होते है यह तो मालूम है पर ये तो नही मालूम था कि अभी ग्यारह बजे जलसे का आयोजन हो रहा है । वह भी शहर बीस किलोमीटर दूर पहाड़ो के बीच में ।
साहब–अब तो मालूम हो गया ना ? आने का मन बने तो जाना नही तो दफतर का काम देखो कहते हुए लाभचन्द साहब सुसज्जित कार में बैठ गये कार पहाड़ों के बीच स्थित चांद होटल की और दौड़ पड़ी और उसके पीछे दूसरे अफसरों के कारों का काफिला भी । अब सन्तोष बाबू के सामने सिर धुनने के सिवाय और कोई रास्ता न था ।

बहकुदीन– बड़े बाबू क्यों सिर पर हाथ रखकर बैठे हो। शाम छः बजे तक काम निपटाओ और घर जाओ साहब यही कहकर गये है ना । वाह रे साहब छोटे कर्मचारियों का हक मार कर बोतले तोड़ेगे,ठुमका लगायेगे । ये कैसे साहब लोग है जो भ्रष्टाचार को पोष रहे है ? कमजोर कर्मचारियों के हित दबोच रहे है । शोषित / कमजोर कर्मचारियों के हितों की रक्षा सामन्तवादी सोच के साहब लोग कैसे होने देगे ? देखो सन्तोष बाबू मैं तो अब जा रहा हूं । लंच करने का मन नही हो रहा है,मुझे निकाह में जाना है । चाभी रखों । बन्द कर देना । तकलीफ तो होगी पर सुबह थोड़ा जल्दी आ जाना । झाडू वाली नौ बजे आती है ना ।
सन्तोष–ठीक है । मुझे तो बैठना ही होगा वरना कोई इल्जाम सिर आ जायेगा ।
बेचारे सन्तोषबाबू सायं साढे छः बजे तक दफतर में काम करते रहे । साढे सात बजे घर पहुंचे । पापा के आने की आहट से बडी बीटिया बाहर आयी । सन्तोषबाबू के हाथ से टिफिन थामते हुए बोली पापा आपकी कम्पनी का सालाना जलसा कब होगा ? सन्तोषबाबू की जीभ तलवे से चिपक गयी इतना बोल पाया कि कब तक जलना होगा मुट्ठी भर आग में और अचेत होकर खटिया पर गिर पड़े धड़ाम से ।

18–पथराव

मिसेज दयावती–शहर की रूह तो छलनी कर दिया उपद्रवियों ने ।चार मर गये पूरे शहर में कर्फ्यू लग गया । उपद्रवियों ने पूरे शहर को सिर पर उठा लिया है ।ये देखो अखबार भी लहूलुहान हो रहा है । अखबार में छपी तस्वीर में कैसे लोग आमने सामने से एक दूसरे पर पत्थर फेक रहे हैं। गोली चल रही है। बम फेंके जा रहे है । ये कैसा पथराव है एक दूसरे की जान लेने के लिये धर्म के नाम पर ।

मिस्टर देवानन्द–तस्वीर से रूह कांप रही है । कल उपद्रव और पथराव की वजह से तो दफ्तर जल्दी बन्द हुआ था । किसी तरह से जान बचाकर आया था पूरे शहर में भगदड मची हुई थी । एक समुदाय दूसरे पर टूट रहा था जैसे कुत्ते टूटते है एक दूसरे पर । शहर जल रहा है । लोगों के घर जल रहे हैं । बच्चे भूख से बिलख रहे हैं । शहर की गलियां खून में नहायी हुई हैं ।उपद्रवियों का कोई धर्म नही होता । ये लोग नंगे लोग होते हैं । धर्म के नाम खून बहाते है । अपना मतलब साधते है । ये मौकापरस्त लोग लहू पी कर पलते है । विष बीज बोते है । आग से सींचते है । ये लोग देश और समाज के अस्मिता से खेलते हैं । रन्जू की मम्मी उपद्रवियों का कोई मजहब नही होता। कोई मजहब आपस में लडना नही सीखाता। अपयश मजहब के माथे क्यों ?

मिसेज दयावतीा–ये लो चाय पी लो । गैस भी खत्म होने वाली है । दूध भी अब नही है ।अगर ऐसे ही शहर आतंक के साये में रहा तो आंसू पीकर दिन गुजारने पडेगे । बडी मुश्किल से तो साक्षी बीटिया ने चाय बनायी है पी लो.. ....
मिस्टर देवानन्द– चाय का प्याला उठाते हुए बोलो आज तो चाय मिल रही है कल देखो क्या होता है ?
इतने में मिसेजदयावती चिल्लाकर बोली अरे साक्षी के पापा वो देखो पुलिस की गाडी सायरन बजाते हुए अपने घर की ओर आ रही है । लोग भेड बकरी की तरह भाग रहे हैं ।
साक्षी– मम्मी वो सामने की दूध की दुकान भी बन्द हो गयी दस मिनट पहले ही तो खुली थी ।
मिसेज दयावती –बेटी दूध तो मिल जायेगा । पहले जिन्दगी सही सलामत तो बची रहे ।
नन्हा प्रतीक घबराकर बोला मम्मी–आतंकवादी लोग अपने घर पर तो हमला नही करेगे ।
संखी–भइया तुम घर में हो घर में कोई कैसे घुसेगा ।हम अन्दर बाहर ताला लगा लेगे ।
मिसेज दयावती–बेटी साक्षी प्रतीक को अन्दर ले जाओ । कोई कार्टून फिल्म लगा दो देखता रहेगा ।
साक्षी–ठीक है मम्मी............

मिस्टर देवानन्दा–रंजू की मम्मी सावधान रहना । उपद्रवियों का कोई भरोसा नही कब क्या कर बैठे ।धर्मान्ध उपद्रवियों को कोई चीख पुकार अथवा मदद के स्वर नही सुनाई पडते ।उनको बस मारो काटो के स्वर सुनाई पडते हैं क्योंकि उनकी आंख में सपने नही खून खौलता है ।

मिसेज दयावती– चाय पीये नही उठाकर रख दिये । कफ्र्यू की घोषणा बेमुद्दत की है । चाय पी लो कल मिल पायेगी की नहीं। गेहूं पीसाना रह गया। आटा भी बहुत कम बचा है । दाल–तेवन भी घर में नही है । सब्जी वाले भी नही आ पा रहे है । अचार से दो दिन निकाल लेगे । अपनी तो बस इतनी ही तमन्ना है कि शहर में शान्ति हो जाये । साक्षी के पापा चाय पीओ.........

मिस्टर देवानन्द–चाय तो गले से नीचे उतर ही नही रही है । ये देखो कैसी भयावह तस्वीर छपी है ।उदापुरा में हुए पथराव में घायल आदमी के सिर से कैसे खून के फववारें फूट रहे हैं । पूरा शहर हिंसा की चपेट में आ गया है । कितने दुर्भाग्य की बात है कि एक देश एक शहर एक बस्ती में रहने वाले लोग एक दूसरे के उपर पत्थर बम और बन्दूक से हमला कर रहे है । कुछ ही धण्टो में तीन ट्रक से अधिक पत्थर एक दूसरे के उपर फेंके गये है । इस पथराव में बेचारे गरीब मजदूर और निर्दोष हताहत हुए है तीस से अधिक लोग घायल हैं। मरने वाले कोई किसी संगठन का

पदाधिकारी नही है । सब गरीब मजदूर लोग मरे हैं । पूरे शहर में कर्फ्यू के साथ ही धारा 144 की चपेट में है । पूरा शहर भोली भाली निर्दोष जनता के खून से लथपथ है । मां अहिल्याबाई की आत्मा रो रही होगी शहर की यह भयावह दुर्दशा देखकर । साक्षी की मम्मी गले से नीचे चाय उतर नही रही है ।
मिसेज दयावती–बाप रे बेमुद्दत कर्फ्यू ....कैसे जरूरी चीजे मिलेगी । काश जल्दी शहर की रंगत लौट जाती । सब सामान्य हो जाता ।घर में ही डर लगने लगा है ।कब क्या बुरा हो जाये सोचकर.........
मिस्टर देवानन्द–शहर में जंगल की ,परदेशीपुरा हर कहीं पत्थर बरस रहे हैं तो कही गोली । पूरा शहर उग्रवाद की चपेट में हैं । एक समुदाय के लोग दूसरे का खून पीने के लिये कटार लेकर दौड रहे है । ऐसे मे तो भगवान भी कोई गारण्टी नही दे सकता ।
साक्षी–पापा धर्म के नाम पर लोग ऐसा क्यों करते है । किसी की हत्या कर देते है । किसी को जला देते है । किसी का घर जला देते है । ऐसा तो कोई धर्म नही कहता ।
मिसेज दयावती– ऐसे मौकापरस्त लोग होते है । इनका कोई धर्म नही होता है । ये तो आदमी का खनू पीकर पलते है । इनका धर्म होता है आतंक... ।

प्रतीक–खलनायक कहो ना मम्मी..........
साक्षी–अरे वाह रे प्रतीक तू तो बडा उस्ताद निकला ।
प्रतीक–कसाई को देखकर बकरा भी तो डरता है । अनहोनी का डर सभी को होता है । आतंकवादी/उग्रवादी भी तो कसाई ही हैं ।
मिसेज दयावती–ठीक कह रहे हो प्रतीक। कसाई ही तो है तभी तो आदमी का खून बहाने में सभ्य समाज के विरोधियों को तनिक भी डर नही लगता ।
मिस्टर देवानन्द– ठीक कह रही हो । उपद्रवियों ने तीन जुलाई से शहर की अस्मिता के साथ खेलना शुरू किया था । छः तारीख हो गयी पर शहर वैसे ही धूंधूं कर जल रहा है ।
मिसेज दयावती– छोटे छोटे बच्चे डर सहमे रह रहे है । ये देखो अखबार में छपी तस्वीर नन्हीं सी बच्चा कैसे शटर को नीचे से उचका कर बाहर देख रही है। आंखें ऐसे लग रही है कि अभी रो पडेगी । कितना भयावह मंजर हो गया है।
मिस्टर देवानन्द– उपद्रव तो बन्द नही हुआ । राजनैतिक पथराव शुरू हो गया । राजनेता लोग अपनी अपनी कुर्सी के ढीले जोड को जख्म की कीलों ो दुरूस्त करने में जुट गये हैं ।
मिसेज दयावती–बहुत बह गया खून ।बहुत हो गया उपद्रव अब तो शान्ति चाहिये शहर को । शान्ति प्रिय शहर दुनिया

में बदनाम हो रहा है । सभ्य समाज के दुश्मनों की वजह से ....
मिस्टर देवानन्द– बेचारे रोज कुआं खोद कर पानी पीने वाले तो भूखे मर रहे है । दूर दूर से शहर में शिक्षा लेने आये बच्चे भूखे दिन रात बिता रहे है । दवा दारू के बिना लोग परेशान हो रहे है । उपद्रवियों ने हवा मे फिजां में जहर और जीवन की राह में बारूद बिछा दिया है ।
मिसेज दयावती–धर्म के नाम पर बवाल मचा हआ है । वही दूसरी ओर दोनों समुदायों के लोग एक दूसरे की मदद कर रहे है । सब की खाहिश है कि शहर में जल्दी रौनक लौटे । ये उपद्रवी धार्मिक उन्माद फैलाकर क्यों धर्म की महत्ता के साथ अश्लील व्यवहार कर रहे हैं ।
मिस्टर देवानन्द–ठीक कह रही हो । शहर में तरफ उन्मादी आतंक फेला रहे है तो वही दूसरी ओर रवि वर्मा,सुशील गायेल,अजय काकाणी जैसे कई लोग जान की बाजी लगा शान्ति और सद्भाव कायम करने के प्रयासरत् है । सेवाभारती तथा जैनसंस्कार जैसी संस्थाये भी अमन की इबारत लिखने मे जुटी हुई हैं । अमन तो शहर में जल्दी होगा विघटनकारी शक्तियां और कुछ धर्मान्ध मतलबी लोग सद्भावना की राह में रोडे डाल रहे है । यकीनन ऐसी विघटनकारी संस्थायें और उपद्रवी मतलबियों के नाम पर थूकेगी ।

साक्षी–काश शहर में सद्भाव और शान्ति जल्दी स्थापित हो जाती ।
मिसेज दयावती– जरूर होगा । जनता तो सब समझ गयी है । उन्मादियों को धर्म से कोई लेना देना नही है । वे तो अपने स्वार्थ सिध्दि के लिये इंसानियत की बलि चढा रहे है।
मिस्टर देवानन्द–जनता के पैर में भले ही कर्फ्यू की बेडिया पडी है । जर्रे–जर्रे पर सन्नाटा है। पग पग पर उपद्रवियों का खौफ हैं ।इसके बाद भी जीवन गाडी का पहिया कहां थमा है।कर्फ्यू में ढील मिलते है । आवाम गले मिलने को आतुर हो उठता है । राजवाडा,छपपन दुकान और सार्वजनिक जगहों पर आतंक के खौफ के बाद भी लोगों की भीड उमड रही है । अपने वीणानगर में ही देखो बडे भले ही घरों में दुबके हुए है पर बच्चे खेल में मशगूल है । हां ये बात अलग है कि सायरन की आवाज सुनकर जां जगह पाते है वह छिपने लगते है । बहुत भयानक आग लगी है । बुझना चाहिये.........
मिसेज दयावती–आग तो बुझेगी पर जिस मां का बेटा मारा गया । जिसका पति मारा गया जो बच्चे अनाथ हो गये । क्या उनके धर्म के नाम पर खूनी खेल खेलने वाले वापस कर पायेगे ।या उनके परिजनों का सहारा बनेगे । जीवन में दर्द भरने वालों का सत्यानाश हो ....

मिस्टर देवानन्द– अखबार में छपी सूचना के मुताबिक कल बारह बजे से रात्रि के दस बजे तक कर्फ्यू में ढील रहेगी ।
मिसेज दयावती–दफ्तर जाओगे ?
मिसेज देवानन्द– हां कब तक घर में कैद रहेगे । हो सकता है कल दिन ठीक ठाक रहे तो परसों से कर्फ्यू उठ जाये । वैसे कर्फ्यू तो आम जनता की जान माल की रक्षा के लिये ही लगता है । इसमें अपराधी किस्म के लोगो की धरपकड होती है । यह जरूरी भी है । इसी से तो उपद्रवियों की नाक में नकेल पडती है ।
मिसेज दयावती–महंगाई तो वैसे ही कमर तोड रही थी । शहर में फैले उपद्रव ने तो जीना ही हराम कर दिया । कीमते पहुंच से दूर होने लगी है । काश फिर कभी शहर और देश में उपद्रव का ज्वालामुखी नही फूटता ।
मिसेज दयावती–सरकार और सभ्य समाज को मिलकर उपद्रवियों का दमन करना होगा तभी विद्रोह का ज्वालामुखी नही फूटेगा ।
मिस्टर देवानन्द–ठीक तो कह रही हो पर ऐसा हो तब ना । इसके लिये पुख्ता इन्तजाम करना होगा । मानवतावादियों को धर्म,सम्प्रदाय और जाति से उपर उठकर उपद्रवियों और अपने बीच दीवार खींच देनी चाहिये । ताकि ना बहे फिर कभी खून की धारा । आदमियत ,अमन–शान्ति के विरोधी

अपनी अपनी बिलों में कैद रहे । जब कभी निकले तो इनका दिल पसीज गया हो । मानवता,समता सद्भावना और शान्ति के दूत बनकर निकले ताकि कभी ना हो सके पथराव । देश प्रगति की राह पर सरपट दौडता रहे ।
मिसेज दयावती–एक बात कहूं ।
मिस्टर देवानन्द–अरे घर में कैद है । बाहर उपद्रवियों का भूत है । अब ना कहोगी तो कब कहोगी जो कुछ कहना हो कह सुनााओ । भरपूर समय है सुनने सुनाने का ।
मिसेज दयावती– तुम तो बहुत कुछ कह गये मैं तो कुछ और ही सोच रही थी ।
मिस्टर देवानन्द–भागवान कहो ना हमने तो ऐसा वैसा कुछ नहीं कहां.........
मिसेज–चलो तुम जीते मैं हारी । अपनी बात कहती हूं ।
मिस्टर देवानन्द–पहले मेरी बात सुनो धकियानुसी बातें ना करो । तुम हमेशा से जीतती आयी हो । मैं तो हारा हुआ सिपाही हूं तुम्हारे सामने।
मिसेज दयावती– देखो मुद्दे से ना भटकाओ । बात उपद्रव और कर्फ्यू से होकर कहीं और जा रही है । नजर कहीं निशाना कही लग रहा है । मेरी बात सुनो ।
मिस्टर देवानन्द–बिल्कुल नही मैं मुद्दे पर ही कायम हूं ।
मिसेज दयावती–जब तक धर्म का उपभोग अफीम की तरह और जातिवाद का दम्भ हुंकार भरता रहेगा तब तक उपद्रव

मचता रहेगा । क्यों ना धर्म को मानवकल्याण से जोडा जाये । जातिवाद की मान्यता रद्द कर दी जाये । ऐसा हो गया तो ऐसे उपद्रव नही होगे । आदमी के खून से सडके गलियां नही नहा पायेगी ।

मिस्टर देवानन्द–बात तो बहुत अच्छी है लेकिन धर्म और जाति के बीच से होकर रास्ता दिल्ली तक जाता है । सारी उपद्रव की जड धार्मिक और जातीय उन्माद में है । उपद्रवी लोग धर्म को बदनाम कर रहे हैं ।सद्धर्म, सर्वसमानता , बहुजनहिताय एंव बहुजन सुखाय का सच्चा प्रहरी होता है ।

साक्षी– चलो अच्छी बात हुई । उपद्रव की नाक में नकेल पड गयी । कर्फ्यू भी कुछ दिन रात्रि दस बजे से सुबह छः बजे तक रहेगा । अब पापा दफ्तर जा सकते है , मैं और प्रतीक स्कूल भी । पथराव का डर तो मन में रहेगा ना पापा । कई लोग मरे है । कई गली मोहल्ले खून से लाल हुए है ।

मिस्टर देवानन्द– बेटी डरते नहीं । जनता की सुरक्षा के लिये पुलिस फोर्स जो चपे चपे पर तैनात है अभी भी।

मिसेज दयावती–बेटी डरना नही । भयावह सपना मानकर भूल जाना । स्कूल में दूसरे धर्म के बच्चों के साथ मिलजुल कर रहना । नफरत नही सद्भावना के बीज बोने होगे स्कूल के स्तर से तभी बच्चें सर्वधर्म सर्वसमानता के नैतिक दायित्वों का पालन कर सकेगे ।

मिस्टर देवानन्द–बेटी तुम्हारी मम्मी ठीक कह रही है ।सद्‌भावना से नफरत की जड पर प्रहार किया जा सकता है । ऐसा प्रहार पथराव को जन्म ही नही देने देगा ।
साक्षी– पापा याद रखूंगी ।
मिसेज दयावती– जा बेटी अपना और प्रतीक बैग जमा लो कल से स्कूल जाना है ना ।
साक्षी– हां मां.........
मिसेज दयावती–देखो छोटे–छोटे बच्चे कितने खुश है । शहर की रंगत लौटते ही.......
मिस्टर देवानन्द– अमन तो सभी को पसन्द होता है । कौन खतरों से खेलना चाहेगा । अपने को मौत के मुंह में झोकेगा। धार्मिक/सामाजिक बीमारियों के प्रकोप से पथराव होते है । खून बहते है । बच्चें भी डर गये है पथराव से......
मिसेज दयावती–डर तो हम गये थे ये तो बच्चे है । डर कर भी तो जीवन नही चलता ।
मिस्टर देवानन्द–हां ठीक कह रही हो । डर तो था ,जब तक उपद्रव था, शहर मे कफ्‌र्यू था कब कहां से पत्थर या गोली बरस पडे । कफर्यू में तनिक छूट मिलते ही लोग जरूरी चीजों के लिये दौड पडते थे ।
मिसेज दयावती– उपद्रवियो ने ऐसा खूनी खेल ही खेला है कि डर बन गया है । धीरे धीरे खत्म हो जायेगा । सब कुछ सामान्य हो जायेगा । कब तक पथराव का भूत पीछा

करेगा ? कब तक शरीफ आदमी हंसते जख्म संग जीयेगा ।
मिस्टर देवानन्द– राष्ट्रीय अस्मिता एवं मानवीय एकता के लिये साम्प्रदायिकता के विष बीज को उखाड फेंकना होगा वरना ये साम्प्रदायित ताकते खुद को सुरक्षित कर शान्ति और सद्भावना के दामन जख्म मिल रहेगे ।

19–बारात

इकतीस दिसम्बर की आखिरी और पहली जनवरी की प्रथम अर्धरात्रि में नन्दन के घर एक नन्हे फरिश्ते का अवतरण हुआ । बच्चे के रोने की आवाज सुनकर नन्दन के मन में आतिशबाजी होने लगी । कुछ देर के बाद रमरजी काकी घर में से बाहर निकली । नन्दन आगे बढकर काकी का पांव छुये ।
रमरजीकाकी–खूब तरक्की कर बेटवा, बेटा हुआ है ।
चौथी औलाद बेटा के सुनते ही नन्दन के दिल से बोझ उतर गया । नन्दन बच्चे का नाम हरी रखा । नन्दन हरी को पढा लिखाकर दरोगा बनाने का सपना देखने लगा पैदा होते से ही। वह भी ऐसे समय जब आजादी की जंग के शोले हर कान पर दस्तखत देने लगे थे । भयावह सामाजिक स्थिति भी थी । तथाकथित छोटी जाति के लोगो के साथ तो जानवर से भी बुरा व्यवहार होता था । दुर्भाग्यवस ऐसे

समाज में नन्दन भी आहे भर रहा था । गरीबी एवं दयनीय सामाजिक स्थिति के बाद भी वह हिम्मत नही हारा । हरी का नाम स्कूल में लाख मिन्नतियां कर लिखवा दिया जबकि उसकी जाति के बच्चों का अघोशित रूप से स्कूल में प्रवेश बन्द था । हरी को भी स्कूल में बहुत मुश्किलें आयी । अछूत जाति का होने के नाते उसे कक्षा में सब बच्चों से पीछे बैठाया जाता था । जहां मास्टर साहब की आवाज भी नही पहुंच पाती थी । स्कूल में पीने तक के पानी को उसकी परछायीं से दूर रखा जाता था । लाख मुश्किलें उठाकर भी हरी हिम्मत नही हारा अन्ततः बारहवीं की परीक्षा अव्वल दर्जे से पास कर लिया पर आर्थिक कारणों आगे की पढाई रूक गयी । हरी साल भर कलकत्तें में पटसन की कम्पनी में छोटा मोटा काम किया । सरकार नौकरी पहुंच से दूर जाती देखकर वह राजधानी आ गया । राजधानी में साल भर की बेरोजगारी झेलने के बाद पुलिस की नौकरी मिल गयी । नौकरी का समाचार सुनकर हरी के परिवार में खुशी की लहर दौड़ पड़ी ।

समय के साथ हरी आगे बढते रहे पुलिस की नौकरी में तरक्की करते करते दरोगा हो गये और उलझे हुए मामलों को सुलझाने में उन्हे महारथ भी हासिल हो गया । हरी को लोग बड़े आदर से हरी बाबू कहते । हरी बाबू की ईमानदारी के चर्चा सबकी जबान पर होते । हरीबाबू ने कई बड़े बड़े

और उलझे मामले सुलझाये । एकाध बार सस्पेण्ट भी हुए पर सच्चाई के पथ से विचलित नही हुए ।
एक दिन हरीबाबू थाने से काफी दूर भीड़भाड़ वाले से छुट्‌टी के कदन सादी ड्रेस में गुजर रहे थे । एक व्यापारी बचाओ बचाओ चिल्ला रहा था । कोई भी उसकी मदद के लिये आगे नही बढ रहा था । दो आतंकवादी लूटेरे दिनदहाड़े व्यापारी की तिजोरी छिन रहे थे । व्यापारी लहूलुहान था पर तिजोरी नही छोड़ रहा था । व्यापारी के चिल्लाने के आवाज हरीबाबू के कानों में पड़ी वह ललकारते दौड़े और एक आतंकवादी को दबोच लिये । अब क्या था आतंकवादी व्यापारी को छोड़ हरीबाबू पर टूट पडे। आतंकवादियो ने दरोगाजी के उपर दनादन पच्चास से अधिक बार छुरे से वार कर दिये । दरोगाजी हरी बाबू का शरीर झलनी हो गया । जांघ की नशे कट गयी । हरी बाबू हिम्मत नही हारे वे एक आतंकी पर कब्जा कर लिये । बड़ी चालाकी से आतंकी के छुरे आतंकी का पेट फाड़ दिये । वह वही स्पाट पर मर गया । हरीबाबू लड़खड़ा कर गिरने लगे तब तक दूसरा आतंकी वार कर बैठ संयोगबस वह भी दरोगाजी की गिरफ्‌त में आ गया, उसके भी पेट में छुरा दरोगा जी ने घुसा दिया पर आतंकी पेट दबाकर भाग निकला और दरोगाजी अधमरे वहीं तड़पते रहे । कोई भी आदमी दरोगाजी को न तो अस्पताल तक ले जाने की और नही एक फोन करने की

हिम्मत जुटा पाया । घण्टो बाद एक ठेलेवाले ने ठेले पर लादकर अस्पताल पहुंचाया । कई दिनों तक दरोगाजी मौत से जूझते रहे । इस बीच बीस बोतल खून चढ गया । अन्ततः दरोगाजी ने मौत पर भी विजय पा लिया । दरोगाजी के बहादुरी के चर्चे समाचार पत्रों के पन्नों पर खूब जगह पाये । दरोगाजी को बहादुरी का श्रेप्ठ पुरस्कार मिलना चाहिये था पर नही मिला । हां राजधानी के क्षेत्र विशेप को आतंकियों से निजात जरूर मिल गयी । हफ्ता वसूली करने वालों और आतंक मचाने वालो की हिम्मत टूट गयी । दरोगाजी सदैव निप्ठा एंव ईमानदारी से जन एवं राप्ट्र की सेवा करते रहे । सेवा के दौरान उनकी धर्मपत्नी का देहान्त कैंसर की बीमारी से हो गया । तीनों बेटे अपने अपने परिवार में रम गये । बेटी अपने घर परिवार में खुश थी । दरोगाजी शहर में अकेले रह गये । मुंह बोला बेटा रामलखन अपने फर्ज पर खरा उतर रहा था । पड़ोस में दूर के रिश्ते की साली और उनकी बेटियां रेखा और गीता भी खूब ख्याल रखती थी । दरोगाजी के अन्दर पुत्रमोह कूटकूट कर भरा हुआ था पर पुत्रों को दरोगाजी से नही उनकी दौलत से मोह था । समय अपनी गति से चलता रहा रेखा और गीता का ब्याह हो गया । दरोगाजी रोटी से मोहताज रहने लगे । इसी बीच उनका एक्सीडेण्ट हो गया । पैर की हड्डी टूट गयी । प्लास्टर तो हुआ पर दो दिन में उतरवा

दिये क्योंकि देखरेख करने वाला कोई न था । दरोगाजी का रोना देखकर उनके बड़े बेटे ने जर्बदस्ती अपने लिये एक लाचार विधवा दुखवन्ती देवी को जिसका दुनिया में कोई न था अपनी मां के रूप में खोज लाया । बेबस लाचार विधवा औरत की अस्मिता की रक्षा के लिये दरोगाजी ने छाती पर पहाड़ रखकर मंजूरी दे दी । उन्नसठ साल की उम्र में दरोगाजी का पुर्नविवाह हो गया पर जिस बेबस लाचार विधवा दुखवन्तीदेवी पर दया दिखाये थे वह भी दरोगाजी के जीवन में मुट्ठी भर आग साबित हुई। साल भर के बाद दरोगाजी सेवानिवृत हो गये । सेवानिवृत्ति के बाद दरोगाजी दुखवन्तीदेवी को लेकर अपनी बेटी के घर गये । अब दुनिया में सबसे प्यारे दरोगाजी के लिये बेटी दमाद नाती और नातिन थे । दरोगाजी बेटी और दमाद की वजह से तनिक खुश थे । बाकी सभी तो पैसे के भूखे उन्हे नजर आते थे दुखवन्तीदेवी चार कदम और आगे थी। दमाद के पिताजी तो दोस्त पहले और समधी बाद में थे । खूब जोड़ी जमती थी समधी समधी की । दरोगाजी सेवानिवृत्त होकर गांव आ गये । बेटी को फूटी कौड़ी नही दिये । बेटों ने उन्हें निप्कासित कर दिया पर उनकी नजरे उनके चल–अचल सम्पति पर टिकी हुई थी। दुखवन्तीदेवी भी रहरहकर कलेजे में तीर भेंाक देती । दरोगाजी गम को भुलाने के लिये खेतीबारी में दिल लगाने लगे । उनकी

मेहनत से अनुपजाऊं जमीन भी अन्न उगलने लगी पर दरोगाजी का स्वास्थ्य साथ छोड़ने लगा । सूरज डूब रहा था दरोगाजी सबसे बेखबर खेत में पसीना बहा रहे थे । दरोगाजी को काम करते हुए देखकर रघु के पांव ठिठक गये वह दरोगाजी के पास गया और बोला दरोगाजी क्यो मजदूरों जैसे रात दिन खट्ते रहते हो । अरे ये उम्र काम करने की नही है । आराम करने की है पोता पोती खेलवाओं, बहू बेटों से सेवा करवाओ ।

दरोगाजी बोले– जब तक हाथ पांव आंख ठेहुना सलामत है तब तक किसी का आश्रित नही रहूंगा । रघु जीवन एक जंग है इसे जीतने का प्रयास जब तक सांस है तब तक करता रहूंगा । अब तो हमारे जीवन की दूसरी जंग शुरू हो गयी है ।

रघु–दरोगाजी आपको हाड़ निचोड़ने की क्या जरूरत है । अरे आप तो अपने पेंशन से चार आदमी को और पाल सकते है ।

दरोगाजी–कह तो ठीक रहे हो रघु मेहनत करने में बुराई क्या है ? अभी तो स्वस्थ हूं । काम करने लायक हूं । गरीब मां बाप की औलाद हूं । मैंने बहुत दुख उठाये है । मां बाप को आंसू से रोटी गीला करते हुए देखा है मैंने । मां बाप के आर्शीवाद से कहां से कहां पहुंच गया । आज मेरी औलाद साथ नही दे रही है । बेटे मुझसे दूर होते जा रहे है

। क्या यह किसी नरक के दुख से कम है । खैर किसी जन्म के पाप का फल मिल रहा होगा मुझे ।
रघु–दरोगाजी आपकी तबियत ठीक नही लगी रही है ।
दरोगाजी–हां कुछ दिनों से रह रहकर सांस जैसे अटक जा रही है । ठीक हो जायेगा । कोई चिन्ता की बात नही है । चिन्ता तो बस अपनों से है जिसके लिये सपने बुने थे वही दिल में छेद कर रहे है ।
रघु–दरोगाजी मैं भी उस दिन दंग रह गया जब आपके बडें ने आपको बेटी की गाली दी । सफेद रंगे सिर के बाल उखाड़ने तक की धमकी दिया था। वह भी आपके दमाद बेटी नाती और नातिन के सामने । उसे ऐसा नही कहना चाहिये था ।
दरोगाजी–नासमझ है । जब उन पर पडेगी तब याद आयेगी मेरे साथ जो वे कर रहे हैं । वे हमारे लिये नही खुद के जीवन में कांटा बो रहे हैं । हमारी तो बित गयी है । थोड़े दिन का और मेहमान हूं । देखना यही लोग आंसू बहायेगे । मेरे छोड़े रूपये को पाने के लिये रात दिन एक कर देगें । रूपये और मेरी विरासत तो पा जायेगे पर दिल में कसक तो उठेगी जरूर । अब तो मेरी हिम्मत ही मेरा सहारा है रघु जिस दिन मेरी हिम्मत छूटी मै समझो गया उपर ।

रघु–दरोगाजी ऐसा ना कहो आप तो दीर्घायु होओ और स्वस्थ रहो । अब मैं चलता हूं । देखो अंधेरा छा गया है । आप भी घर जाओ भौजाई राह ताक रही होगी ।
दरोगाजी–दुनिया मतलबी है । घर में तो खौफ डंसता रहता है ।हंसते जख्म क साथ कब तक आदमी जश्न मना सकता है । खेत मे खड़ी फसलों के साथ बाते कर मन हल्का हो जाता है । चलो मैं भी चलता हूं । रघु अपने घर की ओर दरोगाजी अपने घर की ओर चल पड़े ।
दरोगाजी घर आये हैण्डपाइप चलाकर बाल्टी में पानी भरे,हाथ पांव धोये । एक लोटा पानी पीकर खटिया पर बैठे। फिर ना जानो शरीर को कौन सी व्याधि पकड़ ली । दरोगाजी की तबियत बिगड़ने लगी । रात बडी मुश्किल में बिती सुबह होते होते तबियत ज्यादा खराब हो गयी । हालत इतनी खराब हो गयी कि बिस्तर से उठा नही गया ।दो दिन वही बिस्तर पर पड़े पड़े कराहते कराहतें एकदम से टूट गये । बड़ीी मुश्किल से दीवाल के सहारे बैठ पाते । बैठते हीं चक्कर आने लगते । बिगड़ती हालत में बड़बडाने लगे । दरोगाजी की तबियत खराब है कि खबर उनकी बेटी के देवर सत्यानन्द को लगी वह भागकर दरोगाजी को देखने गया । वहां उनकी दयनीय दशा देखकर सत्यानन्द घबरा गया दरोगाजी की तबियत बिगड़ती देखकर सत्यानन्द ने दरोगाजी के छोटे बेटे रामानुज को साथ लेकर अस्पताल में भर्ती

करवाया । मर्ज डाक्टरों की समझ में नही आयी । दर्द में बड़बडाते हुए देखकर एक डाक्टर ने तो पागलखाने भेजने तक की सिफारिस कर दी । जबकि दरोगाजी को मस्तिष्क ज्वर था ,दो दिन में जानलेवा हो गया था । डाक्टर बीमारी को नही समझ पाये। दरोगाजी दो दिन अस्पताल में तड़पते रहे इसी बीच बेटा मझला दयानुज शहर से आ गया। दरोगाजी दयानुज से लड़खड़ाते हुए बोले तुम तीनो भाई आपस में लड़ना नही । मेरी चल अचल सम्पति के चार हिस्से कर लेना । तीन हिस्सा तो तुम तीनों भाईयों का होगा और चौथा हिसा तुम्हारी नयी मां का । सत्यानन्द से बोले बेटे दमादजी हृदयानन्द बीटिया सेवामती,नानित सुमन,रूपेश और दिनेश अभी नहीं पहुंचे क्या ? बस दो दिन में इतना ही बोल पाये थे । इसके और कुछ भी नही बोल पाये। जबान पर जैसे ताला लटक गया पर आंखों से आंसू ऐसा बहना शुरू हुआ की रूका नही । सम्भवतः दरोगाजी की अन्तिम इच्छा बेटी दमाद से मिलने की थी हालत और अधिक बिगड़ने लगी तब सत्यानन्द बनारस लेकर भागा । बनारस जाते समय रास्ते में हर जंग जीतने वाले दरोगाजी मौत से हार गये । बड़े बेटे समानुज जो दरोगाजी से झगड़कर चला गया था उसे खबर दी गयी पर वही न आने की जिद पर अड़ा रहा । बेटी दमाद खबर

लगते ही पन्द्रह सौ किलोमीटर दूर शहर से दरोगाजी के अन्तिम संस्कार में शामिल होने के लिये चल पड़े ।

मौत के दूसरे दिन दरोगाजी के मृतदेह को सजाया गया । मातमी धुन बनजे लगी पर हजार घर वाले गांव में दरोगाजी के मृतदेह का लंगोट पहनाने वाला कोई न मिला । आखिरकार छोटी उम्र का सत्यानन्द ने अपने हाथों से लंगोट पहनाया । दोपहर ढलने को आ गयी ट्रेन लेट होने के कारण बेटी दमाद नही पहुंच पाये । दरोगाजी की आखिर बाराता ;जनाजाद्ध निकल पड़ा । आगे आगे चार कंधों पर दरोगाजी का मृत देह चल रहा था पीछे पीछे बैण्डबाजा वाले मातमी धुन बजाते हुए । सौभाग्सबस चार कंधों में दो कंधे उनके छोटे और मझले बेटे के शामिल थे ।बैण्डबाजे को देखकर कुछ लोग छींटाकसी करने से बाज नही आ रहे थे । कुछ लोग कर रहे थे कि दरोगा की दूसरे ब्याह की बारात में भले ही बैण्डबाजा नही बजा तो क्या आखिरी बारात में बीटिया की ससुराल वालो ने तो बजवा ही दिया ।कोई कहता अरे ये जनाजा नही दरोगा के आखिरी ब्याह की बारात निकल रही है । भले ही कुछ लोग छींटाकसी कर रहे थे पर सच्च तो यही था ।

दरोगाजी का जनाजा निकलने के घण्टे भर बाद बेटी दमाद भी आ गये पर जनाजा तो निकल चुका था । काफी

मशक्कत के बाद हृदयानन्द और सेवावती श्मशान पहुंचे पर क्या दरोगाजी का मृतदेह गोमती नदी के किनारे आठमन लकड़ी की चिता में भस्म होकर राख हो चुका था । चिता को पांच मटके पानी से ठण्डे किये जाने का कर्मकाण्ड शुरू था । इसी बीच हृदयानन्द और सेवावती ने अश्रुपूरित श्रध्दांजलि अर्पित की । शेप कर्मकाण्ड की प्रक्रिया तनिक देर में पूरी हो गयी । पचतत्व में विलीन दरोगाजी के मृतदेह के अवशेप को गोमती नदी को समर्पित कर दिया गया। चिता एकदम ठण्डी हो चुकी थी । गर्माहट बची थी तो बस चल–अचल सम्पति के बंटवारे को लेकर ।

20–गुड़िया का ब्याह

काहो बेटवा कब आये शहर से । गुड़िया के ब्याह के दिन आ रहे हो ।एकाध महिने पहले आना था।

मायादीन–काका राह चलते संदेश पूछ रहे हो ।

मिठाई–लो बेटा कुछ देर तुम्हारे साथ गपशप कर लेता हूं । काम इतना फेल गया है कि मरने की फुर्सत नही है ।कटाई दवांई तो हो गयी पर भूसा ढोने को पड़ा है । नही ढो गया तो आंधी उड़ा ले जायेगी ।उपर से गृडी का ब्याह ।

मायादीन–काका गुडी करने लायक हो गयी ।कल की बच्ची इतनी बड़ी हो गयी । मायादीन कुछ बोल पाता इतने में प्रिया आ गयी और बोली अरे बाबा को टूटी खाट पर बैठा

दिये हुक्का तम्बाकू पूछे कि नही । बातों में ही मग्न हो गये ।
मायादीन– हुक्का तम्बाकू का हाल मै। क्या जानूं ।मैने तो कभी खाया पीया ही नही कहते हुए सधना बीटिया को बुलाकर मीठा पानी देकर हुक्का चढाकर लाने को बोले ।
सधना–पापा हैण्डपाइप पानी बार बार छोड़ रही है ।वाल्व कट गया होगा । मैं कुये से बाबा के लिये ठण्डा पानी लाती हूं ।
मायादीन–काका गुडी के ब्याह के बारे में कुछ कह रहे थे ।
मिठाई–हां बेटा अपने को तो भगवान ने बीटिया दिया नही । अब पोतियों का ब्या कर गंगा नहां लूंगा ।
मायादीन–प्रेम को कितनी बेटियां हो गयी है ।
मिठाई–बेटा अभी तो चार है ।आगे भगवान की महिमा ।
मायादीन–काका गुडी कितने बरस की हो गयी कि ब्याह के नाम पर उसकी मुटठी में आग भरने जा रहे हो ।
मिठाई–ये क्या कह रहे हो मायादीन । पोती का ब्याह करने जा रही हूं । उसकी चिन्ता मुझे है । 12 बरस की हो गयी है ।
मायादीन–सच काका तुम गुडी की मुट्ठी में आग भरने जा रहे हो । तुम गुडी का कल तबाह करने जा रहे हो । काका गुडी का ब्याह नही तुम अपराध करने जा रहे हो ।रोक दो ब्याह गुडी के साथ अन्याय ना करो काका ।

मिठाई–क्या कह रहे हो ।सुना है कुछ दिन पहले हमारी गुडी से बहुत छोटी लड़की के ब्याह में मन्त्री तक आर्शीवाद देने गये थे ।हमारी गुडी तो बारह से उपर की होगी ।जातिवाद,भूमिहीनता ऐसी बीमारियां जो शोषितों वंचितों मुट्‌ठी में आग भर रही है । जीवन का असली सुख छिन रही है । उनका तो कानून कुछ बिगाड़ ही नही पा रहा है । तब तक तुम बाल विवाह रोकने वाले कानून की दोहायी दे रहे हो । बेटवा तुमको अपनी बिन मां की भांजी का ब्याह बहुत पहले कर देना था । सस्ते में निपट जाते । उन्नीस साल की हो जाने पर ब्याह करने जा रहे हो ।
मायादीन–हां काका मेरी भांजी गुड़िया की मां के साथ जो अन्याय हुआ वह तो गुड़िा के साथ नही होने दूंगा ना । बेचारी बहन असमय मर गयी । बहनोई ने दूसरी शादी कर ली । बेचारी गुड़िया को घर से निकाल दिया ।बाप की गलती बेटी को भुगतना पड़ा मेरी बहन का बालविवाह न होता तो अभी नही मरती ।बहन को मरे अट्‌ठारह साल हो गये । भांजी गुड़िया को जन्मे उन्नीस । समय कितना जल्दी बदल जाता है । हम आंख फाड़े देखते ही रह जाते है ।
मिठाई–ठीक कह रहे हो बेटा । परम्परायें तो तोड़ने के लिये बनती है पर लोग दम्भ में न तोड़ते हैं ओर न तोड़ने देते । ऐसी ही परम्पराये है जातिवाद,विधवाजीवन,बालविवाह एवं और भी बहुत सी बुरी परम्पराये है जो सभ्य समाज के माथे पर

दाग है ।समाज और शासप प्रशासन ईमानदारी से काम किया होता तो ये सामाजिक बुरी परम्पराये ना जाने कब की खत्म हो गयी हो । आज भर भर मुट्‌ठी आग का एहसास न कराती ।कुप्रथाओं के खत्म होने से सत्ताधारियों को नुकशान होगा ना इसीलिये तो सारी सामाजिक कुप्रथ्याओं को स्वार्थ का आक्सीजन दिया जा रहा है तथाकथित श्रेष्ठजाति और श्रेष्ठ समाज के नाम पर और कुल की थोथी परम्परा के नाम पर ।

मायादीन–काका तुम तासे बात तो समाज बदलने की कर रहे हो ।काका तुमने गुडी के भविष्य के बारे में नही सोचा । नन्ही गुडी का ब्याह करना न्यायसंगत है क्या काका । अरे काका तुम जैसे सोच वालों के लिये तो सामाजिक कुप्रथाओं को कुचल देने के लिये कमर कसकर आगे आना चाहिये ।कुप्रथाओं को उखाड़कर फेंकने का वक्त आ गया है ।इन बुरी परम्पराओं से फुर्सत पाओ । समाज को आदमी को आदमी होने का सुखभोगने लायक बनाओ । सभी अपने पैर पर खड़े हो मान सम्मान के साथ जीयें । कुप्रथाओ को कुचल देना चाहिये, सांप के फन जैसे न बांस रहे ना बांसुरी बाजे काका ।

मिठाई–हां बेटवा बात तो अच्छी बता रहे हो ।

मायादीन–काका लाग पढ लिख रहे है । दुनिया ने खूब तरक्की की है ।काका कुप्रथाओं को से निजात तो पाना ही

होगा । कब तक विषमतआवादियो की परोसी मुट्‌ठी भर आग के निशान पर आंसू बहाते रहेगे । खदु को कमर कसना होगा तभी बुराईयां दूर भागेगी । काका बुराईयों के दमन का वक्त आ गया है ।जमाना तेजी से बदल रहा है काका ।

मिठाई–बेटा जमाना तो मुझे बदलता हुआ नही दिखाई पड़ रहा है । एक बाल्टी पानी बाबू साहेब के कुयें से एक बाल्टी पानी आज भी नही ले सकते हैं। बाबू साहेब अंजुरी भर पानी की जगह जातिवाद के कलछुले से अंजुरी में आग भर देगे ।कुप्रथायें अपने देश से शायद ही खत्म हो पाये । बड़ी–बड़ी कुर्सियां तो जातिवाद की बैसाखी के सहारे तो नेता लोग कबाड़ रहे है । जातिवाद के शिकार तो हम सभी है । अखबारों में अत्याचार का काला चिट्‌ठा तो रोज ही छप रहा है । कहीं बलात्कार,कहीं जूते चप्पल पहनकर निकलने पर प्रतिबन्ध कही दूल्हे को घोड़ी पर चढ़ने पर प्रतिबन्ध इतना ही नही स्कूलों में बच्चों को अलग अलग भोजन परोसा जा रहा है जबकि यह योजना तो सरकार की है यहां भी जातिवाद । बेटा स्कूलों में जातिवाद कुप्रथाओं का ही तो नतीजा है । बेटा तुम्हारे साथ क्या अच्छा हुआ है । तुम इतने पढलिखकर भी जातिवाद का दंश झेल रहे हो । तुम्हारी तरक्का बाधित कर दी है सामन्तवादियों ने ।

मायादीन–काका मैं भी दंश झेल रहा है। आपकी बात मे सच्चाई है पर काका हाथ पर हाथ धरे बैठने से भला तो नही होने वाला है ना । पहले अपने घर से शुरूवात करनी होगी ।
मिठाई–बेटा तुम्हारी बात तो मैं समझ गया । मेरी गुडी का ब्याह रूकने से तो न बालविवाह की कुप्रथा खत्म होगी ना ही जातिवाद ।
मायादीन–काका क्या कह रहे हो बालविवाह के पीछे जातिवाद है ?
मिठाई–हां बेटा।असली जड़ तो जातिवाद ही है ।जिस दिन जातिवाद मिट जायेगा ससार सामाजिक बुराईयां मिट जायेगी । पहले तो चार साल से छोटे बच्चों का ब्याह भी हो जाता था । कभी कभी तो बच्चा पैदा होने से पहले बात पक्की हो जाता थी । कमजोर तबके के लोग जल्दी से जल्दी अपनी बेटी को जातिपूत को सौपकर गंगा नहाना चाहते थे ।
मायादीन–ऐसा क्यों काका ?
मिठाई–मां बाप का अपनी इज्जत बचाने के लिये बालविवाह करना जरूरी हो गया था । बेटा छोटी बिरादरी के लोगों के सामने यही एक सुरक्षित उपाय था जिससे उनकी बहन बेटियों की इज्जत बचायी जा सकती थी ।बेटा जब देश गुलाम था तब भी कमजोर तबके के लोगों पर गाज गिरती थी आज भी उन पर ही गिर रही है ।शोषित आज भी

आजाद नही है और नही सुरक्षित है । पुराने समय में तो चारों तरफ से भेड़िया छोटे लोगों की इज्जत पर कुदृष्टि जमाये रहते थे । खैर आजकल थोड़ा कम तो हुआ है अत्याचार पर वंचितों को सम्मान से जीने का हक तो नही मिल सका है । भले ही कितने कानून बने हो पर सच्चाई तो यही है कि छोटे बिरादरी के लोगों पर अत्याचार कम नही हुआ है । बेटा जब अंग्रेजो का राज था और जमीदारों की तूती बोलती थी तब बालविवाह हम कमजोर तबके लिये अपनी इज्जत बचाने के लिये अच्छी परम्परा थी ।

मायादीन–काका तुम्हारी बात सुनकर मुझे बालविवाह के रहस्य का पता चल गया पपरन्तु काका पुराने जमाने में अंग्रेजों का राज था सामन्तवादियों के अत्याचार करने की पूरी छूट थी अब तो देश आजाद हो गया है कानूनी तौर पर सबको बराबर का हक है ।

मिठाई–काका सब कागज में कैद है । जातिवाद और रूढिवादी कुप्रथाओं का प्रचलन तो यही कहता है। भूमिहीनता और दरिद्रता तो कमजोर तबके की छाती पर आज भी सांप की तरह लोट रही है । बेटा जब तक जातिवाद खत्म नही होगा भारतीय समाज में सामाजिक बुराईया खत्म नही हो सकती । चाहे बाल विवाह हो या कोई और कुप्रथा ।

मायादीन–काका तुम्हारी बात में सच्चाई तो है आने वाला समय जातिवाद को नकार देगा । आने वाली पीढी जातिवाद के चक्रव्यूह में नही उलझेगी उसके सामने तो बस एक ही लक्ष्य होगा उज्जवल भविष्य ।यही लक्ष्य सारी कुप्रथाओं को रौद देगा । जातिवाद की दीवारे ढहा देगा । हमे भी तो अपनी ओर से पहल करनी होगी । जातिवाद के खिलाफ बालविवाह के खिलाफ और दूसरी बुराईयों के खिलाफ एक होना होगा ।

मिठाई– हां बेटा । सामाजिक सम्मान के लिये तो जरूरी हो गया है ।

मायादीन–विज्ञान के युग में सामाजिक बुराई जवान है बड़े दुर्भाग्य की बात है ।

मिठाई–बेटा जातिवाद के साथ ही पितृ सत्ता में बालविवाह को बढावा दे रही है ।जातीय बड़पन वंश और ना भी ढेरों अहंकार की बलिबेदी पर बेटियां चढ रही है ।अर्न्तजातीय विवाह की राह में जातीय दम्भ बड़ी रूकावट है ।जातिवाद सामाजिक समानता,सदभावना पनपने नही दे रहा है । बेटा जातिवाद पर जोरदार प्रहार हो जाये तो बालविवाह की कुप्रथा खत्म हो जायेगी ।

मायादीन–विवाह दो आत्माओं का पवित्र मिलन न होकर जातीय दम्भ और खानदानी प्रतिष्ठा का सौदा हो गया है ।

मिठाई–हां बेटवा ।

मायादीन–काका लोग बालविवाह और जातिवाद की बुराईयों को समझने लगे है । बदलाव तो आयेगा ।
मिठाई–अभी शदियां लगेगी ।कानून का पालन करवाने वाले भी तो किसी ना किसी जातीय दम्भ के वशीभूत होते है ।जाति के तराजू पर आदमी को पहले तौला जाता है कानून का पायजामा बाद में पहनाया जाता है । तभी तो आजादी के इतने बरसों बाद कुप्रथायें और रूढियां खत्म नही हुई है ।
मायादीन–धीरे धीरे सब सामन्य हो जायेगा भेदभाव की दीवार ढह जायेगी । काका जातिवाद बहुत पुरानी बीमारी है ।देखो न आजकल कोर्ट मैंरेज का चलन शुरू हो गया है । प्रेम विवाह भी अस्तित्व में आने लगा है । इसके कुठराघात से जातिवाद और दहेज भी नही बंच पायेगा काका ।
मिठाई–बेटा सजातीय प्रेमविवाह को ही कुछ मान्यता मिल पाती है । विजातीय प्रेमविवाह तो खूनखराबे की दास्तान लिख रहा है ।बेटा सजातीय विवाह दहेज जैसी कुप्रथा का पोषक भी तो है ।
मायादीन–काका बहुत घुमावदार बात कर रहे हो ।बालविाह जातिवाद को बढावा देता है और जातिवाद दहेजप्रथा को ।
मिठाई–हां बेटा एक बुराइ दूसरी बुराई को ही जन्म देगी ना । यदि बुराईयों से बचना है तो बुराई को खत्म करना होगा ।

मायादीन–काका आपके कहने का मतलब है कि भारतीय समाज में सी बुराईयों की जड़ जाविाद है ।
मिठाई–हां बालविवाह रोकना है तो जातिवाद खत्म करना होगा ।अब मैं चलता हूं बहुत काम पड़ा है ।
मायादीन–काका हुक्का तो पी लो ।
मिठाई–बेटा मुझे जाने दो । मेरी आंख खुल गया है । काश जातिवाद के दम्भियों की खुल जाती ।
मायादीन–क्या कह रहे हो काका ।
मिठाई–ठीक कह रहा हूं बेटा ।
मायादीन–मतलब.......
मिठाई–बेटा तुम गुड़िया की डोली उठाने का इन्तजाम करों और मैं गुडी की डोली रोकने का । बालविवाह रोकना है ना बेटवा क्योकि गुड़िया का जीवन खुशियों से भरना है हंसते जख्मों से नही बेटवा तुमने मेरी आंखे खोल दी ।

21–कोरा–कागज

दिसम्बर का महीना खत्म होने की कंगार पर था परन्तु जाड़ा कंपाने वाली । सायं–सायं चलती हवा की छुअन सुई की चुभन सरीखे तन को महसूस हो रही थी । बूढे और बच्चे ओलाव को घेरे गरमाहट महसूस कर रहे थे । मजदूर लोग खेत मालिकों के खेत–खलिहान में पसीना बहा रहे थे । ठण्ड से बचने के लिये दीनु ओलाव के पास बैठा डेबरी की

मंद रोशनी में जमीन पर राख बिछाकर किताब के सवाल हल कर रहा था । इसी बीच दीनु की मां सुमति काम पर से आ गयी और दीनु दीनु पुकारने लगी । दीनु बाहर गया । सुमति ने सिर पर से अनाज की पोटली दीनु को थमाकर बाल्टी से पानी लेकर हाथ पांव धोने लगी । सुमति भी ओलाव पर हाथ-पांव सेकने लगी ।

दीनु बोला मां पानी लाऊं ।

सुमति-हां बेटा प्यास तो लगी है । ला एक गिलास पी लेती हूं । चूल्ह चौका भी करना है । भूखे-प्यासे तेरे बाबू भी आने में ही हैं ।

दीनु-लो मां पानी पीओ ।

सुमति गिलास का पानी थामते हुए दीनु के मुरझाये चेहरे को देखकर बोली बेटवा इतना उदास क्यों है । कियी से लड़के से झगड़ा तो स्कूल में नही हो गया या हरीलाल मुंशी ने डांट तो नही दिया ।

दीनु-नहीं मां ना मुंशी जी ने डांटा है और ना ही स्कूल में किसी लड़के से झगड़ा करके आया हूं ।

सुमति-बेटा तू इतना गुमसुम तो नही रहता था । तू परेशान तो है किसी न किसी बात से । तेरी आंखें भी लाल सुर्ख हो रही है । तबियत तो ठीक है या कोई परेशानी है । हम तो तुम बच्चों की देखभाल कर नही पाते । सुबह जाओ तो रात में आओ । मालिकों के खेत में पसीना बहाओ। बेटा

तुम मजदूर मां बाप के बच्चे हो । अपनी किस्मत में तो गुलामी लिख दी है बूढे समाज ने । तुम पढ–लिखकर कलेटर बन जाते तो मेरा जीवन सफल हो जाता ।
दीनु–मां पढ ही तो रहा था देखो ।
सुमति–राख बिछाकर सवाल हल कर रहे थे ।
दीनु–हां मां ... इतना कहते ही उसकी आंखों में सावन उमड पड़ा ।
सुमति–कापी नही है ?
दीनु–नही. मां...
सुमति–तेरे बापू को आने दे कोई व्यवस्था करने को कहती हूं । जब तक कापी नही आती है । पढ–पढ कर याद करों ।
दीनु–ठीक है मां पर मुंशीजी को क्या दिखाउंगा ?
सुमति–बापू को आ जाने दो । कापी की व्यवस्था हो जायेगी ।
दीनु–ठीक है मां... कहकर दीनु पढने लगा ।सुमति रोटी बनाने में जुट गयी । रोटी बन गयी । दीनु के बाबू रघुबीर के इन्तजार में सुमति बार–बार अन्दर–बाहर करने लगी पर कही अता–पता नहीं । दीनु को नींद आने लगी । बस्ती वाले जागते रहो,जागते रहो पुकारने लगे।काफी रात गुजर जाने के बाद रघुवीर घर आया। रघुवीर के काफी विलम्ब से आने से सुमति घबराई हुई से बोली क्यों जी इतनी देर कैसे

हो गयी । सुनों अपने गांव में ही नही आसपास के गांवों में पहरा पड़ने लगा है । खून जमा देने वाली ठण्ड पड़ रही है । काम तो कब का खत्म हो गया था । चिलम की लालच में बैठे थे ना । अरे कभी –कभी तो घर जल्दी आ जाया करों । बच्चों को उजाले में देख लिया करों । बेटवा इन्तजार करते–करते सो गया ।
रघुवीर–भागवान क्यों आक्षेप लगा रही हो । मै। चिलम की लालच में नही जमींदार के बताये काम कर रहा था । ये जमीदार लोग जोक है । हम मजदूरों का खून चूसकर पलते बढते हैं। वे तो चाहते है हम चारो पहर उनकी गुलामी करते रहे । हम शोषित वंचित लोग आजाद देश के गुलाम है । बड़ी मुश्किल से मोहलत मिली है । आ तो गया न भले ही देर से आया दुरूस्त तो आ गया ना ।
सुमति–आ तो गये दुरूस्त पर तुम दुखी मन से कह रहे हो । कुछ बात तो नही हो गयी ।
रघुबीर–मालिकों के इशारे पर नाचते रहे तो ठीक है । तनिक उफ् हुई तो बात के चाबुक दिल पर चोट कर जाते है । करे भी तो क्या करें । इन खेत मालिको की गुलामी तो अपनी मजबूरी है । सामाजिक रूप से पशुता का और आर्थिक रूप से दरिद्र का जीवन जी रहे है ।लोग कहते है हमारा देश बड़ा महान है । अरे काहे का महान है आदमी की कद कुत्ते बिल्ली इतनी भी नही है । दिन रात की

मेहनत–मजदूरी के बाद पेट भर अन्न नसीब नही हो रहा है । बाकी जरूरते मुंह बाये खड़ी रहती है सुरसा की तरह है ।
सुमति–कोई कहा सुनी हो गयी । खेत मालिक ने कुछ अपशब्द कह दिया क्या ?
रघुबीर–जब से आंख खुली तब से तो सुन रहा हूं । खुद खाना खाकर ढंकार मारते हुए बाहर निकले तो मैंने कहां मालिक अब मैं घर जा रहा हूं । काम तो सब कर दिये । मालूम है कंस ने क्या कहां ?
सुमति–ताने मारे होगे । बुरा –भला कहा होगा ।
रघुबीर–नरपिशाच कहता है अरे तुम मजदूरों का पेट भरने लगता है तो मालिकों का मुकाबला करने लगते हो । तुम्हारी घरवाली छप्पनभोग बना कर इंतजार कर रही होगी ।बड़ा घर वाला हुआ है । तेरा घर कहां खड़ा है जातना है ना ? मुझसे बर्दाश्त नही हुआ मैंने भी कह दिया मालिक हमारे दादा–परदादा से जर्बदस्ती अंगूठा लगवाकर मालिक बन बैठे हो । हमें मजदूर अछूत बनाकर हमारा खून पीकर राज कर रहे हो और हमें ही आंख दिखा रहे हो । जिसकी बिल्ली उसकी को म्याऊं । बाबू जमाना बदल गया है । गोरे भाग गये दुम–दबाकर अपनी सरकार है । हमारे वोट से सरकार बनती बिगड़ती है । अरे दिन भर कि दो सेर अनाज देते हो । परिवार का पेट भरने के लिये रोटी भी तो नही

बनती । तन पर कपड़े,सड़ रहे है । बीमारी में दवा नही कर पा रहे है । बच्चे अनपढ रह जा रहे है । इस सब का जिम्मेदार कौन है जानते है ? जमीदार सूरज बाबू बोले मैं हूं क्या ? मैंने भी कह दिया हां और कौन है जमीदार और विषमतावादी व्यवस्था के अलावा ।
सुमति- तब क्या बोले ?
रघुबीर-जीभ तालु से चिपक गयी । कुछ देर सोच कर बोले आजादी क्या मिली मजदूरों के दिमाग खराब होने लगे है । जा सुबह जल्दी आ जाना ? खेत खलिहान चारो ओर काम पसरा है ।दीनु की मां तनिक एक मेहरबानी कर दो ।
सुमति-बहुत थक गया हूं । आग ला दो । एक चिलम गांजा पी लूं । शंकर भगवान की कृपा से चिन्ता और थकाई छू-मन्तर हो जायेगी ।
सुमति-रोटी खाओं गांजा पीकर फेफड़ा क्यों सड़ाने पर तुले है । नशा खत्म होगी तब फिर से चिन्ता छाती पर बैठ जायेगी ? कब तक ढूठा ढाढस खुद को देते रहोगे ?बेटवा को आगे प्ढाने के बारे में सोचो तभी चिन्ता के बादल छंट सकेगे ?
रघुबीर-हां इसी उम्मीद में तो जी रहा हूं ।अभी तो चौथी क्लास में पढ रहा है । साहब -सुब्बा बनने में अभी देर है ।

रघुबीर ओलाव सेकते –सेकते गांजा का धुंआ हवा में उड़ाया फिर रोटी खाकर ओलाव के पास बिढे पुआल पर खर्राटे मारने लगा । सुबह जल्दी उठकर सुमति जानवरों को हौद लगायी चारा डाली । फिर बकरी को मड़ई से निकाल कर बाहर बांधी और नीम से पत्तियां तोड़कर उनके सामने डाल दी । बकरिया मिमियाते हुए नीम की पत्तियां खाने लगी । इसके बाद वह घर के काम में जुट गयी ।रघुबीर जल्दी काम पर चला गया । जल्दी–जल्दी रोटी बनायी और मजदूरी पर जाते हुए बोली दीनु बेटा खेत से बजरी काट लाना और बाल देना । चारा कटा रहेगा तो तुम्हारी छोटी बहने हौद में डाल देगी । हां स्कूल जाने से पहले जानवरों को हौदं से हटाना नही भूलना ।

दीनु–मां कर तो सब दूंगा पर स्कूल नही जाउंगा ।

सुमति–क्यों ?

दीनु–तीन दिन से कह रहा हूं तुमसे पर मां तुम्हे मालूम नही ?

सुमति–कापी नही है । बेटा तेरे बाबू तो हवेली चले गये । जा उनसे पैसे मांग ला । गांजा के लिये तो उनकी व्यवस्था हो जाती है पर बेटे के कापी–किताब की व्यवस्था नही कर पाते ।

दीनु– ठीक है मां घर का काम करके चला जाऊंगा ।

सुमित–बेटा काम छोड़ तू जा बापू से पैसा मांग कर ला उनके पास नही होगा तो जमीदार से उधार ले लेगे दो–चार रूपया ।
जमीदार सूरज बाबू दीनु को हवेली की चहरदारी के अन्दर आते देख लिये । रघुबीर गोबर उठा रहा था,तभी जमीदार बोले अरे रघुबीर देख तेरा बेटा आया है ।
रघुबीर–दीनु इस वक्त तुम यहां स्कूल नही जाना है क्या आज ? क्यों आये हो ?
दीनु–बापू कापी खरीदना है आठ आना चाहिये एक जिस्ता कागज लेकर कापी बना लूंगा ।
जमींदार सूरज बाबू बोले –क्या खाबर लेकर आया है तेरा बेटा रघुबीर ।
रघुबीर–आठ आना मांग रहा है कापी खरीदने के लिये ।
सूरजबाबू–दे दे ना । एक दिन गांजा मत पीना । पढायेगा नही तो तेरा बेटवा कलेटर कैसे बनेगा । अभी तो चौथी में पढ रहा है ना दीनु ।
दीनु–हां मालिक ।
सूरजबाबू–रघुबीर बी.ए.पास करेगा तब किसी दफतर में नौकर मिल सकेगी । आठ आना नही दे पा रहा है तो आगे की पढाई कैसे करवायेगा ।

रघुबीर–बाबू उपर वाला लाज रखेगा । पसीने के सेर भर अनाज को सोना बनायेगा । हमारी क्या औकात है । हमारी दुनिया तो उम्मीदों पर टिकी है ।

सूरजबाबू–अरे जो काम कर नही सकता उसके पीछे क्यों पड़ा हैं । अपने साथ काम सीखा । पांच बीसा जमीन और हलवाही में ले लेना । हां नियति मत खराब करना क्योंकि अब तुम आजाद हो गये हो ना । तुम्हारी सरकार है । तुम्हारे वोट से बनती है । दस बीसा हलवाही में खेत दिया हूं उसमें जो पैदा करता है तेरा ही होता है उपर से सेर भर मजदूरी क्या कम है ? अरे बंधुवा मजदूर हो वैसे ही बने रहे हो । ज्यादा सपने देखोगे तो चारो खाने चित होकर गिर पड़ोगे थक हारकर।

रघुबीर–बेटवा को पढाकर रहूंगा । भक्त की मदद तो भगवान को करना ही होगा । दीनु बेटा अभी तो स्कूल जा । आज कुछ ना कुछ इन्तजाम कर लूंगा ।

दीनु–ठीक है बाबू जा रहा हूं । मुंशी जी की डांट आज और सुन लूंगा । दीनु वापस जाने लगा । दीनु को जाता हुआ देखकर जमीदार सूरज बाबू बोले क्या हुआ कापी का इन्तजाम नही हुआ । आ दीनु मेर पा आ.....

दीनु–मालिक स्कूल जाने में देर हो जायेगी ।

सूरजबाबू– मेरे पास कुछ खतौना वाला सरकारी कोरा कागज है कापी बनाने लायक । मेरे बच्चे तो उसी पर रफ करते है

। तू भी दो चार पन्ने ले जा । गज–गज भर के कागज है ।
दीनु–नही चाहिये .... मालिक भीख दे रहे है मुझे ना ।
सूरजबाबू– नही दीनु तू तो हमारे मजदूर का बेटा है । भीख कैसी ? कीमत तेरा बाप दे देगा अगर नही भी देगा तो वसूल लूंगा ।
रघुबीर–बेटा मालिक ठीक कह रहे है ।
दीनु–फोकट में कौन किसकी मदद करता है बाबू।
सूरजबाबू–सरकारी कागज है । फोकट में दे दूंगा पर कोर कागज को भूलाना नही । इसकी कीमत तो बहुत है पर यादों में रखना । कलेटर बन गया तो मुझे पहचान तो लेगा ना ... कहते हुए सूरज बाबू अपने बड़े बेटे अनन्त को बुलाने लगे ।
अनन्त– बाबू क्यों बुला रहे है । स्कूल जाने का समय हो गया है ।
सूरजबाबू–इसको पहचानते हो ।
अनन्त–हां अपने मजदूर रघुबीर को बेटा है ना ये तो ।
सूरजबाबू–शाबास सही पहचाने । रघुबीर इसे कलेटर बनाना चाहता है ।
अनन्त–कलेटर......
सूरजबाबू–हां । रघुबीर बड़े बड़े सपने देखता है । लेकिन कुछ व्यवधान खड़ा हो गया है ।

अनन्त– मैं क्या करूं ?
सूरजबाबू– चार–छः पन्ने दे कोरे चौथी में पढता है ना ?
अनन्त–कौन से कोरे कागज ?
सूरज–लेखपाल के पास कौन कागज होता है । वही लेखा बही वाला । कापी तो बन जायेगी ना चार–छः कोरे कागज से ।
अनन्त– क्यों नहीं ?
सूरज–दे दो दीनु को कापी बना लेगा । कापी नही खरीद पा रहा है ना ।
अनन्त नफरत भरी निगाहों से दीनु की ओर देखते हुए सूरजबाबू बड़े जमीदार के साथ जाने माने लेखपाल भी थे के कमरे में गया और कुछ कोरे कागज लेकर आया और अनन्त बाबू को देते हुए बोला आठ–दस पन्ने हैं दे दो अपने मजदूर के बेटों को ताकि कलेटर बनने में मदद मिल जाये ।
सूरजबाबू– लो दीनु ले जाओ । बना लेना कापी ।
दीनु–श्रध्दा भाव से कोरा कागज सूरजबाबू के हाथ से थामा ,माथे चढाया फिर चल पड़ा जल्दी–जल्दी घर की ओर स्कूल जो जाना था ।
दीनु अपने बाप के साथ कंधे से कंधा मिलाते हुए बी.ए. तो पास कर गया पर कलेक्टर नही बन पाया पर सात–आठ साल की बेरोजगारी का दंश झेलते हुए मामली सा क्लर्क

जरूर बन गया ।उधर जमीदार साहब के बेटे अनन्त बार–बार फेल होते–होते अन्ततः पा गये बी.ए.पास होने का लाइसेन्स,बड़े पद की नौकरी । विरासत में मिल गया बाप के दौलत का खजाना बड़ी भरी–पूरी जमीदारी भी । भड़क उठी अभिमान की ज्वाला और ले लिये दबे कुचलों को रौंदने की कसम ।
बंधुवा मजदूर मां–बाप का बेटा दीनु मामूली से ओहदे की नौकरी पाकर भी खुश था क्योंकि उसने रख दिया था कुनबे के अच्छे कल की नींव और ले लिया था मानव सेवा का व्रत सूरजबाबू के दिये कोरे कागज की याद कोरे और गरीबी के निदो के जख्म को दिल में बसाये ।बेटे के ने इरादे से बूढे मांता–पिता सुमति और रघुबीर की आंखे चमकी उठी थी ।

22–बेटा

रोशनी–पापा कल भइया का बर्थ डे है ।
नेकचन्द–क्या कल कैसे ? अभी अट्ठारह दिन बाकी है ।
रोशनी–भूल गये कल की बात आज ?आपके परजाति के बेटे का जन्म दिन ।
नेकचन्द–चन्द्रेश का बर्थ डे है कल ।
रोशनी–अब आया ना याद ।

नेकचन्द–हां बेटी वैसे भी याद तो रोज रोज कम ही होनी है । वैसे याद भी क्या–क्या रखूं सामाजिक उत्पीड़न. आर्थिक तंगी दफतर का शोषण और भी बहुत कुछ । इन सब को याद रखने से दुख ही होना है ।
रोशनी–जानती हूं आपकी मुश्किले खास क्षण तो याद रहता है ।
नेकचन्द–मुझे भी याद था पर उसके उपर तकलीफों के परते चढ गयी थी ना तभी तो दिल को टटोलते ही याद आ गयी–कल चन्द्रेश का बर्थ–डे है । मनाओ भइया का बर्थ डे धूमधाम से कल 31 जनवरी को फिर सत्तरह को अभिनन्दन का । मुझे क्या करना है ये तो बता दो ।
रोशनी–पापा आपको कुछ नही करना है हम भाई–बहन सब कर लेगे । कल आपके परजाति के बेटे अपने भइया को सरप्राइज देगे ।
नेकचन्द–अच्छे से मनाओं ।वह भी अपने परिवार का हो गया । परजाति का कैसे अपनी जाति का है मानव जाति का । बेटी जातिपांति तो आदमियत के विरोधी है । आदमी के बीच जाति के आधार पर भेद–भाव बहुत बुरी बात है । चन्द्रेश छोटी जाति का है या बड़ी हमें इससे कुछ नही लेना है । बस लेना है तो इतना कि वह तुम्हारा राखी का भाई है मेरा धर्म का बेटा । पढा लिख नेक इंसान है चन्द्रेश । अच्छे आदमी के हर लक्षण उसमं मौजूद है ।

रोशनी–यू आर ग्रेट पापा ।

नेकचन्द–मेरी औलादे महान बने । यही मेरी पहली और आखिरी इच्छा है ।मैं जो बनना था नही बन पाया । मेरे सपने मार दिये गये । मैं योग्य होकर बूढी व्यवस्था के तराजू पर श्रेष्ठ साबित नही हुआ योग्य होकर अयोग्य करार दिया गया । आज मामूली सी नौकरी कर रहा हूं । उपर वाले समझते हैं मेरी नौकरी उनका एहसान है । बेटी हम तो गरीब मां बाप की औलाद है पर तुम लोगों को सामने वह दुःख नही आने दिया जिसको हमने भोगा है । मेरी बदनसीबी को मेरे कुनबे के लोग मेरी संवरी तकदीर समझते है । वे जानते है मैं बहुत बड़ा साहब हो गया हूं । मेरी कमाई बहुत है । मैं उनसे छिपाता हूं अपनी कमाई । मै उनको हर महिनों डिमाण्ड ड्राफट नही भेजकर कर्तव्य पालन नही कर रहा हूं । वे लोग समझते है में शहर में पेड़ हिलाकर नोट बटोर रहा हूं। जबकि मेरी तनख्वाह से बड़ी मुश्किल से खर्च चल पा रहा है । स्कूल की फीस,दूध का बिल,घर का भाड़ा निकालने के बाद बचता क्या है । बडी मुश्किल से किराने का समान आ पाता है । तुम्हारी मां का मैनेजमेण्ट इतना बढिया है कि सब कुछ थोड़े से पैसे में कर लेती है । महिने दो महिने में घर–पविार को कुछ रूप्या भेज देदो हूं तुम लोगो का पेट काटकर । बेटी तुम भाई बहन पढलिखकर खुद के पांव खड़े हो जाओ बस यही भगवान से

मन्नत है । खुद सम्भलते हुए दूसरो को भी सहारा देने की कोशि करना बेटा । नेक आदमी की यह बड़ी उपलब्धि होती है ।

रोशनी– हां पापा आपने बहुत दुख झेला है खैर आज भी तो कम नही हुआ है । आप मुश्किलों के जहर को पीकर भी हमें हर तकलीफ से बचाये हुए है ।

नेकचन्द–कहां कि बात कहा पहुंच गयी । बात तो चन्द्रेश के बर्थ डे की हो रही थी । कल की तैयारी करो ।

रोशनी–तैयारी तो पहले की हो गया है । बस भइया को सरप्राइज देना है ।

नेकचन्द–फिर सरप्राइज कैसी ?

रोशनी–पहली बार जन्म दिन मनेगा ना ? वह भी अपने घर ।

नेकचन्द–क्या । बीस बाइस साल का लड़का है । पहली बार जन्म दिन ....

रोशनी–हां पापा गांव में कौन मनाता है ।

नेकचन्द–मनाते है आजकल ।

रोशनी–भइया बाइस साल का है आजकल का नही है । पहली बार ही तो मैं राखी बांधी हूं । भइया की बहुत तमन्ना थी कि मैं उसको राखी बांधूं । भइया की कलाई में राखी बांधते ही उनके आंखों से आंसू बह निकले थे । आंसू पोछते हुए बोले थे आज मैं बहुत खुश हूं दुनिया का सबसे

कीमती तोहफा रोशनी तुमने मुझे दिया है राखी बांधकर । वे सगे भाई जैसे हो गये है । परिवार के हिस्से हो गये है । कालेज में मेरी सभी सहेलिया भइया ही कहती है । भइया पूरे कालेज के भइया हो गये है ।
नेकचन्द–भगवान जिसको मिलाना चाहता है लाकर मिला ही देता है । वैसे ही चन्द्रेश को लाकर मिला दिया जैसे वह किसी जन्म का बिछुडा हुआ बेटा हो ।
रोशनी–हम भाई–बहन की वजह से सभी छात्र–छात्राओ का नजरिया बदला है ।
नेकचन्द–सभी स्कूल–कालेजों मे सहपाठी भाई–बहन सरीखे ही होते है । उदण्ड प्रकृति के छात्र उलंघन कर जाते है । सहपाठियों में सद्भावना स्वस्थ और समातावादी मानव समाज की आधारशिला को सुदृढता प्रदान करती है । जातिवाद का दुर्भाग्य मानवता के लिये अभिशाप बन गया है ।
रोशनी–सच पापा जाति–धर्म के ठेकेदारों ने तो आदमी को खण्ड –खण्ड कर दिया है । भारत मांता की बेड़िया कट तो गयी पर इस देश में आदमियत की बेड़ि कब कटेगी ? काश जातिवाद का विषधर सिर चढकर न फुफकारता तो वंचित शोषित समाज भी आदमी होने का सुख भोग पाता । जातिवाद ने शोषित समाज की तकदीरें भी कैद कर रखी है और आदमी होने के सुख से भी वंचित कर रखा है । बुध्द

भगवान ने तो समता के लिये राजपाट तक छोड दिया पर आज का आदमी जातिवाद जो आदमियत के माथे का कोढ है उसे ही नही त्याग रहे है ।
नेकचनन्द–बेटी बदलाव तो आयेगा पर धीरे–धीरे । युगो से शोषित समाज सताया जा रहा है । लोगो की मानसिकता बदलने में वक्त तो लगेगा । कम से कम हम तो दूसरों के साथ आदमियत के साथ पेस आये । समतावाद को पुलकित करने के लिये हर सम्भव प्रयास करें ।
रोशनी–पापा आप इतने समझौतावादी और मानवतावादी हो फिर भी लोग घाव दे जाते है ।
नेकचन्द–बेटी समय के साथ चलने में समझदारी है । यदि हवा विपरीत हो तो सम्भल कर चलना उचित होता है । आदमी कछुवा चाल से ही सही पर मंजिल तक तो पहुंच जाता है ।
रोशनी–पापा आपके कहने का मतलब विषमतावादी आदमी के मन में भरा उन्माद धीरे धीरे खत्म होगा और बुध्द का सपना साकार होगा । एक दिन जाति–धर्म के नशे से आदमी उपर उठ जायेगा ।
नेकचन्द– हां । तुमने एक पहल भी तो कर दी है ।
रोशनी– कौन सी ?
नेकचन्द– परजाति के बेटे को भाई बनाकर ।

रोशनी–कल चन्द्रेश भइया का बर्थ डे मनाना है पापा अच्छी तरह से ।
नेकचन्द–हां । अब तो वह परजाति का नही धर्म का बेटा है । अवश्य धूमधाम से मनायेगे ।
रोशनी–पापा देखना कल जल्दी आ जाना । ऐसा न हो कि सभी संगोष्ठी में बैठे –बैठे भूल जाओ ।केक कटने के बाद घर आओ ।
नेकचन्द–ऐसा नही होगा बेटी । मैं तुम्हारे साथ तैयारी में भी हाजिर रहूंगा ।
रोशनी–तैयारी तो हमारी पूरी हो चुकी है । अभिनन्दन और सुखनन्दन ने तो अपने–अपने गुलक तक फोड़ दिये है ।
रोशनी–गिफ्ट के लिये ?
नेकचन्द–मैं गिफ्ट लाता ना ।
रोशनी–आप भी लाना परजाति के नही.....नही...अपने धर्म के बेटे के लिये । पापा अब सो जाओ रात अधिक हो गयी । कल देखना आपके दफतर जाने से पहले से ही सुखनन्दन घर संजाने में लग जायेगा । गुब्बारे ,चमकीली और ढेर सारा सजावटी सामान खरीद लाया है ।
नेकचन्द–ठीक है । कल सब सस्पेंस खुल जायेगा बर्थ डे सेलिबरेशन का। गुडनाइट बेटा.......
नेकचन्द प्रातः सोकर उठे और मार्निग वाक् पर निकल गये । वापस आये तो सुखनन्दन फूल बिछाये माला गूथ रहा था

। सुखनन्दन को व्यस्त देखकर बोले सुखनन्दन सबेरे सबेरे माला बना रहे हो क्या जरूरत पड़ गयी ।
सुखनन्दन–पापा सब पता चल जायेगा । बना तो लेने दो । घर में रोशनी दीवाली जैसे साफ सफाई में जुटी हुई । धर्मपत्नी चन्द्रावती रसोई में व्यस्त थी । गुब्बारे फूलाने में लगा हुआ था । पूरे परिवार को व्यस्त देखकर नेकचन्द बोले सूरज उगा नही और तैयारी शुरू । कीचन की खुशबू घर के बाहर से नाक को भा रही है ।
चन्द्रावती–देखो जी आप डिस्टर्ब ना करो जो–जो कर रहा है करने दो । आप भी अपना दैनकि काम करो । नाश्ता करो दफतर जाओ । शाम को जल्दी आना ।
नेकचन्द–बहुत बढिया । दफतर से छुट्‌टी मिलते ही घर चल दूंगा । ठीक है । तुम लोग कर लो तैयारी । कान पकड़ता हूं कोई दखलअन्दाजी नही करूंगा ।
रोशनी– शाम को बंगाली मिठाई लेकर आना । केक का आर्डर मैं दे चुकी हूं ।
नेकचन्द–ठीक है लेकर आऊंगा ।
नेकचन्द दाढी,मूछ बनाकर नहाये धोये ।पूजा–पाठ किये । नाश्ता किये और दोपहर का खाना लेकर दफतर चल पड़े घर की चहल–पहल छोड़कर । शाम को देर होने लगी तो नेकचन्द बड़े साहब के सामने हाजिर हुए और बोले साहब घर जा रहा हूं ।

बड़े साहब–क्यों ? हो गया टाइम ?
नेकचन्द–बेटे का जन्म दिन है ।
बड़े साहब दुत्कारते हुए बोल –अपनी सीट पर जा बैठ । जरूरी काम है पूरा करके जाना ।
नेकचन्द–साहब साढे सात बज गये है ।
बड़े साहब–क्या कोई पहाड़ गिर पड़ा । तनिक सा काम देख लिये तो घड़ी देखने लगे ।
नेकचन्द– साहब सुबह राइट टाइम पर दफतर रोज आता हूं । डेढ दो घण्टे बाद जाता हूं । लंच पीरियेड में भी दफतर में रहता है । आप जैसे घर जाकर सोता नही हूं और नही दफतर बन्द होने के कुछ पहले आकर दफतर में बैठता हूं । साहब इतना हिटलरशाही ठीक नही ।
बडेसाहब– अपशब्द बकते हुए बोले तुमको नौकरी करना है की नही ।
नेकचन्द–नौकरी करने आया हूं और अब जा रहा हूं घर मेरे धर्म के बेटे का बर्थ डे है ।
बड़े साहब लाल–पीले होते रहे अपशब्द बकते रहे । नेकचन्द मोटरसाइकिल उठाया अंधेरे में घर पहुंचा । घर पहुंचते ही शिकायतों का दौर शुरू हो गया ।
नेकचन्द बोला –माफ करो मैं देर से आया ।बड़े साहब का दिया हंसता जख्म कंधे पर लाद आया पर घर की सजावाट देखकर दिल खुश हो गया ।

रोशनी–पापा ये सब सुखनन्दन की कलाकारी है ।

नेकचन्द–सुखनन्दन अच्छा डेकोरेटर है मुझे तो आज पता चला है । भइया के बर्थ डे की तैयारी में रौनक डाल दिया है –स्लोगन लिखकर, रंग–बिरंगे सजावटी सामान लगाकर । गुब्बारे में भी बहुत चमकीली भरा है ।

चन्द्रावती–मिठाई ...... ?

नेकचन्द–लाया हूं ना । रोशनी फ्रिज में रख दी ।

चन्द्रावती–शुक्र है भूले नही ।

नेकचन्द–धर्म के बेटे का जन्म दिन और मैं भूल जाऊं ।ऐसा हो सकता है क्या ?

रोशनी–ठीक है । मैं जान गयी आप नही भूल सकते कुछ पर करवां चौथ के दिन भूल जाते हो क्यों मम्मी ।

नेकचन्द–शिकायत का दौर खत्म होगा क्या ।

चन्द्रावती– हो गया ।

रोशनी– हो पापा । कोई शिकायत नही । बस आप तैयार हो जाओ । मम्मी आपके पसन्द का कुर्ता–पायजाम प्रेस करके रखी है । भइया भी थोड़ी देर में पहुंच आयेगे । लो नाम ली ही नही तब तक आ गये ।

चन्द्रेश–शैतान का नाम लिया नही शैतान हाजिर कह कर हंस पड़ा ।

रोशनी–क्यों हंस रहे हो खुद शैतान बनकर । तुम शैतान हो या मेरे भाई ।
चन्द्रेश–तेरा भाई ।
रोशनी–हंसे क्यों ।
चन्द्रेश–तू कह रही थी आ गया । मुझे आये तो पच्चीस साल हो गये ।
नेकचन्द–केक काटने का क्या मुहुर्त आ गया ।
रोशनी– कुछ लम्हे और बाकी है । मम्मी को फर्सत तो रसोई से ले लेने दो । वैसे भी आपको मीठा तो खाना नही है ।
नेकचन्द–आज तो खाउंगा। चन्द्रेश का बर्थ डे आज है ना ।
रोशनी–थोड़ा चख लेना बस खाना नही । मीठा से परहेज का ख्याल रखना ।
चन्द्रावती– रोशनी तुम लोग तैयार हो गये ।
रोशनी–हां मम्मी पापा भी तैयार हो गये है ।
चन्द्रावती– मैं भी आयी । बेटा रोशनी केक सेन्टर टेबल पर रखो ।
रोशनी–केट सेन्टर टेबल पर लाकर सजा दी।
सुखनन्दन टेबल पर फूल से हैप्पी बर्थ डे माई डियर ब्रदर लिख चुका था । बच्चों ने घर तो ऐसे सजाया था जैसे शादी हो । बाहर की भी रोशनी का पूरा ख्याल रखा गया था । दरवाजे पुष्प–मालाओं से सजे संवरे खड़े थे । अन्दर भी

कोना-कोना सजा संवरा सोधापन बिखेर रहा था । इन सब से अधिक चन्द्रेश की ख़ुशी उसके चेहरे पर उमक रही थी ।
रोशनी-सुखनन्दन चाकू तो लाओ ।
सुखनन्दन-लाल फीते और चमकीली से सजाया चाकू लहराते हुए बोला ये लो दीदी चाकू ।
रोशनी-अरे वाह कितना खूबसूरत कर दिया सुखनन्दन ने ।
सुखनन्दन-आज के महामहिम को पेश किया जाये बर्थ-डे नाइफ ।
रोशनी-लो भइया काटो दो केक ।
नेकचन्द्र और चन्द्रावती ने हाथ पकड़ लिया । धर्म के मां बाप पाकर चन्द्रेश की आंखे भर आयी ।
चन्द्रावती-काटो बेटा ।
चन्देश -हां मम्मी.............
रोशनी- मोमबत्ती तो बुझाओ ।
चन्द्रेश- मुझे तो याद ही नही रहा पहली बार बर्थ डे जो मन रहा है ।
नेकचन्द्र-हर साल मनेगा बेटा हर साल ...
सुखनन्दन-देखो भइया लम्बू अभिनन्दन फोटोग्राफर थक रहा है अब तो काट दो ।
चन्द्रेश मोमबत्ती को फूंक मारकर बुझाया फिर केक काटा ।हैप्पी बर्थ डे भइया की

शुभ कामनाओ के हार्दिक उद्गार से चन्द्रेश का मन गद–गद हो गया । नेकचन्द और चन्द्रावती ने चन्द्रेश को केक खिलाये । वह अपने धर्म के मां– बाप का पांव छुआ । चन्द्रेश पापा थोडा केक तो खा लो ।

नेकचन्द–आज तो जरूर खाउंगा तनिक पर मम्मी को अधिक खिलाना ।

रोशनी–भइया पापा को अंगुली पर लगाकर चटा दो । इतना सुनते ही सब जोर से हंस पड़े ।

चन्द्रेश केक खिलाने के लिये नेकचन्द ओर मुडे वह उसे छाती से लगाकर बोले बेटा अब तुम परजाति का बेटा नही धर्म का बेटा हो गये हो। चन्द्रेश को अपार खुशी मिल गयी थी धर्म के मां–बाप और भाई–बहन पाकर । चन्द्रेश के मुंह से अनायास निकल पड़ा काश ऐसे सभी हो जाते तो समता सम्वृध्द हो जाती इस पावन भूमि पर ।

23–बैडलक

नरायन बेटवा पर मुझे ही नही पूरी बस्ती को नाज था । देखो उसकी तरक्की पर ऐसी नजर लगी की आज पागलों की तरह मारा–मारा फिर रहा है कहते कहते दुधन की सांस गले में अटक गयी ।

बुधन–क्या हुआ भइया ? सांस क्यो टंग गयी ?

दुधन– पानी का इशारा किया ।

बुधन–दौड़कर लोटे में पानी लाया और लोटा उसके मुंह में लगा दिया ।

दुधन–सांस ऐसी अटकी थी कि मुझे लगा कि जान लेकर जायेगी ।

बुधन–भइया तुम्हे हमारी उम्र लग जाये ।

दुधन–बुधन तुम्हारी जरूरत तुम्हारे परिवार को है । मैं तो जीते जी मरा जा रहा हूं बेटे की दुर्दशा देखकर । ऐसे जीने से तो मरना बेहतर होगा ।

बुधन–भइया पूरी बस्ती में तो तुम्ही हो ऐसे आदमी जिसमें अपनापन झलकता है । अब तो बस्ती पर राजनीति का असर दिखने लगा है । छोटा हो या बड़ा सब चेहरे बदलने लगे है ।

दुधन–तुमसे क्या छिपा है । सब अरमान आंसूओ में बह रहे है । कमासुत बेटवा पागल सरीखे हो गया है। गम भुलाने के लिये नशे की गोद में बैठ गया है । छाती पर पत्थर रखकर सब कुछ देखना पड़ रहा है । करूं भी तो क्या करूं कुछ समझ में नही आ रहा है ।

बुधन–सच भइया नरायन की तरक्की पर ग्रहण लग गया है । मुझे याद है जब नरायन बारहवी पास किया था तब पूरा गांव कितना खुश हुआ । नरायन ही पहला लड़का था जो बारहवी पास किया था पहली बार पूरे गांव में । तुमने भोज भी तो दिया । बेटवा नरायन के पास होने की खुशी में ।

वही नरायन आज बैडलक,बैडलक कहते फिर रहा है पागलों की तरह । भगवान ने संवरी तकदीर को ना जाने क्यों बिगाड़ दिया ।
दुधन–पढाई–लिखाई का अब क्या मोल ।अच्छा कमा खा रहा था । मान प्रतिष्ठा बढा रहा था पर मायानगरी का जादू सब लील गया ।
बुधन–सच कह रहे हो भइया । नरायन मायानगरी क्या गया बनी तकदीर रूठ गयी ।
दुधन–वहां भी खूब तरक्की किया गाड़ी,बंगला सब कुछ तो था पर ठगा गया तभी तो पागल होकर बैडलक बैडलक गाता फिर रहा है ।
बुधन–नहर की ठेकेदारी में ही लगा रहता तो पागल तो नही होता । भइया विधि का यही लेख था । हम मानुष क्या कर सकते है ?
दुधन–बेटवा का दुख नही देखा जाता । कमासुत बेटा ठगा गया मोहब्बत में । बाकी चारो बेटों की हाल तो देख रहे हो । जब तक हम बूढा–बूढी है तब तक सम्भाल रहे हैं । हमारे मरने के बाद कौन देखरेख करेगा । बेटवा लावारिस हो जायेगा । नरायन के गम में मर मर कर जी रहा हूं । बेटवा का दुख नही सहा जा रहा है भइया बुधन ।
बुधन–बहुत बड़ा दुख है । जिस लड़के की मिशाल दी जाती थी उसी को लोग पागल समझकर खिल्ली उड़ा रहे है ।

मायानगरी ने इस लड़के का जीवन नरक करके पूरे परिवार की खुशियां छिन ली ।
दुधन–हरियाना से मायानगरी गया तो इसकी पत्नी ने आत्महत्या का प्रयास किया । अन्ततः वह सदा –सदा के लिये छोड़ चली । मायानगरी में फौजी से तलाक ले चुकी दो बच्चों की मां रेशमा नरायन की जिन्दगी में क्या आयी सब लूट गया । धीरे–धीरे कोठी बंगला धन–दौलत सब हड़प कर भगा दी ।करोड़पति नरायन सड़कपति हो गया है । फूटी कौड़ी पास नही बची है दवाई तक के लिये ।
बुधन–इतना समझदार लड़का दो बच्चों की मां तलाकशुदा रेशमा के झांसे में कैसे आ गया । समझ में नही आता ।
दुधन–नरायन की कोठी रेशमा के घर के सामने थी । अकेला लड़का देखकर डोरे डालने लगी । कचहर में ब्याह कर ली । धन–धर्म लूट कर बेआबरू कर दी । मेरे बेटे नरायन को पागल करके पुराने पति की गोद में जा बैठी ।
बुधन–बेटवा रेशमा की चाल नही समझ पाया । रेशमा और पुराना पति मिलकर साजिश रचे होगे तभी नरायन को राजा से रंक बनाकर खुद मालिक बन बैठे दोनो ।
दुधन–ना जाने कौन सा मन्त्र पढकर रेशमा कोरे कागज पर दस्तक करवा ली । दस्तक करते ही नरायन राजा से रंक हो गया । आज रोटी के लिये नस्तवान है । मेरा शरीर खुद

का बोझ नही उठा पा रहा है मै इस लड़के को कैसे सम्भालूं ।
सुखवन्ती–विश्वास में में ठगा गया । एक औरत ऐसा कर सकती है । सोचकर शर्म आती है ।बेटवा की दुनिया उजड़ गयी है । उसे प्यार से समझाओ । उसे पटरी पर लाओ । कब तक ऐसे पागलों की तरह घूमेगा । हम जब आंख मूंद लेगे तो रोटी कौन देगा । इस बारे में भी तो सोचो । जो होना था हो गया । दूसरों को दुख देकर कोई सुख से रह पाया है । नरायन के साथ जीने–मरने की कसम खाने वाली रेशमा धन–धर्म लूट कर धक्के मार कर भगा दी ।
रेशमा भी नही रह पायेगी । बेटवा के मान का गम निकल जाता तो फिर से जीवन नईया चल पड़ती ।
दुधन– कौन देखने जा रहा है ।
बुधन–भइया भौजी ठीक कह रही है। लडके के मन का गम निकालने के लिये कुछ तो करना होगा ।
दुधन–नरायन भी दोषी है । जब रेशमा के साथ सात फेरे लिया तो किसी से पूछा । मोहफांस में फंसकर सब कुछ गंवा बैठा । ब्याह की खबर से नात–हित किसी के सामने मुंह दिखाने में शर्म आ रही थी । बिरादरी वालों ने हुक्का–पानी बन्द कर दिया था बुधन क्या तुम नही जाते । जिस औरत के लिये नरायन घर–परिवार मां–बाप सब छोड़ा

वही छाती में खंजर घोंप दी । बेटवा तो पागल हो ही गया मैं भी रोज–रोज मर रहा हूं बेटवा की फिक्र में ।
सुखवन्ती–शुभ–शुभ बोलो नरायन के बापू । जिन्दगी भर अपनी किस्मत में हाड़निचोड़ना भगवान ने लिख दिया । एक लायक बेटवा था उसकी दुर्दशा तो देख रहे हो । बाकी नालायकों से क्या उम्मीद करें ।बेटवा की तकलीफ बर्दाश्त नही हो रही है ।
दुधन–एक बेबस बाप क्या करें नरायन की मां तुम्ही बताओ । रेशमा कितनी शातिर निकली छल से दौलत हड़प ली । बेटवा को पागल बनाकर भेज दी । पढा लिखा समझदार बेटवा पराई औरत के मोह में मां–बाप घर–परिवार तक को भूला दिया । देखो औरत का डंसा राजा से रंक हो गया ।
सुखवन्ती– बेटवा की मेहनत की कमाई को जिसने धोखे से हड़पने वाली कभी भी चैन से नही रह पायेगी । हमें दौलत नही चाहिये हमे बेटवा गम से उबर जाये अब तो यही आखिरी ख्वाहिश है । हमारे बेटवा की हंसी वापस कर दो प्रभु ।
बुधन–सच कहते है नागिन का डंसा आदमी उबर सकता है पर रेशमा जैसी औरत का डंसा नही ।
सुखवन्ती–देवरजी ठीक कह रहे हो । देखो बेटवा ने रेशमा को अपनाया क्या ? खुद का जीवन नरक बना लिया । परिवार की सारी खुशियां बिखर गयी । हम एक –एक पैसे

के लिये नस्तवान है । उधर करोड़ो की मालकिन रेशम बन बैठी है । क्या खूब साजिश रची थी वह औरत और कामयाब भी हो गयी । छः महीने तक तो मेरा बेटवा नरायन शहर में पागलों की तरह गुजारा करता रहा । कभीं सड़क पर कभी कूड़ेदान के पास तो कभी पेड़ के नीचे भूखे प्यास रात बिताता रहा । कोई भीखरी समझका एक रोटी हाथ पर रख दिया तो खा लिया नही तो भ्भूखे प्यासे तड़पता रहा । बड़ी तकलीफ से गांव तक पहुंच पाया था । मैं खुद अपने बेटवा को नही पहचान पा रही थी । वाह रे किस्मत का खेल कब आदमी को राजा से रंक बना दे किसको पता । कितनी मेहनत से तरक्की की राह चल पाया था । उस पर भी रेशमा की नजर लग गयी ।
बुधन–सच भौजी बेटवा ठगा गया रेशमा से ब्याह करके । बेटवा की बर्बादी का कारण रेशमी ही है ।
सुखवन्ती– रेशमा ऐसा दाव मारी कि मेरा नरायन झटके में सड़क पर आकर पागल हो गया और सारा अधिकार खो बैठा । हमारे घर–परिवार के दुख को वह महाठगिनी जन्नत का सुख समझ रही होगी पर इस मां की आह बेकार नही जायेगी ।
दुधन–बात बन्द करों नरायन को देखों कहीं औधे मुंह पड़ा कराह रहा होगा । खोज खबर लिया करो । उसके बाल–बच्चे तो नही है । जब तक दुनिया में है देखरेख अपने सिर पर

है । बेटवा सूख्कर कांटा हो गया है । भगवान नरायन से पहले मुझे डझ लेना ।
सुखवन्ती–भगवान सबसे पहले मुझे उठाना । मुझे और अर्धविक्षित बेटवा को किसके जिम्में सौपकर जाओगे । शुभ–शुभ बोलो नरायन के बापू । मैं एक मां हूं । बेटवा के दुख को खूब समझती हूं । करूं तो क्या करूं बेबस हो गयी हूं । शहर–परदेस का मामला है । वहां जा भी तो नही सकती । जाकर भी क्या करेगे । बेटवा का अंगूठा तो पहले कट गया है । अब तो भगवान के न्याय पर विश्वास है ।
दुधन–अपने हाथ में क्या है । हमें शहर में कौन पनाह देगा । जब बेटवा के साथ सात फेरे लेकर रेशमा दगा दे गयी तो हम छुछों को कौन पानी पूछेगा ।
बुधन–हां भइया सब भगवान पर छोड़कर बेटावा के बारे में सोचो ।ओझा,बईद या कोई हकीम को दिखाओ जिससे बेटवा की दिमागी हालत तो ठीक हो जाये । धन दौलत तो हाथ की मैल हो बेटवा ठीक हो जायेगा तो फिर कमा लेगा । चिन्ता तो बेटवा के जीवन को लेकर है न कि दौलत को लेकर । रेशमा जो दौलत हड़प ली है ।बेटवा की दिमागी हालत ठीक होने पर वापस आ सकती है ।
दुधन–कहां लेकर जाउ सब ओर से तो हार गया ।
बुधन– भईया हार ना मानो । कोशिश करते रहो । कब किसकी दुआ काम आ जाये बेटवा पहले जैसा हो जाये ।

दिमागी हालत ठीक हो जाये । कमाने खाने लगे । भईया भगवान पर यकीन बनाये रहो । दर–दवाई जहां तक हो सके करते रहो । उपर वाला इतना निर्दयी तो नही होगा । दुख दिया है तो दवा भी देगा ।
दुधन–क्यों झूठी दिलासा दे रहे हो बुधन । तुम भी जानते हो क्या होने वाला है । रेशमा से सम्पति वापस लेना मेरे बस की बात नही है । ना अब बेटवा ठीक हो सकता है । बेटवा का पागलपन जान लेकर छोड़ेगा बारी –बारी से हमारी फिर नरायन की मां की फिर...
सुखवन्ती–बस आगे नही बोलना । मरे हमारे दुश्मन । अब मैं जा रही हूं बेटवा को ढूढकर ललाती हूं फिर चूल्ह चौका करूंगी ।
दुधन–जा देख कहां किस हालत में पड़ा है । नरायन का दुख मुझसे नही देखा जाता । उसकी देखकर मेरी आत्मा रो उठती है । इस दुख से उबरने के लिये कभी कभी विचार आता है । पोखर में डूबकर जान दे दें पर दूसरे पल मन में विचार आता है यह तो कायरता है । भगवान ने दुख दिया है सहना तो पड़ेगा ।
बुधन–भईया हिम्मत रखो ।
दुधन–मैं भी चाहता हूं गम का बोझ छाती पर ना बढे पर इससे बड़ा और क्या गम होगा । कमासुत बेटा पागल हो गया है । जिसके जीवन के थोड़े दिन बाकी है । मैं बेटे को

कंधा दूंगा जबकि बेटवा के कंधे पर मुझे श्मशान जाना चाहिये पर हमारे साथ उल्टा होने वाला है ।
बुधन–भईया नरायन ठीक हो जायेगा । रो –रोकर अपनी हालत खराब ना करो । अब तुम्हारे भी आंख ठेहुने पहले जैसे तो रहे नही । अब तो इस दुख को भी सहना कि हिम्मत जुटानी पड़ेगी विधि ने जो तकदीर में जोड़ दिया है । उसे कोई नही मिटा सकता भईया । दारू की लत नरायन के लिये वैसे ही खतरनाक हो गयी है जैसे रेशमा ।
दुधन–दारू जान लेकर रहेगी । कल गिर पड़ा भैंस के खूंटे पर दो दांत टूट गये । बेटवा जवानी में बूढा हो गया । अस्सी साल का पुरनिया दिखता है । क्या करूं अब तो तकदीर में आंसू बहाना ही बचा है ।
बुधन और दुधन बात कर ही रहे थे कि सुखवन्ती नरायन का हाथ पकड़े आ गयी । बगीचा मे गन्ना पेरने मशीन पर बैठा आंसू बहा रहा था ।
दुधन–क्या करेगा । बिना विचारे जो किया है । उसकी आग में तो जलना ही होगा । इसके किये की सजा पूरा परिवार भुगत रहा है । अरे दुनिया भर में अब दो बच्चे की मां बुढिया रेशमा ही बची थी इससे ब्याह करने के लिये । लड़कियों का अकाल तो नही पड़ा था । सब कुछ गंवा कर मां बाप का चैन छिन लिया ।
नरायन–बैडलक डैड....... कहते हुए धड़ाम से गिर पड़ा ।

बुधन बच्चे की नरायन को गोद में उठाकर खटिया पर सुला दिया । सुखवन्ती रो–रोकर नरायन के तन पर लगे कीचड़ को साफ करने लगी ।
दुधन–भागवान रहने दो । सुबह पकड़कर नहवा देगे साफ हो जायेगा । अभी तो दो रोटी उसके पेट में डाल । लग रहा है दम निकल जाएगी अभी । देखो कैसे हांफ रहा है ।
सुखवन्ती–ठीक कह रहे हो ।पहले रोटी सेंक लेती हूं ।
बुधन– हां भैजाई रोटी बनाओ । नरायन को खिला कर भईया और तुम भी खा लेना ।
दुधन–हां भईया पापी पेट को तो चाहिये ही चाहे कितने दुख के बादल क्यो न छाये रहे ।
बुधन–भइया मैं भी घर चलता हूं । बच्चे परेशान हो रहे होगे । काम से सीधे इधर हा आ गया । भईया अब तुमको भौजाई और नरायन दोनों का ख्याल रखना है ।
हां भईया ना जाने किस जन्म का पाप भोगना पड़ रहा है कहते हुए दुधन आंख पर गमछा रखते हुए बोला जाओ भईया थक गये होगे । खेत मालिक लोग तो खून निचोड़ लेते है । दो रोटी खाकर आराम करो सुबह जल्दी काम पर जाना होगा । ये तो रोज की बात है कहते हुए बुधन अपने घर की ओर चल पड़ा ।
दुधन–नरायन की मां रोटी बन गयी हो तो ला दो रोटी डाल पहले नरायन के पेट में । देख कैसे कराह रहा है । आंसू

तो इसके कभी बन्द नही होते । ना जाने कैसी तकदीर लिखवा कर लाया है । पूरे परिवार की तकदीर बिगड़ गयी ।
नरायन–बैडलक डैड ।
दुधन–इससे आगे कुछ बोलने को है क्या ?
नरायन–क्या बचा है ? लाईफ तबाह हो गयी । अब तो सदा के लिये सोना चाहता हूं । बहुत थक गया हूं ।
सुखवन्ती–बेटा ऐसे ना बोल हमारा तो तू ही सहारा है ।
दुधन– कौन किसका सहारा बनेगा यह तो उपर वाला जाने । अभी तो उसे तो खुद सहारे की जरूरत है । तुम्हारा हमारा क्या सहारा बनेगा । दो रोटी खिला दे नही तो फिर कही चला जायेगा रात में कहां खोजेगे ?
सुखवन्ती–ठीक कह रहे हो कहते हुए उठी दो रोटी दाल में मस्सल कर लायी और पुचकार–पुचकार कर नरायन को खिलाने की कोशि करने लगी पर नरायन बार बार हाथ झटक देता । बड़ी मुश्किल से एक रोटी सुखवन्ती नरायन के पेट में उतर पायी । इसके बाद दुधन और सुखवन्ती एक –एक रोटी खाकर पानी पीये । दुधन और सुखवन्ती के लिये यह तो रोज का गम बन चुका था ।
दुधन और सुखवन्ती नरायन की चिन्ता में खटिया पकड़ लिये । कुछ ही दिनों में दुधन की हालत बहुत खराब हो गयी । लकवा का अटैक हो गया । बेचारा खटिया पर पड़ा–पड़ा सडने लगा और छः महीने के अन्दर रामनाम सत्य हो गया

गया । दुधन का जनाजा निकला । नरायन हड़ियां लिये आगे आगे चल रहा था । शवयात्रा में शामिल लोग रामनाम सत्य बोल रहे थे ।अब तो बाकी जीवन हंसते जख्म का जहर पीकर बसर करना होगा चालीस साल का अस्सी साल की तरह बूढा लगने वाला नरायन लाठी के सहारे बैडलक बैडलक बोलते हुए श्मशान की ओर बढ रहा था । रामनाम सत्य है की आवाज में उसकी आवाज दम तोड़ रही थी ।

23-अभिमान

भगवान मुझ गरीब की कब तक इम्तहान लेते रहोगे । रहम करो । आदमियत के नाते कब तक प्रवीन का भार उठाते रहना होगा । प्रवीन सम्पन्न घर से है पर जैसे निष्कासित मेरी चौखट पर आ पड़ा है । कब तक अपने बच्चों की जरूरतों की बलि चढाकर और उनके पेट पर पट्टी बांध कर इस प्रवीन की जरूरते पूरी करेगे जो दूर का भी कोई रिश्तेदार नही है । आदमियत की लाज रखने के लिये पनाह दे रखे है । अभी कब तक पनाह देनी होगी चार साल से उपर तो हो गये । भगवान मेरी मुसीबत दूर कर दे। प्रवीन को नौकरी दे दो । मैं उपवास रखकर तेरी कथा सूनूंगी । कहते कहते कुलवन्ती रोने लगी भगवान की तस्वीर के सामने । भगवान ने कुलवन्तीदेवी के आंसू की लाज रख ली

। प्रवीन को योग्यतानुसार बड़ी कम्पनी में नौकरी मिल गयी।
प्रवीन नौकरी पर जाने लगा । मोटी तनख्वाह भी मिलने लगी । प्रवीन कम कुलवन्तीदेवी अधिक खुश थी क्योंकि भगवान ने उसकी पुकार सुन ली थी । एक दिन कुलवन्तीदेवी बोली भइया प्रवीन महीने भर काम कर चुके ना ?
प्रवीन- हां भाभी ।
कुलवन्तीदेवी-तनख्वाह कब मिलेगी ?
प्रवीन- एक तारीख के बाद पर भाभी ये सब क्यों पूछ रही हो ।
कुलवन्ती- तुम्हारी तनख्वाह में से मुझे सवा रूपये चाहिये बस ।
प्रवीन-सवा रूपये से क्या होगा ।
कुलवन्तीदेवी- बाकी जो लगेगा मैं कर लूंगी ।
प्रवीन-क्या करने वाली हो भाभी ।
कुलवन्तीदेवी- कथा की मन्नत की हूं । अब तुमको नौकरी मिल गया । भगवान से किया वादा पूरा करने में अब देर नही होना चाहिये । कथा के दिन तुम्हे भी उपवास रखना होगा । हम और तुम्हारे भईया तो रखेगें ही ।
प्रवीन- हमें उपवास रखने की क्या जरूरत ।
कुलवन्तीदेवी-मन्नत है तुम्हारी ।

प्रवीन– किसने की मन्नत मैंने ।
कुलवन्ती– मैने की है । अब सवाल नही करना भइया बस सवा रूपया अपनी पहली तनख्वाह से दे देना परसाद में मिला दूंगी बस ।
प्रवीन–ठीक है भाभी ।
कर्मकाण्ड के विद्वान से कथा की तिथि निश्चित कर कुलवन्ती उसके पति दयाशंकर, बच्चे और प्रवीन ने उपवास रखकर कथा सुने । कथा पूरे विधि विधान के साथ विद्वान रमेश पुजारी ने सम्पन्न करवायी। कुलवन्तीदेवी पहले भगवान का परसाद प्रवीन को अपने हाथों से खिलाया । इसके बाद पति–पत्नी और परिवार परसाद ग्रहण किया । कुलवन्तीदेवी बहुत खुश थी । आसपास के परिवारों में ही नहीउन परिवारों में भी परसाद पहुंचाई जिनसे काफी दूरियां भी थी । लोग पूछते कौन सी मन्नत कर रखी थी भाभी तो वह बोलती देवर की नौकरी के लिये । मन्नत पूरी हो गयी । लो प्रिया भाभी परसाद घर में बहुत काम फैला पड़ा है। सब की छुट्‌टी पर है आज कथा सुनने के लिये ।
प्रिया– प्रवीन सगा देवर है ।
कुलवन्तीदेवी कहती न सगा है न दूर का पर आदमियत के नाते सगा हो गया है ।
प्रिया– गैर के लिये इतना बड़ा त्याग ।

कुलवन्तीदेवी–बहन कमायेगा खायेगा सुखी रहेगा । हमारी नेकी माने चाहे मत माने पर दूसरों के साथ वैसा करे जैसा उसके साथ हमारा परिवार किया है । प्रिया बहन शाम को भजन है आप भी आना ।

प्रिया– एक साथ दो काम कर रही है ।

कुलवन्तीदेवी– भजन के लिये बुलावा तो देना ही था । परसाद भी बाट रही हूं और बुलावा भी दे दे रही हूं । बहन याद से आ जाना ।

प्रिया–जरूर आउंगी ।

कुलवन्ती–प्रिया बहन मैं बहुत खुश हूं । प्रवीन की नौकरी लग गयी । वह अपना खान–खर्च देख लेगा । पति की छोटी सी तनख्वाह से बड़ी मुश्किल से खर्च चल रहा था । अपनी हाल तो वही थी कमाई अठनी खरचा रूपइया । अब थोड़ी राहत मिल जायेगी । प्रवीन अपनी नौकरी पर चला जायेगा । अपना मकान लेकर रहेगा । उसीक नौकरी मिल जाने से छाती का बोझ बहुत कम हो गया ।

प्रिया–बहन तुमने भी तो अपनी औकात नही देखी । न जान न पहचान देवर बनाकर घर में रख ली उपर सा सारा खान –खरच उठा रही हो । आज के जमाने में कोई सगे को पनाह नही देता तुम लोग सड़क से उठाकर घर में रख लिया प्रवीन को । देखना नौकरी ज्वाइन करने के बाद गिरगिट जैसे रंग बदल लेगा ।

कुलवन्तीदेवी–बहन प्रवीन से हमें कोई उम्मीद नही है । वह तो अपना और अपने घर–परिवार को देखे बस । हमने कोई आस मन में रखकर पनाह नही दी थी । बस इतनी सी आसा थी कि भूखे–प्यासे पागलों की तरह दर–दर धक्के खाने वाले बेरोजगार प्रवीन का जीवन सुधर जाये । सुधर भी गया भगवान ने हमारी सुन भी ली । कथा भी हो गयी । शाम को भजन करवा रही हूं । इसके बाद प्रवीन जहां चाहे रहे ।

शाम को भजन शुरू हो गयी निर्धारित समय पर । नौ बजे तक भजन चली । भजन के समाप्त होने पर सभी आगन्तुको को चाय के साथ भारी नाश्ता परोसा गया । कथा,भजन सभी कार्यक्रम विधिपूर्वक सफल हो गया ।

दयाशंकर के कठिन प्रयास के बाद प्रवीन को नौकरी मिल गयी पर काफी वक्त लग गया । एहसान के बदले प्रवीन को दयाशंकर और उसके परिवार में कमियां नजर आने लगी । वह बच्चों के साथ कभी–कभी बद्तमीजी पर उतर जाता । यही बच्चे प्रवीन के लिये अपने गुलक भी तोड़ चुके थे । दयाशंक और कुलवन्तीदेवी कभी भी प्रवीन को अपने बच्चों से अलग नही माना । तीनो बच्चों के साथ उसे भी खाना परोसती तााकि परायापन न झलके । बच्चों के साथ खाने सोने बैठ्ने सारी सुविधा प्राप्त थी प्रवीन को । मोटी तनख्वाह पाते ही प्रवीन जिस थाली में खाया उसी में थूकने लगा पर

दयाशंकर और कुलवन्ती नजरअंदाज कर देते । यही प्रवीन दयाशंकर के परिश्रम की रोटी कई सालों से फोकट में तोड़ रहा था । न तो प्रवीन ने एहसान माना न ही उसके परिवार के लोगों ने । परिवार के लोगो ने तो इल्जाम तक मढ दिया कि प्रवीन की कमाई पांच साल से हड़प रहे है उपर से ढिढोरा पीट रहे है भलाई का अरे पांच दिन कोई अपने सगे को शहर में रखने को तैयार नही है दयाशंकर पांच साल से प्रवीण को आश्रय दे रहा है । मन में राम बगल में छुरी । दिखाने को तो हमदर्दी है पर प्रवीन की कमाई डकार रहे है । प्रवीन के परिवार वालों ने इल्जाम मढ दिया दयाशंकर के सिर पर जबकि प्रवीन बेरोजगार था । दयाशंकर अपनी कमाई की रोटियां रोटियां मुफत में तोड़वा रहा था।

दयाशंकर की काकी मधुमतीदेवी जो परदेस में रहती थी कुलवन्ती से पूछी कुलवन्ती सही –सही बताओ प्रवीन कुछ नही कमा रहा है ।

कुलवन्तीदेवी–नही काकी । ऐसी कोई प्रोफेशनल डिग्री तो उनके पास नही है कि नौकरी मिल जायेगी । कोशिश कर रहे है ।

मधुमतीदेवी–फोकट में रोटी तोड़वा रही हो ?

कुलवन्तीदेवी–यह तो प्रवीन अच्छी तरह बता सकते है ।

मधुमती–चार दिन तो परदेस में कोई खिलाता ही नही तुम बरसों से क्यों खिला ररही हो ।
कुलवन्ती–रिश्ते के नाते ।
मधुमती– प्रवीन रिश्तेदार कैसे हो गया ।
कुलवन्ती–आदमियत के रिश्ते के नाते ।
मधुमती–इतना बड़ा धर्मात्मा क्यों बन रहे हो । अरे शहर परदेस में कोई किसी को फोकट में नही खिलाता ।
कुलवन्ती–हम तो खिला रहे है । अपने बच्चों के निवाले में कटौती करके ।मेरे उपर नही नेकी के उपर इल्जाम मढ रही हो । काकी आप जैसे लोगों की वजह से मुसीबत में लोग हाथ लगाने से कतराते है । हम तो सच्चे मन से निःस्वार्थ एक बेरोजगार की मदद कर रहे है जो भूखे–प्यासे पागलों की तरह भटक रहा था । काकी मुसीबत में आदमी की मदद करना अपराध होता है तो मैं यह अपराध करती रहूंगी ।
मधुमती–प्रवीन खुद एक दिन परदा उठा देगा ।
कुलवन्ती–नौकरी मिलने के बाद । अच्छा दिन आते ही अच्छाई में बुराई नजर आने लगती है । खैर इसकी भी हमे परवाह नही है । हमने तो नकी की है । एक परिवार को सम्वृध्द बनाने की कोशिश की है तन मन और धन से भी ।

मधुमती की जहरीली बाते सुनकर कुलवन्ती को गुस्सा तो बहुत आया पर वह इस जहर को पी गयी । यह बात कुलवन्ती दयाशंकर से बतायी । दयाशंकर पीछे न हटने की कसम खा लिया । छोटे बड़े सभी लोगों के सामने प्रवीन की नौकरी के लिये गिड़गिडाया आखिरकार नौकरी भी मिल गयी । प्रवीन के पतझड़ भरी जिन्दगी में बसन्त छाने लगा । वह भी इस तरक्की के अभिमान में आ गया और दयाशंकर की नेकी की बदनेकी गिनाने लगा । प्रवीन का बड़ा भाई जो कभी कभी दयाशंकर से फोन पर बात कर लेता । उसके बाप जिनके लिये दयाशंकर और उसका परिवार फरिश्ता था । प्रवीन की नौकरी लगते ही सब बदल गये । कोई बात तक नही करना चाहता था पर दृढ निश्चयी दयाशंकर नेकी की राह से पीछे नही हटा । न ही अपने मन का मलाल प्रवीन के सामने प्रगट किया ।

प्रवीन में भी बहुत बदलाव आया गया । जल्दी जाना देर को आना और व्यवहार में कषैलापन भी सुमार हो गया । प्रवीन का कषैलापन दयाशंकर और उसके परिवार को घाव करने लगा । एक दिन प्रवीन लाल-पीला होता हुआ बोला भाभी तुम्हारे बच्चे मुझे परेशान करने लगे है ।

कुलवन्तीदेवी-क्या कह रहे हो प्रवीन भइया ।

प्रवीन-हां ठीक कह रहा हूं ।

कुलवन्ती–मेरे बच्चे तो तुमको बहुत प्यार करते है । बड़ा बेटा चिराग अपनी नई साइकिल तुमको दिया । जिसे तुम चला कर तोड़ डाले । पंचर तक नही बनवाये । चिराग,गुंजन बीटिया शोभा तुम्हारी कितनी मदद किये अपने गुल्लक तक तुम्हारे लिये तोड़ दिये । वही तुमको परेशान कर रहे है ।

प्रवीन–तुम क्यो मानेगी ? अपने बच्चो की गलती । समझा लो बच्चो को ।

कुलवन्ती– कितने बरस से इस घर में हो ।

प्रवीन– साढे चार ...

कुलवन्तीदेवी –इतने बरस से ये बच्चे तुमसे स्नेह करते रहे । आज झगड़ा क्यों कर रहे है ।

प्रवीन–तुम्हारे बच्चे है तुम जानो ।

कलवन्तीदेवी–समझ गयी । भईया पहले एक अच्छा सा घर देख लो फिर शिफट हो जाना ।

प्रवीन–मुझे भी इस माहौल में रहना अच्छा नही लगता ।

कुलवन्तीदेवी–अच्छी बात है । खूब तरक्की करो । अपने बाल बच्चों को पढाओ लिखाओ । एक बात ध्यान रखना ।

प्रवीन–क्या.... ?

कुलवन्ती– किसी की नेकी को बदनाम नही करना ।

प्रवीन– मैं भी समझता हूं ।

कुलवन्तीदेवी– भइया दो महीने में आये बदलाव से मैं भी परिचित हो गयी हूं । मैने जो कुछ किया है इंसानियत और

परमार्थ के नाते किया है । जो तुमने किया है मतलब बस किया है और कर भी रहे हो ।
प्रवीन–हम मतलबी है ।
कुलवन्तीदेवी– तुम अच्छी तरह समझ सकते हो ।
प्रवीन–क्या....
कुलवन्तीदेवी– तुम कह रहे हो ना साढे चार साल इस घर में रहे । इस घर का अन्न–जल ग्रहण कियो ।
प्रवीन–हां...
कुलवन्तीदेवी–तुमसे घर के किराये या खोराकी की कभी मांग की गयी ।
प्रवीन–नही....
कुलवन्तीदेवी–नेकी के माथ अपयश क्यों ? भइया मुझसे जो हुआ कर दिया । अगर मेरी नेकी मे तुमको खोट नजर आती है तो क्षमा कर देना । रही बात अलग रहने की तो तुम जब चाहो तब से रहना शुरू कर दो । मुझसे कोई मदद चाहिये तो निःसंकोच कह देना ।
प्रवीन–एहसान करने को रहने दीजिये ।
कुलवन्तीदेवी–भईया अभिमान मत करो । तुम्हारी तरक्की में इस घर की दुआये शामिल है ।
प्रवीन–हो सकता है ।
कुलवन्तीदेवी–तुमको याद नही ?
प्रवीन–नहींकृ

कुलवन्तीदेवी–हम भी नही चाहते याद रखो । याद रखना है तो इतना जरूर याद रखना कि किसी जरूरतमन्द की मदद करना अपना फर्ज समझना । यही हमने किया बस ।
प्रवीन–मुझे जरूरत नही है ।
कुवन्तीदेवी– जरूरत पड़ेगी या नही यह तो वक्त की बात है । पद दौलत का अभिमान अच्छी बात नही । चिराग के पापा ने हाथ जोड़–जोड़कर नौकरी लगवा दिया । उनकी पसीने की कमाई का नमक खाये अब जरूरत नही है । चिराग के पापा अपने लिये किसी के सामने हाथ नही फैलाये पर तुम्हारे लिये किस किस की चौखट पर माथा नही पटके । तुम हो कि उनकी नेकी को दुत्कार रहे हो ।हमारे बच्चों को गाली दे रहे हो । चाटे मार रहे हो । अरे हमारे बच्चों ने तुम्हारा क्या लिया है । तुम्हे दिया ही है । खैर मत मानो नेकी पर खुशी मन से जाओ । अब तो तुम्हे सहारे की जरूरत भी नही है । कमाओं,खाओ खूब तरक्की करो । हमारी नेकी को मत मानना पर नेकी को गाली तो मत दो जिससे दूसरे किसी की मदद करने से कतराये ना ।
प्रवीन–बहुत एहसान जता दिया । सारी उम्र तुम्हारे एहसान के तले दबा रहूंगा क्या ?
कुलवन्तीदेवी– नही भईया हमारा कैसा एहसान । हमने जो कुछ किया भगवान ने करवाया । हम तो ठीक से अपने

बच्चों की परवरिश नही करने की हैसियत रखते पर उपर वाला का चमत्कार ही है कि तुम्हारे जैसे आदमी को साढे चार साल तक अपने हाथ से गरम-गरम रोटियां खिलायी। बेरोजागरी के घाव पर आदमियत का मल्हम लगायी ये सब हमारी और हमारे परिवा की गलती थी । बच्चों ने सगा काका मानकर गलती कर दिया । चिराग के पापा ने नौकरी लगवाकर गलती कर दिया । खैर अब तो सक्षम हो गये हो । सब कुछ खरीद सकते हो दौलत से पर प्रवीन बाबू संस्कार दौलत से नही खरीद पाओगे। हमारे संस्कार में शामिल है दूसरे की मदद करना । भले ही हमारे हाथ तंग रहे करते रहेगे ।

प्रवीन-ताना मार रही हो ।

कुलवन्ती-ताना मारने वाली मैं कौन होती हूं । जहां पर खड़ी हूं स्वाभिमान है अभिमान नही। हकीकत बयान कर रही हूं । मै भी बाल-बच्चेदार हूं । मैने तो अपना समझकर किया पर तुमको परायापन नजर आने लगा है तो वह तुम्हारी नजर का बदलाव है । मै तो हमेशा ही दुखियो का मदद करने के लिये तैयार रहती हूं । वही किया है । ठीक है तुमको तकलीफ हो रही है तो मकान ले लो । बनाओ खाओ । आने जाने में दस रूपया क्यों खर्च करते हो । जो हमें करना था कर दिये । तुम सदा खुश रहो हमारी दुआये

सदा तुम्हारे साथ रहेगी भले ही तुमने नेकी के बदले हंसते जख्म क्यों न दिये ।
शोभा–चाचा चाय के साथ और क्या लाउं ।
प्रवीण–कुछ नहीं ।
शोभा– आज कुछ क्यों नही ।
प्रवीन–मैं जा रहा हूं । बहुत देर हो गयी । दोस्त इंतजार कर रहे है ।
कुलवन्तीदेवी–चाय पी लो खाना भी बन गया है खा कर दोस्तों से मिल लेना ।
प्रवीन–दोस्तो से मिलना जरूरी है । ना चाय ना खाना । इस घर का नमक बहुत खा लिया । अब नही कहते हुए उठा गाड़ी स्र्टाट किया । गाड़ी से उठा अभिमन का धुआं दयाशंकर के घर पर ऐसे फैल गया जैसे खाने के बाद प्रवीन ने थाली में थूक दिया हो ।
नन्दलाल भारती

24–दरार

संयुक्त परिवार था ।घर बाहर खूब वैभव था। मां राजवन्तीदेवी और बाप गनेश के साथ तीनों भाईयों गगन,मगन और करन का परिवार एक साथ एक घर में एक रसोई का पका भोजन खा रहा था । किसी प्रकार की कोई तंगी नही थी ।कभी कोइ मुसीबत आ भी गयी तो सब

मिलकर मुकाबला कर लेते थे । सब कुछ संयुक्त था । गगन और मगन शहर में आटा पीसने का धंधा मिलकर करते थे । अच्छी कमाई हो जाती थी और हर माह मनिआर्डर भेजते रहते थे । संयुक्त परिवार की गृहस्थी अच्छी तरह चल रही थी । गांव के लोग गनेश के बेटों का उदाहरण देते नही थकते थे । बूढे गनेश की मान–जान भी खूब थी आसपास के गांव में । गनेश की खुद के गांव में भी काफी प्रतिष्ठा था । गांव वालों ने उन्हे चौधरी की उपाधि से नवाज दिया था । गगन शहर में सेठजी के नाम से मशहूर था । वह कुर्सी पर बैठा रहता बाकी सब काम मगन सम्भालता था। गनेश का छोटा बेटा करन पढाई के साथ बाप का हाथ भी खेतीबारी में बंटाता । बाप–बेटे की मेहनत से खेत–खलिहान भी भरा रहता था । परिवार की चाभी राजवन्तीदेवी और गनेश के हाथ में थी ।

गनेश चौधरी का मझला बेटा मगन बड़ी मेहनत,लगन और ईमानदारी के साथ चक्कियों का कारोबार देख रहा था । उसकी मेहनत को देखकर लक्ष्मी जैसे ठहर गयी थी । गगन चक्की सेठों में बड़ा नाम हो गया था । मालिकाना उनके हाथ में था । गगन ने अपने बेटो की पढाई और बेटियों के ब्याह गौने पर खूब खर्च किये । बेटों के ब्याह में भी दिखावे में तनिक भी कोतहाई नही बरती गयी थी । गगन सेठ ज्यादा होशियार थे । चक्की से हुई कमाई का आधा से

अधिक हिस्सा खुद रख लेते । बाकी के रूपये में से गांव भेजते, एक दो जो कर्मचारी थे उनकी तनख्वाह देते । खुराकी,बिजली आदि खर्चे का निपटान करते । पाकेट खर्च के नाम पर सौ पच्चास रूप्ये कभी–कभार मगन के हाथ पर भी रख देते ।मगन से काम किराये के मजदूर जैसे ही लेते । हाड़फोड़ मेहनत के बाद गांव से शहर तक शिकायत भी करते रहते कि मगन मन लगाकर काम नही कर रहा है चक्की का व्यापार घाटे में जाने लगा है । मगन बड़े भाई को बाप के समान आदर देता था । नतीजन कभी सवाल –जवाब नही किया । गगन भईया जो कहते सिर लटकाये मान लेता था । गगन के प्रति तनिक संदेह वह पाप समझता था परन्तु गगन के मन में चोर घर कर चुका था । गांव में गनेश चौधरी छोटे बेटे के साथ खेत में जुटे हुए थे । गगन की समझाईस पर करन पढाई छोड़कर खेतीबारी के काम में रम गया । करन पढाई लिखाई का ज्ञान खेती में अजमाने लगा । नतीजन पैदावार में खूब बढोतरी होने लगी । खाद –पानी की व्यवस्था शहर से आ रहे मनिआर्डर से हो जाती । कोठा–अटारी अनाज से पटा रहने लगा ।गनेश चौधरी के मान–जान मे भी इजाफा हुआ । वे अपनी बेटों की तरक्की से काफी खुश था ।राजवन्तीदेवी का भी घर की महिलाओं के उपर खूद दबदबा था । परिणामस्वरूप परिवार

तरक्की कर रहा था । बच्चे पढ लिख रहे थे ।सयुक्त परिवार का सुख भरपूर गनेश चौधरी की चौखट पर बरस रहा था ।
गगन की पत्नी तो शहर में रहती थी पर गनेश कुछ दिन के लिये उसे गांव बुला लेता और मगन की पत्नी को भेज देता । मिलजुलकर सब हंसी–खुशी से संयुक्त परिवार का सुख भोग रहे थे ।
गगन के बेटे बड़ी–बड़ी क्लास में पढ रहे थे पर मगन का इकलौता बेटा कवलदार खेतीबारी में लगा दिया गया स्कूल जाने की उम्र मे । शुरूआत में स्कूल जाते समय रोने चिल्लाने लगा । एकाध दिन तो स्कूल से भाग भी आया फिर क्या गगन का आदेश जारी हो गया कि करन के साथ कवलदार खेतीबारी के गुन सीखेगा। गनेश के चाहते हुए भी कवलदार पढ नही पाया । मगन ने बेटे के भविष्य की भी सुधि नही ली । वह तो गगन के लिये लक्ष्मण बना हुआ था पर भाई गगन उसके हक को समेटने की साजिश में जुटा हुआ था चुपके–चुपके ।
गनेश चौघरी अचानक बैठे–बेठे स्वर्ग को सिधार गये । अब परिवार का पूरा कन्ट्रोल राजवन्तीदेवी के हाथ में तो आ गया पर रह –रह कर गगन और उसका दबाव आंसू दे जाता । खैर राजवन्तीदेवी हिम्मत नही हारी संयुक्त परिवार के

सोधेपन को बचाये रही । बेचारी कब तक बचाती एक दिन वह भी दुनिया से कूच कर गयी ।

गनेश चौधरी और राजवन्ती के गुजरते ही गगन के मन का डकैत पूरी तरह जाग उठा । वह शहर से लेकर गांव तक की सम्पति पर कब्जा जमाने की भरसक कोशिश करने लगा । श्पैतृक सम्पति में बराबर का बंटवारा तो हुआ पर भाईयों के सामूहिक कमाई के धन से खड़ी कास्तकारी को अपनी अकेली की कमाई से खरीदी कहकर छिन लिया । गगन शहर की चक्कियों पर पूरी तरह से कब्जा कर लिया । पूरे कारोबार की लगाम गगन अपने हाथ में ही नही अपने नाम करवा लिया । कुछ ही महीनों में मगन को चक्की से बेदखल कर दिया । परिवार में दरार पड़ना तो गनेश के मरते ही शुरू हो गयी थी । राजवन्तीदेवी के मरते ही संयुक्त परिवार का सोंधापन चौख से रूठ गया । वही लोग जो एक दूसरे के लिये जान देने के लिये तैयार थे अब एक दूसरे के विरोधी हो गये थे ।

मगन धंधा से बेदखल होने के बाद रोटी को नस्तवान हो गया । भाई के दुश्मन बन जाने के बाद सालों इधर उधर नौकरी करता रहा पर वह कामयाब नही हुआ जैसे उसकी तकदीर ही रूठ गयी । आखिरकार वह थक हारकर गांव आ गया । गांव में पुरखों की विरासत का हा बंटवारा हुआ । दस–दस बीसा जमीन हिस्से आयी । बाकी जमीन जो

भाईयों के मेहनत के बलबूते खरीदी गयी थी उसका तो गगन ने बंटवारा ही नही होने दिया खुद के आधिपत्य में ले लिया । मगन और करन का परिवार सड़क पर आ गया । गगन के पास दौलत और जमीन बेशुमार हो गयी । मगन और करन का परिवार दूसरे के खेतों में काम करने को बेबस हो गया । दस बीसा जमीन से तो साल भर के लिये अन्न पैदा नही हो सकता था । पास में रूपया भी नही था कि कोइ्र दूसरा रोजी–रोजगार करें । गगन के मन का डकैत भाईयों को खेतिहर मजदूर बना दिया ।

कहावत है ना जबरा मारै रोवै ना दे । वही किया गगन भी भाईयो का हक छिन लिया ।खुद तो सेठ बन बैठा और भाईयों को खेतिहर मजदूर बना दिया । भाईयों को बराबर का हिस्सा मिल जाता तो मगन और करन के उपर मुसीबत की बिजली न गिरती । दुख तो इस बात का था कि यह बिजली एक मां के पेट से पैदा हुए भाई गगन ने गिरायी थी ।

कुछ बरस पहले जिस संयुक्त परिवार की मिशाल दी जाती थी अब कोई नाम लेने वाला नही था । एक चूल्हे की जगह तीन चूल्हे जलने लगे थे । दुख–तकलीफ सब अपने–अपने भुगत रहे है थे जबकि यही लोग एक की तबियत खराब होती थी तो पूरा परिवार एक देखरेख करता था अपना दुख समझकर । गगन के लोभ ने सब कुछ तबाह कर दिया ।

बिखर गया संयुक्त परिवार का सोंधापन । मगन और करन का परिवार महलनुमा घर से बेदखल होकर झोपड़ी में रहने को बेबस हो गया ।
मगन भाई के मोह में पड़कर लाचार हो गया ।एक बेटा और तीन पुत्रियां सभी निरक्षर रह गये । लड़के-लड़कियों का ब्याह-गौना मामा-मामी के सहयोग से हो गया । गगन अपने वैभव पर इतरा रहा था । मगन और करन आंसू से रोटी गीली कर रहे थे । करन अपनी दयनीय दशा का जिम्मेदार गगन को खुलेआम ठहराता । ठहराता भी क्यो ना उसी ने तो उसे शहर नही जानने दिया था । करन शहर जाकर कमाने की जिद किया भी था पर गगन ने कहा था हम तो कमा ही रहे है सभी को शहर में जाकर कमाने की क्या जरूरत गांव की जमींदारी को भी तो देखने वाला चाहिये । मां-बाप और भाई गगन की बातों में आकर बेचारा करन शहर की ओर रूख नही किया । गगन के बताये रास्ते पर चल पड़ा जहां उसे छल ही मिला ।
आर्थिक तंगी से लाचार होकर करन शहर जाकर ईंट गारा करने लगा । उसकी गृहस्ती की गाड़ी कुछ लाइन पर आने लगी ।ईंट गारे का काम जब तक चलता । काम करता कमाई से जो कुछ बचता बाल-बच्चों का मनिआर्डर कर देता । बन्द हो जाता तो गांव आकर खेत मालिकों के खेत में काम करता कोई परमानेन्ट नौकरी तो थी नही शहर मे।

मगन के दिन तंगी में गुजरने लगे । वह फिर शहर की ओर भागा । शहर में वह चक्की चलाने की नौकरी कर लिया । चार छः महीना नौकरी कर ही पाया था कि खांसी से परेशान रहने लगा ।कभी –कभी खून की उल्टियां तक हो जाती था । डाक्टर को दिखाने के बाद पता चला कि वह टी. बी. का रोगी हो गया है । बचपन से गगन के आधिपत्य का चक्कियां जो चलाया था । चक्का की आटा धीरे–धीरे उसके फेफड़े को छलनी कर गया था । टी.बी. की बीमारी मगन को पटक दी । काम करना मुश्किल हो गया । शहर से वह भागकर गांव आ गया । रूपये पैसे की तंगी के साथ अनाज की भी कमी थी । बंटवारे में सिफ दस बीसा खेत के अलावा और कुछ नही दिया था गगन ने । वही खेत ही मगन के पास बड़ी पूंजी थी । काफी सोच विचार कर मगन ने खेत बेचकर दवाई शुरू तो कर दिया पर दवाई का कोई असर नही हुआ । दस बीसा खेत जो अनपढ बेटे के जीने का जरिया था वह भी हाथ से निकल गया । मगन सगे बड़े भाई गगन के षणयन्त्र का शिकार होकर टी.बी. की भेट चढ गया । मगन की पत्नी बेचारी कलावती के उपर मुसीबत का पहाड़ गिर पड़ा । उसके पास कफन तक का इन्तजाम न था । गगन ने एकदम से आंखे मूंद ली थी । गगन राजा और मगन के आश्रित रंक हो चुके थे। बहनोई के मौत की खबर भाई टेकचन्द को लगी । वह बेटे के साथ

बहन के दस कोस दूर घर की ओर दौड़ पड़ा । बहन के घर का नजारा देखकर वह दंग रह गया । मगन की लाश घर में पड़ी हुई थी । कलावती बच्चों के साथ छाती पीट–पीट कर विलाप कर रही थी ।

टेकचन्द–बहन का ढाढस बंधाया उसके आंसू पोंछा । दाह संस्कार में लगने वाली वस्तुओं का इंतजाम किया । सूरज डूबते–डूबते मगन की मृत देह गोमती नदी के किनारे पहुंची । अल्पवयस्क बेटा कवलदार ने मुखागिन दिया मगन के मृत देह का विधि विधान के साथ अन्तिम संस्कार सम्पन्न हो गया।

कलावती के भाई ने अन्तिम संस्कार से लेकर तेरहवीं तक का पूरा बन्दोबस्त किया । रीति–रिवाज के साथ तेरहवी भी हुई । मगन की मौत के बाद कलावती बेसहारा हो गयी । जहां तक मदद होती भाई भतीजे करते । रोजी–रोटी का जरिया दस बीसा खेत भी बिक चुका था मगन के इलाज के लिये । दस बीसा खेत लील कर भी टी.बी. की बीमारी मगन को भी लील गयी ।

सन्तोष के साथ इकलौते बेटे का भविष्य संवारने के लिये कलावती लेकर दूसरों के खेतो में मजदूरी करने लगी । करन भी रोजी–रोटी के लिये संघर्षरत् था। कलावती को घर के नाम पर बस एक मंड़ई और एक कमरे का नन्हा से कच्चा घर मिला था जो ढह चुका था । सिर छुपाने के लिये

बस मंड़ई ही बची थी । लोग कहते नही थक रहे थे कि भाईयों का हक मार कर कब तक आबाद रहोगे गगन ? मगन की विधवा के ढहे एक कमरे के छोटे से घर और करन के साबूत कच्चे घर के बीच गगन की महलनुमा हवेली रिश्ते के बीच दरार और घरों के बीच दीवार खींच कर हक हड़पने की चुगली कर रही थी ।

24-पेट भर रोटी

भयंकर घनघोर काली रात और हवा की सांय-सांय सिहरन पैदा कर रही थी । कोहरे से पूरी बस्ती ढंक चुकी थी । पुआल के बिस्तर और रजाईयों में लिपटे लोगों की हड्डियां बोल रही थी । कुत्ते ठण्ड से निजात पाने के लिये जोर -जोर से भौककर खुद को गरम करने की अथक कोशिश कर रहे थे । कण्डीराम की पत्नी इतवरिया प्रसव पीड़ा से कराह रही थी । महिलायें इतवरिया की पीड़ा को देखकर भगवान से प्रार्थना कर रही थी कि हे भगवान बेचारी इतवरिया की पीड़ा को दूर करो । कुछ महिलायें पुआल जलाकर कमरा गरम करने की बार-बार कोशिश कर रही थी । कण्डी नीम के चबूतरें पर बैठा तारे गिन रहा था । पहरा देने वाले लोग कण्डीराम को बेचैन देखकर ठमक ठमक गये । जैकरन पूछा क्यों तारे गिन रहा है कण्डी ?

कण्डीराम-जैकरन भइया घरवाली की तबियत बहुत खराब है ।

इतने में बच्चे के रोने की आवाज कानों को सहलाने लगी ।
जैकरन–दुख दूर हो गया । अब तो खुश हो ।
कण्डीराम –हां भईया ।
शनिचरी अरे कण्डी कहां है बधाई हो तू बेटे का बाप बन गया । कण्डी दौड़कर शनिचारी काकी का पैर छुआ ।
पहरा देने वाला जत्था बहुत बधाई हो कण्डी । जागते रहो–जागते रहे कहते हुआ आगे बढ गया । शनिचारी काकी बस्ती की औरतों को सोहर गाने के लिये बुलाने दौड़ पड़ी । बच्चे के जन्म से छ दिन तक सोहर की स्वर लहरियां पूरी बस्ती को खुशी की बयार से आनन्दित करती रही । छठी के दिन तो बढिया दावत का इन्तजाम भी हुआ था । इसी दिन इतवरिया काकी बच्चे को कण्डीराम की गोद में रखते हुए बोली ले देख ले बेटे का मुंह कितना सुन्दर है । यही बेटा तेरे जीवन के सारे दुख–दर्द को हरेगा ।
कण्डीराम– हां काकी अभी तो ये परिवार पेट भर रोटी के लिये जूझ रहा है । पहले तो इस भूतनाथ की परवरिस अच्छी तरह हो जाये ।
शनिचरी– क्या कहा ?
इतवरिया–भूतनाथ ।

शनिचरी– भूतनाथ मतलब भोलेनाथ ।सचमुच यह बच्चा संकटमोचन साबित होगा । अरे सुनों कण्डी ने अपने बेटवा का नामकरण कर दिया ।
रणछोड़–क्या ? कण्डी ने नामकरण भी कर दिया ।
इतवरिया– हां ।
रणछोड़– क्या नाम रखा कण्डीराम बताओ तो सही।
शनिचरी–भूतनाथ ।
रणछोड़–लो पंचो कण्डी के घर भगवान शंकर विराज गये है । शंकर भगवान की जय–जयकार तो कर दो एक बार । रणछोड़ के आहवाहन पर जय–जयकार भी हो गयी ।
समय के साथ भूतनाथ बढने लगे ।भूतनाथ की उम्र के साथ ही कण्डीराम के सपने भी बढने लगे जमीदार के खेत में उम्र गंवाते गंवाते । भूतनाथ के सात साल के होते ही कण्डीराम स्कूल में दाखिले के लिये ले गया पर दाखिला नही हुआ भगा दिया गया। अछूत का बेटा जो था । होश सम्भालते ही भूतनाथ ने बंधुवामजदूर न बनने की कसम खा लिया । दंबंग जमीदारों ने बहुत कोशिश किये पर अटल रहा अपनी कसम पर । कई बार मार भी खाया पर खेत मालिको के खेत में पैर नही रखा । भूतनाथ शहर परदेस की तरफ रूख न कर मां बाप से छिप–छिप कर नाच–गाने का गुर सीखने लगा । भूतनाथ के हठ को देखकर उसकी मां और बाप परदेस जाने की सलाह देते

पर वह एक दिन मां बाप के सामने नाच मण्डली में शामिल होने की मंशा जाहिर कर दिया । शक्ल सूरत से अच्छा था नाचते नाचते वह राजा के रोल में आ गया । राजा के रोल में जमीदरों के सामने मेज के उपर कुर्सी रख कर बैठता तो वे भी ताली पीटने से खुद को रोक नही पाते । यही तो भूतनाथ की कसम थी । भूतनाथ नाच मण्डली की वजह से बहुत प्रसिद्ध हो गया । राजा के रोल में प्रेमावती नामक कन्या उसे देखकर मोहित हो गयी । अन्ततः उसके साथ साथ फेरे लेकर सात जन्म के लिये भूतनाथ की हो गयी । भूतनाथ के ब्याह के साल भर के भीतर ही मां दुखहरनी और बाप कण्डीराम पेट भर रोटी के लिये संघर्षरत् भगवान के घर जा बसे ।

मां बाप को दुनिया से फुर्सत पा जाने के बाद भूतनाथ अकेला हो गया । तंगी के दिन खलने तो लगे पर वह अपनी प्रतिज्ञा नही तोड़ा । नाच मण्डली से भी इतनी कमाई नही हो पाती थी कि वह परिवार के खानखर्च का भार उठा सका । नाच मण्डली का काम सिर्फ ब्याह गौने में ही चलता बाकी के नौ महीने बेठे मक्खी मारना पड़ता । इसी बीच प्रेमावती ने दो बेटियां के बाद तीसरे कन्हैया को जन्म दे दिया । कन्हैया छ' साल का कब हो गया पता ही नही चला ।

भूतनाथ को बेटे को पढा लिखाकर बड़ा आदमी बनाने की लालसा थी । वह दूर गांव के स्कूल में गया । हेडमास्टर साहब के सामने हाथ जोड़कर बोला मास्टर साहेब मुझे अपने बेटवा का दाखिला करवाना है ।
मास्टरसाहेब–तुम्हारा बेटवा कितने सा का हा गया है ।
भूतनाथ–छः साल का ।
मास्टर–कल लेकर आना दाखिला हो जायेगा ।
भूतनाथ– मेरा बेटा सचमुच पढ पायेगा इस स्कूल में ना ।
मास्टरजी– जरूर । जमाना बदल गया है । सबको बराबरी का अधिकार है । छोटे बड़े सभी के बच्चे एक साथ पढ–लिख सकते है ।
भूतनाथ–काश मैं भी पढ पाया होता ।
मास्टरजी–खुद से क्या बात कर रहे हो ।
भूतनाथ–बचपन याद आ गया । कहते हुए गमछा से दोनोंआंखे ढंक लिया।
मास्टरजी–भूतनाथ मैं समझ गया तुम्हारे दर्द को । अब कोई तुम्हारे बच्चों को स्कूल से नही भगा पायेगा । तुम्हारा भी बेटा कलेक्टर क्या और उचे ओहदे पर जा सकता है पढ लिखकर । हंसी–खुशी घर जाओ । कल बेटवा को साथ लेकर आना ।
कन्हैया का दाखिला हो गया । कन्हैया का मन पढाई में खूब लगने लगा । एक –एक कर पांचवी जमात पास कर

गया और अपनी उम्र से ज्यादा जिम्मेदार भी हो गया । मां –बाप का रोटी के लिये संघर्ष उसे अन्दर से आन्दोलित कर दिया । एक दिन वह चुपके से शहर भाग गया । जहां महीनों इधर उधर दर–दर की ठोकरे खाने के बाद एक होटल में बर्तन धोने का काम पा गया । काम के साथ वह पार्ट–टाइम में बिजली का काम सीखने लगा । मां–बाप के संघर्ष को कम करने के लिये हर महीने मनिआर्डर भी करने लगा । कुछ ही महीने में कन्हैया अच्छा मिस्ती बन गया । होटल की नौकरी को अलविदा कह दिया । शहर में कन्हैया मिस्त्री के नाम से जाना जाने लगा ।

इधर गांव में भूतनाथ और प्रेमावती को कन्हैया के गौने की चिन्ता सताने लगी । ब्याह तो आंख खुलते ही कर दिये थे । इस ब्याह की यादें भी कन्हैया के चित में तनिक भी नही था क्योंकि जब ब्याह हुआ था तो वह ठीक से चल भी तो नही पा रहा था । कन्हैया के गौने का दिन रखकर भूतनाथ ने अपनी बीमारी का तार कन्हैया को कर दिया । तार पाक कन्हैया घबरा गया । वह संगी –साथियों से हथ–उधरा लेकर तुरन्त गाड़ी पकड़ लिया ।

कन्हैया दो दिन की रेल फिर बस और फिर आठ कोस की पैदल थकाउं यात्रा कर घर पहुंचा । मां दरवाजे पर ऐसे खड़ी थी जैसे वह आतर उतारने के लिये खड़ी हो ।

कन्हैया मां का पैर छुआ । प्रेमावती ने उसे गले लगा लिया ।कन्हैया रोते हुए बोला मां पिताजी कहां है । क्या हो गया है उन्हे ।
प्रेमावती–कुछ नही हुआ है ।
कन्हैया– मां वो तार ....?
प्रेमावती– झूठा था । तुमको बुलाने का बहाना था ।
कन्हैया– क्यों मां ।
प्रेमावती–तेरे गौने का दिन पड़ गया है जो ।
कन्हैया– मां गौना रोक दो चार साल के लिये ।
प्रेमावती–नही रूक सकता बेटा । तेरे ससुर के कहने पर दिन पड़ा है । तेरे पिताजी भी साल दो साल रूकने का बात कर रहे थे । मैने अपने कान से सुने थे पर तेरे ससुर नही माने । वे बोले समधीजी मेरी बेटी जब तक धान थी अपने घर रखा अब चावल हो गयी है । अब मैं इस अमानत को नही सहेज पाऊंगा । एक बेटी के बाप के ऐसी विनती को तेरे बाप कैसे टाल सकते थे । गौना तो आकर रहेगा । हां तू जब तब अपने पैर को मजबूती से टिका नही पायेगा तब तक बहू का बोझ हम उठायेगे । इतने में भूतनाथ आ गया । भूतनाथ का पैर छूते हुए बोला बीमारी हालत में इतना क्यो भाग दौड़ कर रहे हो पिताजी ?

भूतनाथ–बेटा कार–परोजन का घर है भागदौड़ तो करनी पडेगी ।
कन्हैया – कैसा कार–परोजन ।
भूतनाथ–कन्हैया की मां देखो कैसा अनजान बन रहा है । जैसे इसको पता ही नही हो गौने का दिन सिर पर है।
कन्हैया– गौना अभी चार साल तक नही आयेगा ।
भूतनाथ–कन्हैया का हाथ पकड़कर खटिया पर बैठाया फिर अपनी पगड़ी उसके पांव पर रखकर बोला बेटा ऐसे ही तेरे ससुर ने अपनी पगड़ी मेरे पैर पर रख दिया था यह कहते हुए कि बीटिया राधा अब चावल हो गयी है ।बेटा अट्ठारह साल का हो गया है । गौना लाने की उम्र भी है । रख ले पगड़ी की मान ।
बाप के अनुनय–विनय के आगे कन्हैया झुक गया । गौना बड़े धूम–धाम से आया । महीना भर के बाद कन्हैया साजवन्ती को मां–बाप की अच्छी देखभाल करने की हिदायत देकर शहर चला गया । चार –छ महीने में कन्हैया शहर से आता हपता–पन्द्रह दिन रहता फिर चला जाता । साजवन्ती को सास–ससुर तनिक ना भाते । वह कन्हैया के साथ शहर जाने की जिद करती । वह कहता जिस मां बाप को हमारे लालन–पालन की फिक्र में पेट भर रोटी नसीब नही हुई उन्हे कैसे अकेला छोड़ दें । अगली बार साथ ले जाने का वादा करके चला जाता । दो बार तो सफल हो गया ।

भूतनाथ और प्रेमावती को बहू के शहर जाने की इच्छा का पता चल गया तो वे खुद ले जाने की जिद पर उतर आये । अन्ततः कन्हैया साजवन्ती को शहर ले जाने का राजी हो गया । चार–छ महीना शहर में रखता फिर गांव छोड जाता । शहर की आहो–हवा ने साजवन्ती को सास–ससुर का बागी बना दिया । वह उन्हे फूटी आंख नही देखना चाहती थी । बहू की शिकायत दोनों बूढा–बूढी कन्हैया तक पहुंचने नही दिये । पूरा मान–सम्मान देते ।समय की मार को भूतनाथ और प्रेमावती नही सह पाये थक हारकर गिर पड़े । बूढे मां बाप की दशा को देखकर कन्हैया ने साजवन्ती को गांव छोड़ने का फैसला कर लिया क्योंकि शहर में एक खटिया डालने भर का किराये का घर था । इतनी इनकम तो थी नही की वह बड़ा घर ले सके । था तो पांचवी तक पढा लिखा मिस्त्री । हां शहर में मान सम्मान के साथ रह रहा था । यही उसकी बहुत बड़ी कमाई थी जिसके लिये गांव के अछूत सपनों की बात समझते थे ।

कन्हैया का फैसला साजवन्ती के मन में विद्रोह की आग भड़का दिया । जब तक कन्हैया गांव में रहता साजवन्ती सास–ससुर की देख–रेख का स्वांग रचती । कल से घबराकर भूतनाथ और प्रेमावती बेटे के सामने बहू की शिकायत न करते । खैर साजवन्ती स्वांग का मुखौटा उतर

फेंकी और रौद्र रूप में आ गयी । बूढे सास ससुर के बीच दीवार खींच दी । अब क्या एक तवा दो रोटी की नौबत आ गयी । साजवन्ती पहले खुद बनाती इसके बाद बूढी सास को रोटी बनाने देती । भूतनाथ और प्रेमावती की छाया से परहेज करने लगी । अपने बेटी और बेटो तक को बूढे सास–ससुर के पास फटकने नही देती थी । कभी कभी तो प्रेमावन्ती की पिटाई भी कर देती ।आखिरकार साजवन्ती की करतूतों का पता कन्हैया को तो चल गया पर वह कुछ कर नही सका क्योंकि वह बेटी बेटे को छोड़कर मायके जाकर रहने की जिद पर अड़ जो गयी थी । आखिरकार बच्चों के उजड़ते भविष्य को देखकर कन्हैया भी हार मान गया । जहां तक उससे होता मां बाप की सेवा कर लेता । साजवन्ती की चोरी मदद कर देता । समय की मार पतोहू के अत्याचार के आगे भूतनाथ ज्यादा दिन नही टिक पाया । मरे हुए सपने और पेट में भूख लेकर सदा के लिये सो गया भूतनाथ। जिसकी तेरहवी तक साजवन्ती ने नही करने दी अनावश्यक खर्च बताकर।

भूतनाथ के मरते ही प्रेमावती दाने–दाने को मोहताज हो गयी । उसकी आंखों में हमेशा बाढ उमड़ी रहती थी । कुछ ही महीनों में दोनों आंखों से अंधी हो गयी । एक दिन ईंटपत्थर के ढेर पर गिर पड़ी जिससे उसके पैर में गहरी चोट लग गयी । चोट अन्दर ही अन्दर बढता गया उभरा

तो नासूर के रूप में । सड़ते पैर मे कीड़े पड़ने लगे पर साजवन्ती का पत्थर दिल नही पिघला दवाई तक नही करवाई। दोनों बेटिया साजवन्ती की चोरी दो रोटी प्रेमावती की पेट में उतार देती । बेटियों ने बूढ़िया को रोटी खिलाया है इसकी खबर साजवन्ती को लग जाती तो उनकी भी खबर लेने से नही हिचकती थी ।कन्हैया छ महीने या साल में हपता पन्द्रह दिन के लिये आता जो हो सकता करता उसके जाते ही वही दुर्दशा ।

साजवन्ती के एक जगह पड़े रहने के कारण उसका बूढा जीवित शरीर तेजी से सड़ने लगा । ऐसी दशा में साजवन्ती ने घर के पास टूटी मंड़ई में उसे टूटी खाट पर लाकर पटक दी और कुत्ते बिल्ली की तरह एकाध रोटी कभी–कभी दे देती ।

प्रेमावती मड़ई में पडी–पडी कराहती रहती । बस्ती के लोग हालचाल पूछ लेते ।सान्तवना के दो बोल बोल लेते । यह भी साजवन्ती को बर्दाश्त नही होता था । पूरे गांव में साजवन्ती एक झगड़ालू औरत के नाम से कुख्यात थी । अधिकतर लोग उससे बचकर ही रहते थे । तनिक –तनिक बातों में भी वह कई पुस्त का चढंकर गालियां देने लगती थी । बड़ो के प्रति उसमे तनिक भी आदर भाव न था । यदि होता तो वह अपने सास–ससुर की दुर्दशा करती ।

महीने भर के अन्न–जल को त्यागने के बाद एक दिन सूर्यास्त के समय प्रेमावती के भी जीवन का अन्त हो गया । प्रेमावती के मरने की खबर जल्दी ही पूरी बस्ती में फैल गयी । प्रेमावती तो जीते जी सड़ चुकी थी । बस्ती वालों ने आपस में रायमशविरा कर शीघ्र क्रियाकर्म करने का इन्तजाम कर लिया । कन्हैया को शहर से आने में पूरे दो दिन जो लगने थे । गांव के बुजुर्गो ने दाह–संस्कार करना उचित समझा। प्रेमावती की लाश दरवाजे से उठते ही साजवन्ती चिल्ला–चिल्ला कर रोने लगी । गांव की औरत एक दूसरे से कहती रही देखो कितनी नेक लग रही है मरने के बाद जीते जी तो सकून की रोटी नही दी । मां–बाप के चरणों में स्वर्ग है भूल गयी अब देखो ढोग कर रही है रोने का । यह भूल गयी कि सास–ससुर भी मा–बाप ही होते है और मां बाप के चरणों में ही स्वर्ग होता है । कर ले जितना चाहे दिखावे । मर चुके बाबा भूतनाथ औा प्रेमावती अम्मा लौटकर देखने तो नही आ रही । बेचारे दोनो बूढा–बूढी जीते जीत तो पेट भर रोटी के लिये तरसकर गये । मरने के बाद बावनी खिलाओं उनके पेट में जाने से तो रहा ।वे तो जिन्दगी हंसते जख्म की धूप में बिता दिये ।

अन्तिम संस्कार हो जाने के बाद कन्हैया शहर से आया । विधि विधान से बाकी क्रिया–कर्म पूरा करवाया । हां इस

क्रिया –कर्म में साजवन्ती सतर्क आगे–आगे चल रही थी ताकि उसकी आने वाली बहू उसके साथ ऐसा सलूक न करें । खैर सब कुछ साजवन्ती के मुताविक हुआ । क्रिया –कर्म सम्पन्न हो गया । भूतनाथ और प्रेमावती की तेरहवी का कार्यक्रम एक साथ सम्पन्न करने की राय गांव के बुजुर्गो ने दी ताकि साजवन्ती के साथ भूतनाथ की आत्मी को भी मुक्ति मिल सके । वही हुआ दोनो पति–पत्नी की तेहवी एक साथ हुई । मृत्यु भोज में अच्छे–अच्छे पकवान परोसे गये जबकि पेट भर रोटी के लिये तरस–तरस कर भूतनाथ और प्रेमावती दुनिया छोड़ चुके थे ।

25–पराई मां

अरे बाप रे बस्ती वालो देखो रज्जू तो पुलिस लेकर आ रहा है । चुन्नू की मां कहां हो जल्दी आओ देखो तुम्हारा रज्जू तुम पराई मां की ममता का कत्ल कर दिया। हमारे पालन–पोषण का क्या सिला दे रहा है ।हमारी जीवन भर की कमाई को हड़पने के लिये पुलिस लेकर आ रहा है । अरे तुम भी सगी मां की तरह फेंक देती तो आज ये दिन तो नही देखने पड़ते ।

बसन्ती–क्या हुआ क्यों चिल्ला रहे हो ।क्यों बड़बड़ा रहे हो । जब पचती नही तो क्यों पी लेते हो । ना खुद चैन से रहते हो ना तो हमे रहने देते हो । रज्जू को छाती से

बन्दरियां की तरह चिपकाये रही वही बड़ा होकर दुश्मन बन बैठा है । चैन छिन रखा है,एक तुम हो पी लेते हो तो चिल्ल–पो करने लगते हो । बताओ कहां आसमान गिर रहा है । किस बिल में छिपना है ।

दौलत–देखो रज्जू हमारी जीवन भर की कमाई बीसा भर घर की जमीन हड़पने की पूरी तरकीब बना लिया है । अब तो पुलिस भी आ रही है । इस घर में जो कभी नही हुआ अब हो रहा है । काश तुम भी रज्जू को छाती से ना लगाती तो आज पुलिस न आती की आवाज दौलत के मुंह से निकली भी नही थी कि धड़धड़ाती हुई पुलिस की जीप खड़ी हो गयी । रज्जू जीप से बाहर निकला हाथ में पकड़ा कागज लहराते हुए बोला कहा गये काका बाहर आ जाओ । ये देखो पुलिस के साथ कचहरी का कागज भी लाया हूं देखता हूं तुम्हारी कोठी कैसे बनती है । काका कोठी का काम तुरन्त नही बन्द करवाये तो जेल जाना पड़ेगा देखो पुलिस की जीप भी खड़ी है । देर नही लगेगी हवालात जाने में ।

दौलत–वाह रे रज्जू संगी मां पैदाकर फेंक गयी । तुम्हारी काकी ने अपनी सन्तान समझकर तुमको पाला–पोषा । अपनी छाती से लगाये रखा । दुनिया भर की मुश्किलों से तुमको बचाया । तुमको पढाया लिखाया ब्याह गौना किया। आज दो पैसा कमाने लगा है तो हमारी ही आंख में मिर्ची

झोंककर हमारी ही सम्पति हथियाने की सोचने लगा है । दुनिया से तो डर अपनी मां के बददुआओ से नही तो कम से कम पराई मां की बददुआओ से डर ।

रज्जू–हम क्यों डरे । मैं अपने फायदे के लिये कुछ भी कर सकता हूं ।

बसन्ती–अपने बच्चों का हक मारकर तुम्हारे साथ गुनाह कर दिया क्या ?

रज्जू–जैसी मेरी मां फेंक दी वैसे तुम भी फेंक देती । जो समझना है समझो । मैं जो कर रहा हूं अपने बच्चों के भले के लिये कर रहा हूं ।

बसन्ती– भले के लिये नही बददुआ बटोर रहा है रज्जू ।

दौलत–क्या हमने तेरे लिये कम किया है । कि अब पुलिस लेकर आया है जबरिया कब्जे के लिये । अपनी मेहनत मजदूरी से कमाई जमीन में तुमको हिस्सा दिया । तेरा घर बनवाया । अपने सगे बेटे की तरह तुमको प्यार दिया ।तुमने मुझे क्या दिया । इतने बरसों से शहर –परदेस कर रहा है कभी हजार पांच सौ दिया क्या ?

बसन्ती–दिया है तो आंसू और अब छिन रहा है मेरे बच्चो का आश्रय।

दौलत– किस गुनाह कि सजा दे रहा है रज्जू निरपराध पराये मां–बाप का गला रेत कर ।

रज्जू–तुम गला रेतना कहते हो काका मैं अपना हक मानता हूं । पूरा हक नही देना था तो पाले ही क्यो पढाये लिखाये गौना ब्याह तक क्यों किये मेहनत मजदूरी कर ।
दौलत–रिश्ते के सांधेपन के लिये । अपने परिवार के सदस्य के भले के लिये । बेटा ठीक है तुम मेरा सगा बेटा नही हो पर हो तो खानदान के । तुमको जितना दिया हूं उसके भी तुम हकदार नही हो । पंचों से ,बस्ती वालों से पूछ लो ।
रज्जू–हमें किसी से नही पूछना मैं तो स्टे आर्डर लेकर पुलिस के साथ आया हूं तुम्हारी जहां कोठी बन रही है । अब वहां मेरी महल बनेगी ।
दौलत–मेरे जीते जी तो नही ऐसा हो पायेगा ।
रज्जू–होगा काका तुम देखते रहना ।
बसन्ती–बेटा तुम्हारे लिये मैं हंसते जख्म का जहर पीती रही तुम धौंस दे रहे हो ?
रज्जू–नही पराई मां सचमुव कह रहा हूं । ये कागज और सामने खड़ी पुलिस सब सही तो है । काकी धौंस नही सच्चाई है । मान लो और खाली कर दो ये जमीन ।
दौलत–ऐसी सजा क्यो दे रहे हो रज्जू तुम्हारे स्वार्थ से फूटे ज्वालामुखी को देखकर कौन काका अपने भतीजे पर रहम करेगा । तू ही बता दादा–परदादा की गज भर जमीन है जो थी भी गांव के दबंगों का कब्जा हो गया । जिन्दगी

भर की कमाई से दो बीसा जमीन बनाया था जिसमें से तुमको भी बांटकर दे दिया अब पूरी जमीन हड़पना चाहते हो हमारे भी दो बेटे है वे कहां बसेगे ?
रज्जू–काका ये तुम्हारी परेशानी है तुम जानो हमें तो बस हमारे घर के सामने की जमीन चाहिये ।
दौलत–बेटा नेकी को क्यो लतिया रहे हो ।
रज्जू–काका हमारे घर के सामने तुम्हारा घर नही बनेगा बस । हमारे घर के सामने पूरी जमीन छोड़ना पड़ेगा । नही छोड़े तो इंजाम अच्छा नही होगा ।
दौलत–मेरा और मेरे बेटो का खाून कर दोगे ?
रज्जू–इस जमीन के लिये कुछ भी कर सकता हूं ।
बसन्ती–वाह रे कलयुग का लोभी । इस लोभी को छाती से लगायी अपने सगे बेटों के हक का भी बंटवारा कर दिया । इसके बाद भी तसल्ली नही पूरा हड़पने की तैयारी । जब तक गौना नही आया था बीमार रहने का नाटक करता रहा । गौना आते ही घरवाली को शहर ले जाकर बस गया । वहां कोठी बंगला बना लिया यहां भी मैंने घर बनाने की जमीन दी ।हम भूमिहीन बाकी कुछ तो पास है नही । बच्चों के आश्रय को भी बांट दी । इसके बाद भी पुलिस जेल और कत्ल तक की धमकी ।
रज्जू–मै। पहले भी कह चुका हूं अपने फायदे के लिये कुछ भी करने को तैयार हूं ।

बसन्ती–पराई मां ही सही पर हूं तो मां क्यों खंजर भोंक रहा है ।

रज्जू–देखो तुम्हारा भाषण सुनने–सुनाने को पुलिस और कचहरी का स्टे आर्डर लेकर आया हूं ।

बसन्ती–हां बेटा अब तू पराई मां के त्याग को बिसार कर आंसू देने लायक हो गया है जो लोग तुम्हारी मां की तरह फेंक देने की सलाह देते थे वही लोग खास हो गये है क्यों दौलत के भरोसे ना ।

रज्जू–देखो बहुत बकबक हो गयी। पुलिस आ गयी है । लेखपाल और नायब तहसीलदार भी पहुंचने वाले है । कानूनी काम में अड़चन मत डालो । नही तो पराये बाप के साथ पराई मां को भी जेल जाना पड़ सकता है ।

बसन्ती–देख लो दरोगा जी इस नाग को देखकर कोई कैसे किसी पर रहम करेगा ?

दरोगा–सांप दूध पीकर भी जहरीला रहता है । उसका स्वभाव काटने को होता है काटेगा पर बचाव के उपाय भी है उसके दांत तोड़ दो । तुमने दांत न तोड़ कर गलती कर दिया । अरे तुम तो खुद ही भूमिहीन हो दो बीसी जमीन में से रज्जू को भी बांटकर दे दिये । पाल–पोष कर पढाये लिखाये पैर पर खड़ा कर दिया क्या जरूरत थी । यह तो जमीन खरीद कर महल बनवा सकता है । कुछ दिन के लिये घर बनाने का काम रोक दो । । दौलत जमीन

तुमको जरूर मिलेगी । हमे तो कचहरी के आदेश का पालन करना है।
दौलत–एक अनाथ को पालकर गुनाह कर दिया दरोगा ?
दरोगा–नही दौलत तुमने तो बहुत पुण्य का काम किया ।
दौलत–ये सजा किस पाप की ?
दरोगा–तुम्हारे साथ अन्याय नही होगा दौलत । भगवान पर यकीन रखो । जिस विश्वास के साथ सांप को दूध पिलाकर इतना बड़ा किया उसी विश्वास के साथ सच्चाई पर टिके रहो । तुम्हारी जमीन रज्जू नही हड़प पायेगा ।अरे पूरी बस्ती के लोग तुम्हारे साथ है । सभी सच्चाई को जानते है । किराये के गवाहों से ना डरो ।
दरोगाजी और दौलत की बातचीत चल ही रही थी इसी बीच नायब तहसीलदार की जीप भी आ धमकी ।
रज्जू–दौड़ कर आया और बोला लो काका तहसीलदार साहब लेखपाल को भी लेकर आये करवा लो पैमाईस।
रज्जू की हां में हा मिलाते हए दुखदास बोला –हो जायेगा दूध का दूध पानी का पानी । अरे रज्जू के पास भी तो कागज है ।
दौलत–क्या फर्जी कागज भी तैयार करवा दिये दुखदास दारू मुर्गा और नगद ले देकर । रिटायरमेण्ट के बाद ठगी का धंधा शुरू कर दिया दुखदास ।
दुखदास–क्या गलत है दलाली का काम ?

दौलत–गरीबों के आंसू से खेलोगे तो बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी । भगवान के घर में देर है अंधेर नही ।
दरोगाजी–दुखदास सुना है आप देश सेवा जन सेवा पर बलिदान देने वाले विभाग से रिटाय हुए है । ये जो कर रहे है आप दारू मुर्गा खा पीकर इससे तो अन्याय हो रहा है । देश और जनसेवा के साथ धोखा कर रहे है ।
दुखदास–अरे खिलाने वाला हाथ जोड़कर खिला रहा है जेब में डाल रहा है तो क्या हम मना कर दे ? घर आयी लक्ष्मी को हम क्यो ठुकराये ?
दौलत–देख लो दरोगाजी रज्जू क्या क्या नही कर रहा है हमारी जीवन भर की कमाई हड़पने के लिये । बदमाशों तक की मदद ले रहा है । भूल गया मेरी नेकी ।दुखदास तुम चाहते तो रज्जू को सच्चाई का रास्ता दिखा सकते थे । ऐसा नही करके तुमने धोखा से मुझ गरीब के आशियाने तक को हड़पने की साजिश रच दिये । क्यरें मेरे जीवन में आग लगा रहे हो । रज्जू तो बेईमान हो गया है जमाना जान गया पर तुम कम नही हो तुम दोनो के मुंह पर जमान थूकेगा दुखदास ।
रज्जू–काका भाषण बन्द करो । ये साहब लोग तुम्हारी भाषण सुनने नही आये है ।
दरोगाजी–हां नायब तहसीलदार साहब आप क्या कह रहे है ।

नायबतहसीलदार साहब–रज्जू ने धोखे से कागज तो बनवा लिया है । मौका मुआयना के आधार पर खारिज हो जायेगा । दौलत ने रज्जू के साथ वह किया है जो एक सगे बेटे के साथ एक मां–बाप करते है ।
दौलत–साहब हम तो रज्जू की निगाहो में पराये मां बाप भी नही रहे ।
नायबतहसीलदार–हौशला रखो दौलत अन्याय नही होगा तुम्हारे साथ गरीब के आंखो में सच्चाई पढने की काबिलियत है मुझमें और दरोगाजी में भी ।
दरोगा–हां नायब तहसीलदार साहब । न्याय अन्याय देखते देखते तो बाल झड़ चुके है । सच्चाई को जानने का तजुरबा तो है ।
नायबतहसीलदार–दौलत एक सवाह है सही सही जबाब देना ।
दौलत–पूछिये साहब ।
नायबतहसीलदार–तुम रज्जू को घर बनाने की जमीन दी है ।
दौलत–हां साहब ।
दरोगाजी–मान रहे हो ना ।
दौलत–हां दरोगा जी । मैं भगवान से डरता हूं यह तो नही बोल सकता कि रज्जू ने जबरिया घर बनाया है पर अब

जबरिया मेरी खाली जमीन हड़पने की साजिश कर रहा है ।
नायबतहसीलदार–मामला यह नही है ।
दरोगाजी –मामला क्या है ।
नायबतहसीलदार–रज्जू दौलत की जमीन को अपनी कह रहा है । धोखाधड़ी से कागज तैयार करवा लिया है । उसी के बलबूते स्टे आर्डर ले आया है ।
दौलत–देख लो साहब घर के पिछवाड़े वाली जमीन पर सतवारू हर साल बढता चला आ रहा है । मना करने पर कहता है कि तुम्हारा घर मेरे खेत में बना है । सामने वाली जमीन रज्जू हड़प रहा है । मेरे तो अगवारे और पिछवाड़े पर दूसरों का कब्जा हो रहा है मैं कहां जाऊ ?
नायबतहसीलदार– कही नही जाओगे अपनी जमीन पर काबिज रहोगे ।
थानेदार–क्यों रज्जू तुमको फरेब और धोखे के केस में अन्दर कर दे । सभी लोग तुम्हे झूठा कह रहे है । पंचनामा बनने की देर है फिर सड़ते रह जाओगे । सब बेईमान करना भूल जाओगे । अरे तुम्हारे पास रूपये की इतनी गरमी है तो दस–बीस बीघा जमीन खरीद कर मालिक बनता गरीब के आंसूं में तैरकर मालिक बनेगा तो कम तक ऐश कर पायेगा । दौलत को तुमने इतने आंसू दे दिये हो कि उसमें तुम डूबकर मर सकते हो ।

रज्जू–साहब जो कुछ मैने किया है अपने बालबच्चों के हित में किया है ।
दरोगाजी–अपने बालबच्चों के हित के लिये दूसरों का खून कर दोगे क्या ?
रज्जू–ये खून है क्या ?
दरोगाजी–खून से कम है क्या ?
रज्जू–मैने जो किया है सही किया है आखिरकार मेरा भी बराबरी का हक है ।
नायबतहसील–रज्जू तुम दौलत के सगे बेटे हो क्या ?
रज्जू–नही । ये दौलत काका पराये बाप और बसन्ती काकी पराई मां मेरे तो है । आपके सामने मेरा मां बाप बनने का दावा कर रहे थे ।
दरोगाजी–रज्जू तेरी जबान बहुत लपर–लपर चल रही है । जन्म देने वाले से पालने वाला बड़ा होता है । जन्म देकर घुरे में फेंक देना मां बाप का दायित्व नही होता । पैर पर चलने लायक बनाना भी दायित्व होता है । बसन्ती और दौलत ने तुमको भले ही पेदा नही किया है पर मां बाप का दायित्व निभाया है ।
दौलत–छोड़ो दरोगाजी अगर ये नेकी माना होता तो आज ये नौबत नही आती ।
दरोगाजी–क्यो बेईमानी कर रहा है । दूसरे की जीवन भर की कमाई को अपना बनाने पर तूला हुआ है ।तुम्हारे पास

रूपया है तुम और भी जमीन लिखवा सकता है । तुम्हारी बेईमानी को देखकर लोग रहम करना भी बन्द कर देगे ।
बसन्ती–दरोगाजी और तहसीलदार साहब आप दोनो से विनती कर रही हूं अगर रज्जू हमें दुख देकर खुश रहना चाहता है तो दे दो उसी खुशी । जहां तक चाहता है नाप कर खूटा गड़वा दो ताकि जीवन भर का कलेष तो मिट जाये । हम गरीब अपने बच्चों की विरासत में गज भर जमीन के साथ नेकी का संस्कार देगे ।
दरोगाजी–अब तो शरम कर रज्जू ।
दौलत–दरोगाजी उसको शरम नही आती । जो बुढिया कह रही है मुझे भी मंजूर है । मेरे बच्चों की तकदीर में जमीन जायदाद का सुख होगा तो कोई नही छिन सकेगा । कर दो रज्जू के मन माफिक दरोगाजी और तहसीलदार साहब । कम से कम हमारा परिवार चैन से तो सांस भर सकेगा । रज्जू के गुण्डों से छुटकारा तो मिल जायेगा ।
नायबतहसीलदार– बसन्ती और दौलत तुम लोग क्या कह रहे हो मालूम है ना ।
दौलत–हां बाबू । हम दोनो पूरे होशो हवाश में है ।
नायबतहसीलदार–लेखपाल इधर आओ ।
लेखपाल–जी सर ।

नायबतहसीलदार– रज्जू के कागज के अनुसार जमीन नाप दो ।

लेखपाल–जैसा हुकुम साहब ।

लेखपाल लट्ठा लेकर नापने में जुट गये । पच्चास फीट लम्बी और चौतीस फीट चौड़ी जमीन दौलत के खून पसीने की कमाई की जमीन का रज्जू मालिक बन बैठा । दौलत के हिस्से तीन टूटा–फूटा घर आया जिसमें बरसात और धूप के आने जाने की भरपूर गुजाईश थी ।

नायबतहसीलदार–दौलत तुम्हारा घर भी ले रहा है रज्जू ।

दौलत–लेकर खुश रहे तब ना ।

दुखदास–क्यों नही खुश रहेगा ।

दौलत–तुम्हारे जैसे किराये के लोग खुशी नही दे सकते । हां मनचाही कीमत जरूर ले सकते है ।

दरोगाजी–दौलत दूसरों को आसूं देने वाले खुश तो नही रह सकते । तुम कहो तो सुलहनामा का पंचनामा बनवा ले ।

दौलत–जरूर बनवाईये साहब ।

दरोगाजी– मुंशीजी जल्दी करो ।

मुंशीजी– पांच मिनट में तैयार कर देता हूं ।

दरोगाजी–ठीक है ।

दरोगाजी–दौलत और बसन्ती तुम दोनो तो अपने फैसले से खुश हो ना ।

दौलत और बसन्ती दोनो एक स्वर में बोले हां सरकार रज्जू पराये मां बाप को घाव देकर खुश है तो हम खून पसीने की कमाई से पाल–पोस कर बड़ा किये भले ही पराये बेटे ने लाख हंसते जख्म दिये है पर हम उसकी खुशी में जरूर सरीख होगे ? दौलत और बसन्ती की बाते सुनकर दरोगाजी,नायबतहसीलदार और लेखपाल साहब बोले धन्य है ये–परमार्थी पराये मां–बाप । इतने में बस्ती के लोग दौलत और बसन्ती की जयजयकार करने लगे ।

समाप्त